डॉ. नारायणदत्त श्रीमाली

स्तोत्र-शक्ति



प्रकाशक
कुसुम प्रकाशन
१७, शिवचरन लाल रोड
इलाहाबाद–३

Stotra Shakti
by
Narayan Datt Shrimali

१९७५ (प्रथम संस्करण)
स्तोत्र शक्ति
लेखक
नारायणदत्त श्रीमाली
मूल्य तीन रुपये

मुद्रक :
मुकेश जायसवाल, साइंटिफिक प्रिंटर्स
६५, राय रामचरन दास रोड, इलाहाबाद-२

दो शब्द

स्तोत्र-शक्ति विश्व की सर्वश्रेष्ठ शक्ति है, जिसके माध्यम से —यदि श्रद्धा, विश्वास एवं पूर्ण-निष्ठा हो तो—असंभव को भी सम्भव किया जा सकता है, आज का व्यक्ति जटिल उलझनों में उलझ गया है, दिशा शून्य हो गया है, अपने सही रास्ते से भटक गया है, अविश्वास के गहन अंधकार में दिग्भ्रमित सा चक्कर काट रहा है, आवश्यकता है, उसके विश्वास को पुनः स्थापित करने को, सही रास्ता दिखाने को, और अपने लक्ष्य की ओर बढ़ाने को, यह पुस्तक इस क्षेत्र में निःसन्देह वरदान स्वरूप सिद्ध होगी।

इस पुस्तक में अमूल्य स्तोत्र हैं, उसमें संबंधित घटनाएँ हैं, संस्मरण हैं, प्रसंग हैं। ये प्रसंग, जो पढ़े हुए हैं, सुने हुए हैं, अनुभव किये हुए हैं, अविश्वास और अज्ञान के रास्ते पर यह पुस्तक दिये की तरह टिमटिमा कर भी किसी को सही रास्ता दिखाने में समर्थ हो सकी, तो मैं अपना प्रयास सफल समझूंगा।

सी। एफ १४ हाई कोर्ट कोलोनी,
जोधपुर (राजस्थान)

नारायण दत्त श्रीमाली

विषय-सूची

प्रवेश

मानव जीवन संघर्ष का जीवन है। जिस समय मानव जन्म लेता है उस क्षण से अन्तिम पड़ाव तक वह किसी न किसी के सहारे से ही जीवित रहता है। प्रारम्भ में उसे अपने माता-पिता का आश्रय लेना पड़ता है है, बड़ा होने पर उसे भाइयों, संबंधियों एवं रिश्तेदारों का सहारा लेकर काम चलाना पड़ता है और वृद्धावस्था में उसे अपने पुत्रों का आश्रय लेकर जीवन-निर्वाह करना पड़ता है। परन्तु ये सब आश्रय क्षणिक हैं, इन सहारों से व्यक्ति अपनी पूर्णता प्राप्त नहीं कर सकता। यद्यपि ये भौतिक आश्रय कुछ क्षणों के लिये भले ही उसे साहस एवं धीरज दे दें परन्तु फिर भी वह अपने आपको असुरक्षित एवं अपूर्ण ही अनुभव करता रहता है। पूर्णता तो उसे तभी मिलती है, जब वह चारों ओर से निराश होकर ईश्वर की शरण में जाता है, और वह जब पूर्णरूप से अपने आपको ईश्वर के प्रति समर्पित कर देता है तब उसे अनिर्वचनीय सुख एवं सन्तोष प्राप्त होता है।

मानव की यह कमजोरी है कि वह उच्च सत्ता का आश्रय न लेकर क्षणिक आश्रय में विश्वास करता है। वह अपने मित्रों की तरफ दौड़ता है, भाइयों से सहयोग की याचना करता है, पुत्रों से मदद के लिये उनकी तरफ ताकता है, पर जब उसे यह समझ आ जाती है कि ये सहारे व्यर्थ हैं, इनसे मेरे जीवन की पूर्णता सम्भव नहीं, तभी वह प्रभु की शरण में जाता है। होना तो यह चाहिए कि वह प्रारम्भ सेही अपने आपको इस तरह से तैयार करे कि उसे इन क्षणिक आश्रय में विश्वास ही न रहे प्रभु को सर्वशक्तिमान समझे और जरा भी विपत्ति आने पर उससे प्रार्थना करे।

विश्वास और प्रार्थना का आपस में घनिष्ठ संबंध है। प्रार्थना तभी सफल हो सकती है जब हमें उसके प्रति पूर्ण विश्वास हो। यदि हमें पुत्र के प्रति विश्वास ही नहीं है तो उससे किसी भी प्रकार

की प्रार्थना करना कोई अर्थ नहीं रखता ।

जीवन में प्रार्थना ही सबसे मुख्य आधार है परन्तु इसके लिये यह जरूरी है कि हम जो प्रार्थना करें वह हमारे लिये विश्वास पर आधारित हो । जब तक किसी कार्य में हमारा पूर्ण विश्वास नहीं होगा तब तक उस कार्य में जीवन्तता नहीं आ सकती । इस प्रकार से देखा जाय तो विश्वास और प्रार्थना पर्यायवाची शब्द है ।

अमेरिका में फिल्मोर दम्पत्ति प्रार्थना के प्रतीक माने जाते है । उन्होंने अपने जीवन में अपने कार्यों से यह सिद्ध कर दिया है कि यदि सही विश्वास से प्रार्थना की जाय तो असंभव कार्य को भी संभव किया जा सकता है । उन्होंने जीवन में जो कुछ भी किया, विश्वास और प्रार्थना के द्वारा ही किया । विश्वास और प्रार्थना के द्वारा उन्होंने रोगियों का रोग मुक्ति किया, दुखियों को आराम दिया, कठिनाइयों पर विजय पाई तथा वह सब कुछ प्राप्त किया जिसकी की जीवन में आवश्यकता होती है ।

अमेरिक के चार्ल्स फिल्मोर ९४ वर्ष तक जीवित रहे और इन वर्षों में लगभग ६२ वर्ष प्रार्थना में बिताए । उनका एक ही उद्देश्य था कि प्रार्थना और स्तुति के द्वारा अपनी आध्यात्मिक शक्ति को जागृत करना और इस शक्ति को विकसित कर संसार को सुखी बनाना । दिन रात के कई घण्टे प्रभु के चरणों में ही व्यतीत होते थे । अपनी जो भी कठिनाई होती, अथवा जो भी आवश्यकता होती उसे लिखकर प्रभु के चरणों में रख देते और प्रार्थना के द्वारा उनका वह कार्य स्वतः ही हो जाता ।

विश्वास उनके जीवन का अवलम्ब था । एक उदाहरण ही पर्याप्त होगा उन्होंने एक विद्यालय खोला था जिसमें अपंग और निर्धन बालक शिक्षा प्राप्त करते थे । उनके विद्यालय में लगभग ३०० छात्र थे । छात्रों के रहने, भोजन तथा अन्य आवश्यकताओं की पूर्ति फिल्मोर दम्पत्ति ही करते थे । प्रातः सभी बालक उठ कर दैनिक नित्य प्रक्रिया से निवृत होकर प्रार्थना सभा में जाते और लगभग दो घण्टे तक प्रार्थना होती । प्रार्थना के पश्चात हस्त-कला का कार्य होता और दिन के ठीक ११ बजे उन्हें भोजन प्राप्त होता । फिल्मोर दम्पत्ति समय के पाबन्द थे, एक मिनट का भी विलम्ब उनकी प्रकृति के अनुकूल नहीं था ।

एक दिन प्रातःकाल लगभग नौ बजे विद्यालय के मैनेजर ने देखा कि बच्चों के भोजन के लिये कुछ भी व्यवस्था नहीं है । न आटा है और न अन्य सामग्री । वह बड़ा चिन्तित हुआ । कोष में पैसा भी नहीं था । उसने डरते-डरते लगभग १० बजे फिल्मोर को सूचित किया । फिल्मोर उस समय प्रार्थना में बैठे थे, बोले नहीं । लगभग सवा दस बजे मैनेजर ने पुनः प्रार्थना की कि आज बच्चों के भोजन के लिये कोई व्यवस्था नहीं है, फिल्मोर ने उसे अपनी समस्या लिखकर लाने के लिये कहा । लगभग साढ़े दस बजे मैनेजर पुनः प्रार्थना पत्र लेकर फिल्मोर के पास पहुँचा जिसमें लिखा हुआ था कि आज ग्यारह बजे का भोजन बालकों को दिया जाना संभव न होगा क्योंकि किसी भी प्रकार का राशन स्टाक में नहीं है ।

फिल्मोर ने वह प्रार्थना पत्र लेकर प्रभु के चरणों में रख दिया और कहा—तुम और हम कौन होते है जो बालकों को भोजन करा सकें, बालकों के भोजन की व्यवस्था ईश्वर करता है और उसे चिन्ता है । समय पर वह कोई न कोई प्रबन्ध अवश्य कर देगा ।

• मैनेजर अविश्वास से हल्का सा मुस्कराया और पूछा तो क्या ग्यारह बजे भोजन की घण्टी लगवा दूं ।

फिल्मोर ने कहा—अवश्य ! यदि बालक नित्य ग्यारह बजे ही भोजन करते हैं तो आज भी ग्यारह बजे ही भोजन करेंगे इसमें पूछने की क्या बात है ।

ग्यारह बजने में दस मिनट बाकी रह गये, तो मैनेजर पुनः फिल्मोर के कमरे में आया और पूछा ग्यारह बजने में मात्र दस मिनट बाकी है और अभी तक मेरी नजर में कोई व्यवस्था नहीं हो पाई है क्या किया जाय ?

फिल्मोर ने एक क्षण मैनेजर की तरफ देखा और फिर कहा तुम्हें ग्यारह बजे भोजन की घण्टी लगा देनी है, क्या करना है और क्या नहीं करना, यह ईश्वर जाने ?

मैनेजर अविश्वास से हँसा और लौटकर चला गया । उसने ठीक ग्यारह बजे भोजन की घण्टी लगा दी । बच्चे अपने कमरों से थालियाँ ले लेकर भोजन कक्ष में जाने लगे और पंक्ति बद्ध बैठने

लगे । फिल्मोर अभी तक अपने प्रार्थना कक्ष में ही थे । मैनेजर के चेहरे पर पसीना आने लगा कि फिल्मोर अभी तक निकले नहीं हैं और अब इन बच्चों को मैं क्या परोसूंगा ? संभवतः फिल्मोर का दिमाग खराब हो गया है ।

तभी उसने देखा कि दरवाजे पर एक गाड़ी आकर रुकी है और उसमें से दो व्यक्ति कुछ टोकरे नीचे उतार रहे हैं । उन व्यक्तियों में से एक व्यक्ति मैनेजर के पास आकर बोला यह भोजन मिस्टर हेमबुर्ग ने भेजा है उन्होंने आज एक विशाल पार्टी दी थी और उस पार्टी में काफी खाद्यान बच गया था । अतः यह बाकी खाद्यान उनकी आज्ञा से फिल्मोर विद्यालय के बालकों के लिये लाया हूँ ।

उन व्यक्तियों ने टोकरों में से मिठाई, पूड़ी, साग, इत्यादि खाद्य पदार्थ निकाले और व्यवस्थापक ने बच्चों में वितरित करना शुरू कर दिया । समय पर बच्चों ने भोजन कर लिया, उसके बाद भी काफी खाद्यान बचा रहा ।

दोपहर के पांच बजे फिल्मोर ने मैनेजर को अपने कक्ष में बुलाया और पूछा क्या बालकों ने ग्यारह बजे का भोजन कर लिया है ? मैनेजर ने हाँ भरी तो फिल्मोर ने मैनेजर को कहा–अब मेरे विद्यालय को आपकी आवश्यकता नहीं । आप अपना हिसाब आज ही ले लीजिये, जिस व्यक्ति को ईश्वर में विश्वास नहीं है, उसकी आवश्यकता मेरे विद्यालय में नहीं है ।

यह घटना उनके जीवन की सच्ची घटना है और इस प्रकार की कई घटनाएँ उनके जीवन में घटित हुई हैं जबकि प्रार्थना और विश्वास के बल पर उन्होंने सभी असंभव कार्य संभव कर दिखाये हैं । उनका कहना था ईश्वर से मिलने के लिये विधि विधान पाखण्ड या अन्य सामग्री की आवश्यकता नहीं है । जिस प्रकार एक पुत्र अपने पिता के पास सहज रूप से जाता है । उसी प्रकार हमें भी निःसंकोच और सहज रूप से ईश्वर के पास पहुँचना चाहिए । तुम अपने आपको ईश्वर पर जितना आश्रित करोगे उतना ही ज्यादा तुम्हारा कल्याण होगा । यदि तुमको वस्त्र की, मकान की, विद्या की अथवा अन्य किसी प्रकार की कोई आवश्यकता है तुम अपनी समस्या लेकर तुरन्त ईश्वर के पास पहुँच जाओ मन में

किसी प्रकार की हिचक, संकोच और झिझक रखने की आवश्यकता नहीं ।

उनकी मान्यता थी कि ईश्वर संपूर्ण सद्गुणों के भण्डार हैं । वे साहस, शक्ति और सौन्दर्य के आगार हैं । हम ईश्वर की सन्तान हैं, अतः ईश्वर की प्रत्येक वस्तु पर हमारा अधिकार है, हमारे पास वही शक्ति, सौन्दर्य और स्वास्थ्य होना आवश्यक है जो ईश्वर के पास है । यदि ये वस्तुएँ हमारे पास नहीं हैं तो इसका तात्पर्य है कि हमारा ईश्वर से सम्पर्क टूट गया है, हम उनसे अपने संपर्क को खो बैठे हैं, हम अभावग्रस्त क्यों हैं ? भूखे और परेशान क्यों हैं ? रोग हमारे पास आये ही क्यों ? जब हम ईश्वर के हैं तो ईश्वर इनमें से किसी भी प्रकार का अभाव हमारे जीवन में नहीं रख सकता । यदि हमारे पास सुन्दरता की कमी है तो हमें चाहिए कि हम ईश्वर के सौन्दर्य पर पूर्ण विश्वास करें, यदि हमारे पास धन का अभाव है तो हम प्रभु के अखण्ड भण्डार पर विश्वास रखें, उनसे प्रार्थना के द्वारा सम्पर्क स्थापित करें और जब सम्पर्क स्थापित हो जायगा तब जीवन में किसी प्रकार का अभाव रह ही नहीं सकता ।

श्रीमती फिल्मोर का अत्यधिक प्रभाव चार्ल्स फिल्मोर पर पड़ा । श्रीमती फिल्मोर प्रारम्भ में अत्यधिक बीमार रहती थीं । ५१ वर्ष की आयु में ही वह जर्जर और कृशकाय हो गई थी, उनका सन्दूक दवाइयों से भरा रहता था, डाक्टरों को समझ में नहीं आ रहा था कि श्रीमती मर्टिल फिल्मोर का इलाज किस प्रकार किया जाय ? रोग का सूत्र ही उन्हें समझ में नहीं आ रहा था । कुछ लोगों ने हवा-पानी बदलने की राय दी, कुछ ने अन्य उपाय सुझाये, पर इनसे किसी प्रकार का कोई लाभ मर्टिल फिल्मोर को नहीं हुआ ।

एक दिन एक मित्र ने सूचना दी कि आज पास के मैदान में एक संत का भाषण होने वाला है, आप दोनों को भी चलना चाहिए । श्रीमती फिल्मोर ने कहा मैं मरने के करीब हूँ, मेरा मन उदास है, मैं अस्वस्थ हूँ, मैं जीवन में कभी भी स्वस्थ नहीं हो सकूँगी । मेरा सारा जीवन, मेरा एक क्षण भार स्वरूप है, आदि आदि...... पर फिल्मोर के आग्रह पर वह भाषण सुनने के लिये तैयार हो गईं । दोनों जब भाषण सुनकर लौट रहे थे तो उन्हें

जीवन के बारे में एक नवीन विचार प्राप्त हुआ। उनके तन और मन दोनों को नया आरोग्य मिला, संत के भाषण की उन पर अच्छी प्रतिक्रिया हुई, उन्हें एक विचार मिला, एक प्रकाश मिला, एक नया सम्बल मिला। यही नहीं अपितु भावी जीवन के लिये उन्हें एक आधार मिला। भाषाण से लौटने के बाद श्रीमती फिल्मोर ने सोचा यह मेरा शरीर ईश्वर का है, इसे नष्ट करने का क्या अधिकार है? मैं अस्वस्थ हूं इसका एक कारण यह है कि मेरा सम्पर्क ईश्वर से टूट गया है। ईश्वर जब इतना सुन्दर और स्वस्थ है तो हम उनकी सन्तान अस्वस्थ कैसे रह सकती हैं? मैं ईश्वर की सन्तान हूँ। अतः मेरे में कोई रोग नहीं हो सकता...... उनका मन बारम्बार इसी विचार की आवृति करने लगा, यह आवृति एक प्रकार से नई चिनगारी थी जो उसके हृदय में बैठ गई। दूसरे दिन का प्रभात उसके लिये वरदान स्वरूप था। उसे अपने मन में एक नया उल्लास एक नया आनन्द अनुभव होने लगा, वह एक कमरे में बैठ गई, और अपने आपको पूर्ण रूप से ईश्वर के चरणों मे समर्पित कर दिया, निश्छल रूप से, निर्णय भाव से।

इस विश्वास से श्रीमती मर्टिल का सारा जीवन ही बदल गया। यह विश्वास उनके हृदय में शरीर के एक-एक कण में व्याप्त होने लगा। परमेश्वर की प्रार्थना में उसका विश्वास प्रबलतम हो गया। इस विश्वास और नित्य प्रार्थना का चमत्कारी फल यह हुआ कि डेढ़ वर्ष के भीतर-भीतर वह पूर्णतः स्वस्थ हो गई। उसके शरीर में रोग नाम की कोई वस्तु नहीं रही। उसका सन्दूक जो दवाओं से भरा रहता था, खाली हो गया। जब रोग चला गया तो उनके हृदय का भय भी समाप्त हो गया शरीर में नया निखार आया, चेहरे पर स्वास्थ्य की छाप प्रत्यक्ष दिखाई देने लगी, डाक्टरों के अनुसार यह एक चमत्कार ही था मगर यह चमत्कार प्रार्थना से भी संभव हो सकता है। इसे मानने के लिये वे तैयार नहीं थे। क्योंकि उनके पूरे चिकित्सा विज्ञान में ईश्वर नाम की कोई वस्तु नहीं थी, पर श्रीमती फिल्मोर इसका उदाहरण थी। उसने पिछले डेढ़ वर्ष में दवा की एक छोटी सी टिकिया तक न ली थी, और इस समय वह जितनी स्वस्थ और निर्मल थी वैसा उसे स्वप्न में भी अनुमान नहीं था। इसके बाद तो इन पति-पत्नी का जीवन

प्रार्थना और विश्वास में ही व्यतीत हुआ। हजारों व्यक्तियों की इन्होंने सेवा की और सैकड़ों लोगों को कष्टों से छुटकारा दिलाया

श्री फिल्मोर का एक पड़ोसी था जिसका नाम केस्के था, वह पंगु था। इस समय उसकी अवस्था लगभग ४५ वर्ष की थी पर जब वह मात्र १८ वर्ष का था तभी लकवे के कारण उसके दोनों पांव अपंग हो गए थे, चलना उसके लिये असंभव था, एक गाड़ी पर बैठकर ही वह इधर-उधर जा सकता था, संसार का वास्तविक सौन्दर्य, वास्तविक सुख पाने से वह वंचित था।

एक दिन जब श्रीमती फिल्मोर उसके घर गई तो उसने केस्के से कहा—तुम प्रार्थना क्यों नहीं करते? निश्चय ही प्रार्थना से तुम स्वस्थ हो सकोगे और अपने पैरों से चल सकोगे। श्रीमती फिल्मोर ने कहा हम ईश्वर की सन्तान हैं, ईश्वर स्वस्थ है तो हम अस्वस्थ रह ही नहीं सकते। ईश्वर ने हमें अस्वस्थ रहने के लिये नहीं भेजा है। धीरे-धीरे केस्के के दिमाग में विश्वास जमने लगा और उसने तथा श्रीमती फिल्मोर ने सामूहिक रूप से प्रार्थना करनी प्रारम्भ की। उन दोनों ने लगभग छः महीने के बाद ही देखा कि केस्के के पांवों में हरकत होनी प्रारम्भ हो गई है और अगले चार महीनों में केस्के अपने पांवों से साधारण व्यक्ति की तरह चलने लगा। यह प्रार्थना का एक प्रत्यक्ष चमत्कार था। लाखों अमेरिकी वासियों ने इस घटना को देखा। डाक्टरों ने केस्के के बारे में कह दिया था कि यह व्यक्ति इस जीवन में अपने पैरों से चल नहीं सकेगा, उनके लिये यह महान आश्चर्य था, और उन अति बुद्धिवासियों ने भी महसूस किया कि वास्तव में विश्वास और प्रार्थना से अविश्वसनीय घटनाएं घटित हो सकती है।

धीरे-धीरे श्रीमती मर्टिल फिल्मोर तथा चार्ल्स फिल्मोर की ख्याति फैलने लगी। उनकी प्रार्थना सभाओं में ऊँचे समाज के व्यक्ति भी आने लगे, और इस प्रकार उन भौतिक सभ्यता से ग्रस्त लोगों के दिलों में ईश्वर के प्रति आस्था और विश्वास पैदा करने में चार्ल्स दम्पत्ति सफल हुए।

चार्ल्स फिल्मोर स्वयं एक पैर से लंगड़े थे और एक सफल व्यवसायी थे। उन्होंने श्रीमती फिल्मोर के कार्यकलापों को देखा

ग्रौर उन्होंने इसका प्रयोग ग्रपने ऊपर करने का निश्चय किया। वे प्रतिदिन ४ से ६ घंटे तक प्रार्थना सभा में बैठते ग्रौर ग्रपना पूरा ध्यान ग्रपने किसी एक ग्रंग की ग्रोर लगाकर उस ग्रंग के स्वास्थ लाभ के लिये ईश्वर से प्रार्थना करते। धीरे-धीरे शरीर के विभिन्न ग्रंगों पर उनका ग्रधिक से ग्रधिक नियंत्रण होने लगा साथ ही उनके विश्वास ग्रौर प्रार्थना से शरीर भी स्वस्थ होने लगा ग्रौर लोगों ने एक दिन देखा कि १८ वर्षों के बाद एक बार पुनः चार्ल्स फिल्मोर ग्रपने पैरों से चलने में समर्थ हो सके है। उनका जो नकली पैर लगाया गया था, वह भी हटा दिया गया ग्रौर वे एक स्वस्थ व्यक्ति की तरह चलने लगे।

इन दोनों ने जब प्रार्थना का इस प्रकार प्रभाव ग्रौर महत्व देखा तो ये ग्रपने घर में ही नित्य प्रार्थना-सभा ग्रायोजित करने लगे। उनका विश्वास था कि हम ईश्वर के है, ईश्वर हमारा ग्रवश्य ही ध्यान रखेगा, उनका विश्वास था कि क्या मानव ग्रौर क्या इतर प्राणी सभी उस परम पिता परमात्मा की पवित्र सन्तान है। ग्रतः जो भी सच्चे मन से ईश्वर का स्मरण करता है। उसकी प्रार्थना कभी भी निष्फल नहीं जाती।

श्रीमती मर्टिन फिल्मोर ने शान्त प्रार्थना करनी भी ग्रारम्भ की। साथ ही चाहे किसी भी देश, जाति, वर्ण या रंग का हो ग्रथवा किसी भी धर्म को मानने वाला हो श्रीमती फिल्मोर के हृदय में सभी के लिए एक सा ही भाव रहता। उनके इस शान्त प्रार्थना में सभी धर्मों के लोग सम्मिलित होते थे, समय-समय पर उन्होंने साधना कक्षाएं भी चलाई ग्रौर इस प्रकार ग्रमेरिका में फिल्मोर दम्पत्ति ने जो ग्राध्यात्मिक ज्योति जलाई वह ग्राज भी ग्रक्षुण्ण है।

प्रार्थना से सभी कार्य सहज ही सिद्ध हो सकते हैं, प्रार्थना के माध्यम से चिकित्सा करने वाले कैनेडा निवासी ग्रल्बर्ट इ० विलक का ग्रनुभव है कि चिकित्सा कार्य में प्रार्थना से ग्रत्यधिक प्रभाव पड़ता है, हम जो कार्य ग्रौषधि से नहीं कर सकते उससे कई गुना ग्रच्छा कार्य प्रार्थना के माध्यम से कर सकते हैं।

ग्रमेरिका में एक पुस्तक प्रकाशित है जिसका नाम है "टीच ग्रस टू प्रे" इस पुस्तक में किस प्रकार से प्रार्थना की जानी चाहिए

इसका विस्तृत वर्णन है। इसमें लेखक ने लिखा है कि चिकित्सक ग्रौर बीमार दोनों की इस बात में सद् मान्यता ग्रौर विश्वास होना चाहिए कि प्रार्थना से हम ग्रपने शरीर को सुदृढ़ बना सकते हैं। ग्रारोग्य लाभ के लिये किसी पूजा या पाखण्ड की ग्रावश्यकता नहीं है, ग्रावश्यकता इस बात की है कि हमारा हृदय निष्कपट ग्रौर पवित्र हो, तथा हम निश्छल हृदय से प्रभु को स्मरण कर सकें। प्रार्थना का प्रभाव उसी व्यक्ति के लिये संभव है जो बीमारी को भी ईश्वर का वरदान समझता है।

प्रसिद्ध पाश्चात्य चिकित्सक हीलर ग्रलबर्ट ने हजारों लोगों पर परीक्षण करके यह सिद्ध किया कि दूषित एवं ग्रस्वास्थ्यकर भोजन से इतना ग्रधिक प्रभाव नहीं पड़ता जितना दूषित मनोवृत्ति एवं कुत्सित विचारों से पड़ता है। प्रार्थना के माध्यम से उन्होंने हजारों लोगों के रोगों का निदान किया था। ग्रल्बर्ट विलक ने ग्रपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'प्रे' में एक उदाहरण देते हुए बताया है कि एक महिला ग्रपने इकलौते पुत्र की बीमारी से ग्रत्यधिक पीड़ित एवं चिन्तित थी, उसकी चिकित्सा पर उसने पानी की तरह पैसा बहाया ग्रौर सैकड़ों चिकित्सकों के पास गई पर बच्चे की स्थिति दिनों दिन बिगड़ती ही चली गई, जिस समय वह ग्रपने बच्चे को लेकर मेरे पास ग्राई उस समय बच्चा ग्रत्यधिक रुग्ण तथा कमजोर हो गया था, वह बड़ी उद्विग्न थी ग्रौर यह ग्राशंका उसे बराबर खाये जा रही थी कि मेरा पुत्र ग्रब ठीक नहीं हो सकेगा। मैंने उसे बिठाया, पहले इधर-उधर की बातें की, फिर उसके हृदय में ईश्वर के प्रति विश्वास पैदा किया ग्रौर जब उसके हृदय में ईश्वर के प्रति विश्वास सुदृढ़ हो गया तो मैंने उससे कहा ग्राग्रो हम ग्रब दोनों इस बच्चे के स्वास्थ्य लाभ के लिये ईश्वर से प्रार्थना करें, हम दोनों ने वहीं बैठकर शुद्ध एवं सात्विक रूप से प्रभु को स्मरण किया ग्रौर बच्चे के स्वास्थ्य लाभ के लिये प्रार्थना की। हमें यह देखकर ग्रत्यन्त ग्राश्चर्य हुग्रा कि सुस्त ग्रौर बेजान सा बालक स्वस्थ होने लगा। उसने ग्रांखें खोली ग्रौर कई दिनों के बाद पहली बार दूध मांगा, उसके बाद हम नित्य केवल पन्द्रह मिनट के लिये उस बच्चे की स्वास्थ्य कामना के लिये प्रार्थना करते ग्रौर मात्र पन्द्रह दिन में ही वह इतना स्वस्थ हो गया कि ग्रासानी

से चलने फिरने लगा। अन्य चिकित्सकों तथा डाक्टरों के दल को यह विश्वास नहीं हो रहा था कि मात्र प्रार्थना से इतना आश्चर्य-जनक परिवर्तन हो सकता है।

गंठिया भयंकर रोग होता है, चिकित्सकों के अनुसार यह रोग मन की अशान्ति और परेशानी के कारण होता है। जिस व्यक्ति के चित्त में अत्यधिक चिन्ता होगी उसे गठिया रोग शीघ्र ही हो जायेगा। चिकित्सक मिस्टर बीयर्ड ने बताया है कि मैंने अपने जीवन में दो हजार से अधिक लोगों के गठिया रोग का निदान एवं उपचार प्रार्थना के माध्यम से किया है और इसमें मैंने पूर्णतः सफलता प्राप्त की है। प्रसिद्ध न्यायाधीश लीवर वेन्डल ने अपने संस्मरणों में लिखा है कि मनुष्य जितना ज्यादा धन के पीछे उलझता है, हृदय रोग उसे उतने ही ज्यादा होते हैं। यदि व्यक्ति नित्य प्रातः केवल पन्द्रह से पच्चीस मिनट तक समस्त चिन्ताओं को छोड़ अपने स्वास्थ्य के लिये ईश्वर से प्रार्थना करे तो उसे जीवन में कभी भी हृदय रोग नहीं हो सकता, और न किसी प्रकार की व्याधि से ग्रस्त होकर परेशान हो रह सकता है, क्योंकि जहाँ तक मेरा अनुभव है हृदय रोग की अमूल्य औषधि विश्वास और प्रभु की प्रार्थना है।

इसी प्रकार रक्त-चाप, मधुमेह, कैन्सर आदि भयंकर बीमारियाँ मात्र मानसिक चिन्ताओं से होती हैं। हम ज्यों-ज्यों भौतिक सुखों में उलझते जाते हैं त्यों-त्यों उन बीमारियों को भी पालते जाते हैं, क्योंकि हमारी चौबीस घण्टों का चिन्तन मात्र भौतिक सुख रह गया है, और इसीलिये हमारा मन, मस्तिष्क एवं विचार ईश्वर से दूर हटते जा रहे हैं। इसके लिये आवश्यकता है कि हम इन चौबीस घण्टों में केवल आधा घण्टा इन सबसे मुक्त होकर प्रभु के चरणों में चित्त लगायें और उनसे अपनी परेशानियाँ कहें, तो कोई कारण नहीं कि हम अपनी भौतिक समस्याओं से मुक्ति पा सकें। पाश्चात्य साधकों और भारतीय साधकों का यह दृढ़ विश्वास रहा है कि प्रार्थना के माध्यम से हम असम्भव से असम्भव कार्य को सम्भव कर सकते हैं। अनेक साधकों ने इस पर परीक्षण भी किये हैं और उनका यह विश्वास दृढ़ बना है कि रोग मुक्ति, सन्तान प्राप्ति, शत्रु पराजय, परीक्षा में सफलता, दुष्ट आत्माओं से छुटकारा,

मानसिक शान्ति तथा यश सम्मान की प्राप्ति आदि कार्य प्रार्थना के माध्यम से हम संभव कर सकते हैं और अपनी समस्याओं से छुटकारा पा सकते हैं।

यहाँ इस बात का यह विशेष ध्यान रखना चाहिए कि प्रार्थना शुद्ध हृदय से हो और उस समय अपने आस-पास का वातावरण अत्यन्त पवित्र सौम्य और सुरुचिपूर्ण हो। प्रार्थना का तात्पर्य प्रार्थना है, और एक समय में हम केवल एक के लिये ही प्रार्थना कर सकते हैं। अतः प्रार्थना करते समय हम अन्य समस्याओं से मुक्त होकर निश्छल हृदय से ईश्वर के शरण में जायें फिर भले ही यह समय पन्द्रह मिनट का ही हो, हम अपने निश्चय में तथा कार्य में अवश्य ही सफल हो सकेंगे।

महामना मालवीय प्रार्थना में अत्यधिक विश्वास करते थे। एक बार एक महात्मा ने इनसे पूछा कि कोई ऐसा उपाय बताइये कि जिससे कि मेरे जीवन की परेशानियाँ और समस्या मिट जाँय।

मालवीय जी ने उत्तर दिया कि ये परेशानियाँ और समस्याएँ तुम्हारे जीवन में इसलिये है कि तुम अभी तक वाणी से भले ही प्रभु के निकट हो पर मन और आत्मा से उनके निकट नहीं हो, जिस दिन तुम विगलित कंठ से प्रभु को स्मरण करोगे और अपने दुखों से मुक्ति पाने के लिये उससे प्रार्थना करोगे तब एक क्षण भी नहीं लगेगा और तुम प्रभु के सन्निकट पहुँच जाओगे। जब ऐसी स्थिति आ जायगी तब तुम में और प्रभु में किसी प्रकार का कोई भेद नहीं रहेगा और इस प्रकार तुम अपनी समस्याओं से मुक्ति पाकर अपने गन्तव्य स्थल तक पहुँच सकोगे।

महात्मा गांधी का सम्पूर्ण जीवन प्रार्थनामय रहा है। बापू कहते थे कि ईश्वर-प्रार्थना मानव जीवन का अनिवार्य अंग है। मनुष्य खाये बिना एक सप्ताह या इससे भी अधिक जीवित रह सकता है पर प्रार्थना के बिना वह एक क्षण भी कैसे जीवित रह जाता है इस बात का मुझे आश्चर्य है? जिस दिन उनकी प्रार्थना समय पर नहीं हो पाती उस दिन उन्हें अत्यधिक व्यथा होती।

एक बार रात्रि के समय सोते वक्त वे प्रार्थना करना भूल गये। बापू का यह नियम था कि वे नित्य सोने से पूर्व प्रभु से अपने अपराधों की क्षमा माँग लेते थे, उस दिन वे किसी कारणवश भूल गये और

उन्हें नींद आ गई। पन्द्रह मिनट बाद जब उनकी आँख खुली तो हड़बड़ाकर उठ बैठे उनका सारा शरीर पसीना-पसीना हो गया। चित्त में व्याकुलता बढ़ गई और वे सोचने लगे कि मैं आज प्रभु को भूल कैसे गया? मुझसे ऐसा क्या अपराध बन गया कि प्रभु ने मुझे भुला दिया, और हाथ पैर धोकर उन्होंने प्रार्थना की और उसके बाद ही सुख की नींद पुनः सो सके।

बुद्ध ने एशिया में बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय की जो ज्योति जलाई, ईसा ने अपने सत्यचरण के द्वारा जो पथ प्रशस्त किया, बापू ने युग की नाड़ी पहचान कर जो रास्ता बताया उस सबके पीछे एक ही ध्येय है और वह है प्रार्थना। क्योंकि जितने भी महापुरुष हुए हैं उनका जीवन निश्चय ही प्रभु से सम्पर्कित रहा है और जिस क्षण प्रभु का और उनका आपसी तारतम्य टूट जाता, उस समय वे विकल हो उठते और जब तक वापिस वह तार नहीं जुड़ जाता तब तक उनके मन को चैन नहीं मिलता। वस्तुतः प्रार्थना मानव जीवन का अमोघ अस्त्र है और बिना प्रार्थना के व्यक्ति की सत्ता शून्य के बराबर है।

प्रार्थना का कोई विशेष अर्थ नहीं है। प्रार्थना का अर्थ प्रार्थना है। फिर भले ही यह प्रार्थना किसी भी भाषा और किसी भी राग में गाई जाय, कुछ लोग प्रार्थना कहते हैं कुछ लोग इसे ही नाम-स्मरण अथवा स्तुति भी कहते हैं, इसलिये चाहे हम स्तुति करें या प्रार्थना करें इन सबके पीछे एक ही ध्येय है, चौबीस घण्टे हम जो अपने आप में ही केन्द्रित रहते हैं, उससे परे हटकर कुछ क्षणों के लिये अपना सम्बन्ध परम विराट् सत्ता से जोड़ें और इस प्रकार हम अपनी समस्याओं को उनके सामने रखें।

प्रसिद्ध संत मोरेश्वर ने अपने अनुभवों का निचोड़ स्पष्ट करते हुए एक बार बताया था कि जब भी कोई समस्या मेरे जीवन में आती थी तो मैं उस समस्या को लिखकर प्रभु के चरणों में रख देता था, उसके बाद मैं शुद्ध होकर प्रभु के सामने बैठ जाता और उसी समस्या को दो तीन बार व्यक्त कर देता, जब मैं प्रार्थना से उठता तब मेरा मानस अत्यन्त हल्का होता और मुझे उस समस्या का समाधान प्राप्त हो जाता।

इस प्रकार के परीक्षण कई लोगों ने अपने जीवन में किये।

जब भी कोई ऐसी गुत्थी हमारे जीवन में आए, जिसे हम आसानी से न सुलझा सकें या कोई ऐसी समस्या आ जाय जिससे पार पाना कठिन प्रतीत होता हो तो उस समस्या को या गुत्थी को कागज पर लिखकर ईश्वर के चरणों में रख देना चाहिए, इतना करने से आप अपने कर्त्तव्य से मुक्त हो जाते हैं, इसके आगे का काम प्रभु का है और वह स्वतः ही आपके मानस में कोई ऐसी राह सुझा देता है। जिससे कि आप उस समस्या से मुक्ति प्राप्त कर सकें।

प्रभु का एक प्रसिद्ध नाम है—"भक्ताभीष्टफलप्रद" इसका अर्थ है कि यदि हम शुद्ध हृदय से भगवान् की प्रार्थना करें तो निश्चय ही भगवान हमारे अभीष्ट की पूर्ति करता है, इसका मूल कारण यह है कि प्रभु और पुरुष में तात्विक दृष्टि से कोई अन्तर नहीं है, दोनों एक ही विराट सत्ता के दो छोर हैं, यदि तार के एक किनारे पर विद्युत प्रवाहित की जाय तो उसका करेन्ट दूसरे सिरे पर अवश्य ही पहुँच जाता है। इसी प्रकार जब व्यक्ति के सामने कोई परेशानी आती है और परेशानी को भगवान के सामने रख देता है तो निश्चय ही प्रभु उस समस्या का समाधान प्रस्तुत कर देते हैं, इस प्रकार हम आई हुई विपत्ति को टालकर जीवन में आनन्द-भोग कर सकते हैं। जिस वाणी के द्वारा हम आर्त कंठ से प्रभु को पुकारते हैं वही वाणी प्रार्थना कहलाती है, फिर भले ही यह वाणी गद्य में हो या पद्य में, सुललित कंठ से गाई हुई हो या अटपटी भावनाओं से, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता आवश्यकता इस बात की है कि हम अपनी बात को आर्त कंठ से प्रभु के सामने पहुंचा दें, जिसमें किसी प्रकार का मेल न हो द्वेष न हो, छल या कपट न हो, और हमारी प्रीति बुद्धिवादिता या चालाकी न हो।

मेरी आँखों देखी घटना है जोधपुर के एक व्यापारी शक्कर के भाव गिर जाने से दिवालिया स्थिति में आ गए थे, ऐसा प्रतीत हो रहा था कि ये एक दो दिन में ही दिवाला निकालने वाले हैं, इससे पूर्व सेठ जी का व्यापार अत्यन्त बढ़ा-चढ़ा था। उनकी दुकान की साख दूर-दूर तक फैली हुई थी, उन्होंने काफी प्रयत्न किया इधर-उधर भाग दौड़ की, परन्तु कोई ऐसा रास्ता न निकल सका कि जिससे दिवालिया होने से बच जाय।

एक दिन जब कर्जदारों ने जरूरत से ज्यादा उन्हें परेशान

किया तो उनकी आत्मा कुंठित हो गई, वे पूजा गृह में जाकर प्रभु के सामने गिर गये और उनकी आँखों में आँसुओं की धाराएं बहने लगी, मुंह से बोल नहीं फूट रहे थे, गले में हिचकियां भर गई थीं और फिर उन्होंने धीरे-धीरे अपनी व्यथा को प्रभु के सामने रख दी तथा कहा कि या तो मुझे मृत्यु दे दे अथवा मुझे संकट से उबार ले।

यह प्रार्थना सच्चे हृदय से की गई थी। इसमें किसी प्रकार का छल नहीं था और न किसी प्रकार का दुराव-छुपाव भी था, आश्चर्य की बात यह है कि जब एक घण्टे बाद सेठजी पूजा गृह से बाहर आए तो बम्बई निवासी उनके मित्र रामदयालजी उपस्थित थे, किसी समय सेठजी ने रामदयाल जी के यहां नौकरी की थी और उसके बाद एक समय ऐसा भी आया था जब सेठजी ने लगभग ढाई लाख रुपया रामदयालजी को उधार दिया था।

मगर इसके बाद कुछ कारणों से आपस में गलत-फहमियां पैदा हो गई थीं। सेठजी ने उन पर ढाई लाख के लिये मुकदमा कर दिया था पर वे हाई कोर्ट तक मुकदमा हार गये, और इस प्रकार सेठजी ने निश्चय कर लिया था कि अब यह रुपया मेरे जीवन में वापिस नहीं आ सकेगा।

इधर रामदयालजी वृद्ध हो गये थे और एक दिन बैठे-बैठे उनके दिमाग में आया कि यद्यपि मुकदमा हम जीत गए हैं परन्तु यह बात तो स्पष्ट ही है कि उनसे ढाई लाख रुपया लिया था और हमने लौटाया नहीं है। अब मेरी अन्तिम अवस्था है, मरने के बाद मैं ईश्वर को मुंह क्या दिखाऊंगा ? यह विचार आते ही उसी समय ढाई लाख रुपये लेकर जोधपुर जाकर सेठजी को देने का निश्चय किया और क्षमा मांगने का विचार मन में उत्पन्न किया।

ज्योंही सेठ जी पूजा गृह से बाहर निकले, रामदयाल जी ने लपक कर उनके चरण छू लिये। सेठजी ने उन्हें उठाकर अपने गले से लगा लिया और कहा भाई रामदयाल। यह क्या गजब कर रहे हो ? तुम आयु में मुझसे बड़े हो ? उल्टे चरण छूने का अधिकार तो मुझे मिलना चाहिए, दोनों अपने व्यक्तिगत कक्ष में गये और वहां रामदयाल जी ने थैलो में से ढाई लाख के नोट निकाल कर उनके सामने रख दिये, और कहा यद्यपि मुकदमा मैं जीत गया हूँ पर नैतिकता की दृष्टि से तुम हमेशा जीते हुए हो। तुम्हारा ढाई लाख

मुझमें बकाया निकलता था, और जब तक ढाई लाख तुम्हें नहीं दे देता तब तक मेरे मन को किसी प्रकार से शान्ति नहीं मिल सकती अब कृपया इन ढाई लाख रुपयों को स्वीकार कर मुझे क्षमा कर दें।

प्रभु की महान कृपा को देखकर सेठजी गद्गद हो गए और उन रुपयों से उन्होंने अपनी दूकान की प्रतिष्ठा बनाये रखी।

आज सेठजी लाखों करोड़ों से खेल रहे हैं, पर उस दिन के बाद से आज तक वे प्रभु को भूले नहीं सके हैं। चौबीस घण्टों में एक बार प्रार्थना के माध्यम से प्रभु से अपना सम्बन्ध अवश्य जोड़ लेते हैं, और एक दिन बातों ही बातों में सेठजी ने मुझसे कहा था पंडित जी ! उस दिन के बाद से मैं प्रभु को एक दिन के लिये भी नहीं भूला हूँ, और इस बीच मेरे जीवन में सैकड़ों कठिनाइयां भी आई हैं प्रभु ने एक दिन भी मुझे नहीं भुलाया और वे समस्याएं अपने आप सुलझती चली गई।

यह उदाहरण इस बात का साक्षी है कि प्रार्थना में अत्यन्त शक्ति भरी हुई है यदि हम विश्वास के आधार पर प्रार्थना करें तो कोई कारण नहीं कि हम अपने कार्य में सफलता प्राप्त न कर सकें।

प्रार्थना, कवच, स्तुति या स्तोत्र अपने आप में अत्यन्त महत्व-पूर्ण है उनमें शब्दों का गुम्फन ही इस प्रकार से होता है कि वे अपने आप में एक समष्टिगत प्रभाव को उत्पन्न करने में सक्षम होती है। सैकड़ों लाखों लोगों द्वारा यह प्रयोग अनुभूत है, इसके लिये कोई अन्य विधि विधान या कर्म काण्ड की आवश्यकता नहीं है। किसी प्रकार के बाह्याचार की जरूरत नहीं, आवश्यकता केवल इस बात की है कि स्तोत्र या प्रार्थना नियमित रूप से हो, शुद्ध एवं सात्विक रूप से हो, तथा विश्वास का आधार लेकर हो, यदि इस प्रकार से प्रार्थना की जाय तो हमारे जीवन में किसी प्रकार की कोई समस्या रह ही नहीं सकती।

इस पुस्तक में हजारों स्तोत्रों एवं स्तुतियों में से छांटकर केवल उन स्तोत्रों का ही संकलन किया है जो कि अपने आपमें अद्वितीय हैं एवं कार्य साधन में सहायक है। इनका विधि पूर्वक पाठ करने से मनुष्य अपनी समस्त इच्छाओं की पूर्ति कर सकता है। इसमें कोई सन्देह नहीं।

गणेश

स्मार्त पंचदेवोपासक होते हैं। ये पाँच देव हैं :—१—श्री विष्णु, २—श्री शिव, ३—श्री शक्ति, ४—श्री सूर्य, ५—श्री गणपति। इनमें से जो मात्र वैष्णव हैं वे विष्णु को ही मुख्य अंग मानकर पूजा करते हैं, इस प्रकार शैव शिव को, शाक्त शक्ति को, सौर्य सूर्य को और गाणपत्य गणेशजी को मुख्य मानते हैं।

गणेश शब्द का मूल अर्थ है जो 'समस्त जीव जाति के स्वामी' हों। कुछ लोगों का यह कथन है कि ये अनार्यों के देवता थे। और बाद में आर्यों ने इन्हें पंच देवताओं में स्थान दिया परन्तु यह भ्रम विदेशियों द्वारा फैलाया हुआ है। हमारी सभ्यता के प्रारम्भ से जिन देवताओं की उपासना होती आई है उनमें गणेश सर्वप्रथम पूजनीय रहे हैं।

गणेश का वर्णन कई स्थानों पर आया है और अनुभवों से यह सिद्ध हुआ है कि गणपति की पूजा जीवन में मंगलकारी एवं अत्यन्त अनुकूल रहती है। जो व्यक्ति अन्य किसी देवी-देवताओं की पूजा नहीं कर सकता तो उसे गणेश पूजन अवश्य ही करना चाहिए। मेरा व्यक्तिगत अनुभव यह रहा है कि यदि हम नित्य प्रातः उठते समय गणपति का स्मरण कर लें तो सारा दिन प्रसन्नता से बीतता है, और उस दिन विशेष शुभ फलदायक समाचार मिलते हैं।

बाबा हरिदास जी का मेरे जीवन में विशेष स्थान है, वे प्रबल गणेशोपासक थे। गणपति ही उनका इष्ट था और गणपति ही की छोटी सी मूर्ति को वे अपनी आँख की कोर में रखते थे जो कि राई के बराबर बड़ी थी, उन्होंने बताया कि कलियुग में शीघ्रातिशीघ्र फलदायक देव गणपति ही है। इसीलिये प्रत्येक कार्य के पूर्व गणपति की पूजा एवं ध्यान किया जाता है, वह कार्य सिद्ध हो ही नहीं सकता जिसके प्रारम्भ में गणतपति पूजन न किया गया हो। जिस व्यक्ति

को गणपति का इष्ट है आधिक दृष्टि से उसके जीवन में किसी प्रकार की कोई न्यूनता रह ही नहीं सकती।

आगे के पृष्ठों में मैंने गणपति से सम्बन्धित कुछ स्तोत्र दिये हैं जो कि संक्षिप्त होते हुए भी अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं। प्रातः उठकर यदि व्यक्ति इनमें से किसी एक स्तोत्र का पाठ भी कर ले तो उसके जीवन में किसी प्रकार का कोई अभाव नहीं रहता। चिन्ता एवं रोग निवारण के लिये "मयूरेश-स्तोत्र" अत्यन्त समर्थ है, यह स्तोत्र मनुष्य को भक्ति मार्ग में लगाने वाला तथा समस्त प्रकार के पापों को नाश करने वाला है। मानसिक रूप से चाहे कितनी ही चिन्ताएँ व्यक्ति को परेशान कर रही हों, यदि वह ११ दिन ही प्रातः उठकर "मयूरेश स्तोत्र" का पाठ कर ले तो वह स्वयं ही आश्चर्यजनक रूप से अनुभव करेगा कि चिन्ताएँ एवं समस्याएँ स्वतः ही समाप्त हो रही हैं, और उन समस्याओं का सुलझाव अपने अनुकूल हो रहा है। यह शुभ स्तोत्र मानसिक चिन्ता तथा शारीरिक रोग को दूर करने में अत्यधिक सहायक एवं अनुकूल है।

मेरे मित्र कई वर्षों से सर्दी-खाँसी जैसे रोग से पीड़ित थे उन्होंने सैकड़ों इंजेक्शन लगाये होंगे और न मालूम कितने ही वैद्यों की दवाइयाँ सेवन की होंगी पर रोग कुछ इस प्रकार से था कि वह नियंत्रण में ही नहीं आ रहा था, एक दिन जब उसने अपनी व्यथा मेरे सामने प्रकट की तो मैंने उसे "मयूरेश-स्तोत्र" का नित्य पाठ करने की सलाह दी। उसने दूसरे ही दिन से मेरे बताये हुए तरीके से स्तोत्र का पाठ करना शुरू किया, और यह जानकर अत्यन्त आश्चर्य हुआ कि वह पुराना रोग मात्र ३० दिन के पाठ से ही समाप्त हो गया और उसके बाद आज लगभग ३ वर्ष बीत गए हैं उस रोग से सम्बन्धित कोई शिकायत उन्हें नहीं है।

मैंने इस स्तोत्र का पाठ करने की सलाह कई रोगियों को दी है और इसका आशाजनक फल प्राप्त हुआ है। कई भयंकर रोगों में भी इस स्तोत्र ने रामबाण की तरह काम किया है और उन्हें असाध्य रोगों से मुक्ति दिलाई है।

नित्य प्रातः स्नान कर शुद्ध रेशमी वस्त्र पहन गणपति की मूर्ति या उसके चित्र के सामने बैठकर श्रद्धापूर्वक एक बार "मयूरेश-स्तोत्र" का पाठ करें और इस प्रकार तब तक करते रहें

जब तक कि वह कार्य सिद्ध न हो जाय, निश्चय ही वह अपने कार्य में सफल होगा इसमें कोई सन्देह नहीं ।

संकटनाश के लिये गणपति से संबंधित एक अन्य महत्वपूर्ण स्तोत्र 'संकटनाशन स्तोत्र' है । यह स्तोत्र भी अपने आप में महत्व-पूर्ण है, व्यक्ति के जीवन में कितना ही भयंकर संकट क्यों न आया हो, यदि इस स्तोत्र का पाठ नित्य श्रद्धापूर्वक करे तो वह उस संकट से मुक्ति प्राप्त करने में सफल हो जाता है । इस स्तोत्र का प्रभाव मैंने यहां तक देखा है कि व्यक्ति जेल से मुक्त हो जाता है तथा मुकदमें में सफलता प्राप्त कर लेता है ।

जिन व्यक्तियों पर मुकदमें चल रहे हों, या शत्रु परेशान कर रहे हों तो उस व्यक्ति के लिये यह स्तोत्र कल्प वृक्ष के समान है । उन्हें चाहिए कि इस स्तोत्र का पाठ नित्य पांच बार करें, और जब तक इस स्तोत्र का पाठ चालू रखें जब तक कि उसे अपने कार्य में सिद्धि प्राप्त न हो जाय, शत्रु विजय, मुकदमें में सफलता तथा बाधाओं की शान्ति के लिये इससे बढ़कर कोई अन्य स्तोत्र नहीं है ।

गणेश पुराण में समस्त कामनाओं की सिद्धि के लिये 'गणेशा-ष्टक' दिया गया है, यह गणेशाष्टक ऋद्धि-सिद्धि के लिये तथा व्यापारिक उन्नति के लिये अत्यन्त फलप्रद है, जिस व्यक्ति का व्यापार भली प्रकार न जम रहा हो या आर्थिक घाटा हो रहा हो अथवा वह आर्थिक दृष्टि से परेशानी अनुभव कर रहा हो तो उसे चाहिए कि वह गणेशाष्टक का पाठ नित्य करे । आर्थिक सम्पन्नता के लिये यह अष्टक अद्भुत चमत्कारी है । बिना कुछ भी व्यय किये केवल मात्र इसका पाठ ही व्यक्ति की सम्पन्नता में सहायक होता है । मैंने जिन-जिन व्यतियों को इस स्तोत्र का पाठ करने की सलाह दी है उन्हें आशाजनक परिणाम प्राप्त हुए है । उनके पत्रों से ध्वनित होता है कि इस स्तोत्र का पाठ करने के बाद से उन्हे व्यापार में अद्भुत सफलता मिली है । बेकारी का दौर समाप्त हो गया है, तथा आर्थिक दृष्टि से किसी प्रकार का कोई अभाव नहीं रहा है, मेरी तो यहां तक मान्यता है कि यदि व्यक्ति सभी दृष्टियों से सुखी, सफल एवं सम्पन्न भी हो तब भी उसे इस गणेशाष्टक का नित्य पाठ करना चाहिए । ऐसा करने से उसके जीवन में किसी प्रकार से कोई अभाव नहीं रह सकता ।

लक्ष्मी प्राप्ति के लिये मैंने इन्हीं पृष्ठों में गणपति का एक स्तोत्र दिया है जो अपने आप में संक्षिप्त होते हुए भी पूर्ण फलप्रद है । यदि व्यक्ति इस स्तोत्र की नित्य एक माला फेरे अथवा मात्र पांच पाठ ही नित्य करे तो उसे जीवन में पूर्ण लक्ष्मी प्राप्ति होती है, तथा आर्थिक जीवन में किसी प्रकार का कोई अभाव नहीं रहता, मेरे स्वयं की नित्य पूजा में यह स्तोत्र सम्मिलित है ।

इसी क्रम में मैंने गणपति के दो अत्यन्त दुर्लभ स्तोत्र दिये हैं जिनमें से एक 'गणाधिप स्तोत्र' है जो कि श्री एवं पुत्र की प्राप्ति के लिये है दूसरा स्तोत्र पुत्र की प्राप्ति के लिये है । ये दोनों ही स्तोत्र अत्यन्त चमत्कारिक एवं पूर्ण लाभप्रद है । श्री एवं पुत्र की प्राप्ति के लिये स्तोत्र सुललित कंठ से गाये जाने पर विशेष लाभप्रद माना गया है । शंकराचार्य विरचित यह स्तोत्र अत्यत दुर्लभ है तथा लक्ष्मी प्राप्ति के लिये एवं पुत्र की उन्नति के लिये इस स्तोत्र के नित्य पाठ से सन्तान सुयोग्य बनती है । तथा उसको उन्नति में किसी प्रकार की कोई रुकावट नहीं रहती । यदि सन्तान की उन्नति में कोई बाधा अनुभव होती हो या उसे नौकरी नहीं मिल रही हो या मंद बुद्धि हो अथवा उसकी परीक्षा की सफलता में संदिग्धता हो तो व्यक्ति को चाहिए कि इस स्तोत्र का नित्य पाठ करे, कुछ ही दिनों में वह खुद ही अनुभव करेगा कि यह स्तोत्र इस प्रकार की समस्याओं के समाधान के लिये अद्भुत लाभदायक है ।

पुत्र की प्राप्ति के लिये जो स्तोत्र दिया है वह आकार में भले ही छोटा हो परन्तु उसका प्रभाव विशेष है, यद्यपि सन्तान प्राप्ति के लिये अन्य कई उपाय हैं परन्तु मेरे अनुभव में यह स्तोत्र अपने आप में ही पूर्ण लाभप्रद है । इस स्तोत्र का पाठ स्त्री या पुरुष दोनों में से कोई कर सकता है और यदि श्रद्धापूर्वक नित्य पाठ किया जाय तो उसके जीवन में पुत्र का अभाव रह ही नहीं सकता । इस प्रकार का प्रयोग मैंने अपने परिचितों से करवाया है और उसका पूर्ण अनुकूल परिणाम रहा है ।

निश्चय ही गणपति समस्त कामनाओं की सिद्धि देने में सहायक हैं । अतः यथासंभव हमें गणपति का पूजन या उसके स्तोत्र का पाठ नित्य करना चाहिए । हमारे पूजा में चाहे अन्य स्तोत्र सम्मिलित हों पर उसमें गणपति से संबंधित एक स्तोत्र अवश्य ही

प्रारम्भ में रहना चाहिए जिससे कि हमारे जीवन में किसी प्रकार का कोई अभाव या बाधा न रहे।

चिन्ता एवं रोग निवारण के लिये
मयूरेशस्तोत्रम्
ब्रह्मोवाच

पुराणपुरुषं देवं नानाक्रीडाकरं मुदा।
मायाविनं दुर्विभाव्यं मयूरेशं नमाम्यहम् ॥
परात्परं चिदानन्दं निर्विकारं हृदि स्थितम्।
गुणातीतं गुणमयं मयूरेशं नमाम्यहम् ॥
सृजन्तं पालयन्तं च संहरन्तं निजेच्छया।
सर्वविघ्नहरं देवं मयूरेशं नमाम्यहम् ॥
नानादैत्यनिहन्तारं नानारूपाणि बिभ्रतम्।
नानायुधधरं भक्त्या मयूरेशं नमाम्यहम् ॥
इन्द्रादिदेवतावृन्दैरभिष्टुतमहर्निशम्।
सदसद्व्यक्तमव्यक्तं मयूरेशं नमाम्यहम् ॥
सर्वशक्तिमयं देवं सर्वरूपधरं विभुम्।
सर्वविद्याप्रवक्तारं मयूरेशं नमाम्यहम् ॥
पार्वतीनन्दनं शम्भोरानन्दपरिवर्धनम्।
भक्तानन्दकरं नित्यं मयूरेशं नमाम्यहम्।
मुनिध्येयं मुनिनुतं मुनिकामप्रपूरकम्।
समष्टिव्यष्टिरूपं त्वां मयूरेशं नमाम्यहम् ॥
सर्वाज्ञाननिहन्तारं सर्वज्ञानकरं शुचिम्।
सत्यज्ञानमयं सत्यं मयूरेशं नमाम्यहम् ॥
अनेककोटिब्रह्माण्डनायकं जगदीश्वरम्।
अनन्तविभवं विष्णुं मयूरेशं नमाम्यहम्।

मयूरेश उवाच

इदं ब्रह्मकरं स्तोत्रं सर्वपापप्रणाशनम्।
सर्वकामप्रदं नृणां सर्वोपद्रवनाशनम्।
कारागृहगतानां च मोचनं दिनसप्तकात्।
आधिव्याधिहरं चैव भुक्तिमुक्तिप्रदं शुभम् ॥

संकटनाश के लिये
संकष्टनाशन स्तोत्रम्
नारद उवाच

प्रणम्य शिरसा देवं गौरीपुत्रं विनायकम्।
भक्तावासं स्मरेन्नित्यमायुः कामार्थसिद्धये ॥
प्रथमं वक्रतुण्डं च एकदन्तं द्वितीयकम्।
तृतीयं कृष्णपिंगाक्षं गजवक्त्रं चतुर्थकम्।
लम्बोदरं पंचमं च षष्ठं विकटमेव च।
सप्तमं विघ्नराजेन्द्रं धूम्रवर्णं तथाष्टमम् ॥
नवमं भालचन्द्रं च दशमं तु विनायकम्।
एकादशं गणपतिं द्वादशं तु गजाननम् ॥
द्वादशैतानि नामानि त्रिसंध्यं यः पठेन्नर।
न च विघ्नभयं तस्य सर्वसिद्धिकरं परम्।
विद्यार्थी लभते विद्यां धनार्थी लभते धनम्।
पुत्रार्थी लभते पुत्रान् मोक्षार्थी लभते गतिम् ॥
जपेद्गणपतिस्तोत्रं षड्भिर्मासैः फलं लभेत्।
संवत्सरेण सिद्धिं च लभते नात्र संशयः ॥
अष्टभ्यो ब्राह्मणेभ्यश्च लिखित्वा यः समर्पयेत्।
तस्य विद्या भवेत् सर्वा गणेशस्य प्रसादतः ॥

समस्त कामनाओं की सिद्धि के लिये

गणेशाष्टक

यतोऽनन्तशक्तेरनन्ताश्च जीवा यतो निर्गुणादप्रमेया गुणास्ते ।
यतो भाति सर्वं त्रिधा भेदभिन्नं सदा तं गणेशं नमामो भजामः ॥
यतश्चाविरासीज्जगत्सर्वमेतत्तथाब्जासनो विश्वगो विश्वगोप्ता ।
तथेन्द्रादयो देवसंघा मनुष्याः सदा तं गणेशं नमामो भजामः ॥
यतो वह्निभानू भवो भूर्जलं च यतः सागराश्चन्द्रमा व्योम वायुः ।
यतः स्थावरा जंगमा वृक्षसंघाः सदा तं गणेशं नमामो भजाम ॥
यतो दानवाः किन्नरा यक्षसंघा यतश्चारणा वारणाः श्वापदाश्च ।
यतः पक्षिकीटा यतो वीरुधश्च सदा तं गणेशं नमामो भजामः ॥
यतो बुद्धिरज्ञाननाशो मुमुक्षोर्यतः सम्पदो भक्तसंतोषिकाः स्युः ।
यतो विघ्ननाशो यतः कार्यसिद्धिः सदा तं गणेशं नमामो भजामः ॥
यतः पुत्रसम्पद् यतो वांछितार्थो यतो भक्तविघ्नास्तथानेकरूपाः ।
यतः शोकमोहौ यतः काम एव सदा तं गणेशं नमामो भजाम : ॥
यतो नन्तशक्तिः स शेषो बभूव धराधारणे नेकरूपे च शक्तः ।
यतो नेकधा स्वर्गलोका हि नाना सदा तं गणेशं नमामो भजाम : ॥
यतो वेदवाचो विकुण्ठा मनोभिः सदा नेति नेतीति यत्ता गृणन्ति ।
परब्रह्मरूपं चिदानन्दभूतं सदा तं गणेशं नमामो भजामः ॥

श्री गणेश उवाच

पुनरूचे गणाधीशः स्तोत्रमेतत्पठेन्नरः ।
त्रिसंध्यं त्रिदिनं तस्य सर्वं कार्यं भविष्यति ॥
यो जपेदष्टदिवसं श्लोकाष्टकमिदं शुभम् ।
अष्टवारं चतुर्थ्यां तु सोष्टसिद्धीरवाप्नुयात् ॥
यः पठेन्मासमात्रं तु दशवारं दिने दिने ।
स मोचयेद्बन्धगतं राजवध्यं न संशयः ॥
विद्याकामो लभेद्विद्यां पुत्रार्थी पुत्रमाप्नुयात् ।
वांछितांल्लभते—सर्वानेकविंशतिवारतः ॥
यो जपेत् परया भक्त्या गजाननपरो नरः ।
एवमुक्त्वा ततो देवश्चान्तर्धानं गतः प्रभुः ॥

———०———

लक्ष्मी प्राप्ति के लिये

ओम नमो विघ्नराजाय सर्वसौख्यप्रदायिने ।
दुष्टारिष्टविनाशाय पराय परमात्मने ॥
लम्बोदरं महावीर्यं नागयज्ञोपशोभितम् ।
अर्धचन्द्रधरं देवं विघ्नव्यूहविनाशनम् ॥
ओम ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः हेरम्बाय नमो नमः ॥
सर्वसिद्धिप्रदो सि त्वं सिद्धिबुद्धिप्रदो भव ॥
चिन्तितार्थप्रदस्त्वं हि सततं मोदकप्रियः ।
सिन्दूरारुणवस्त्रैश्च पूजितो वरदायकः ॥
इदं गणपतिस्तोत्रं यः पठेद् भक्तिमान् नरः ।
तस्य देहं च गेहं च स्वयं लक्ष्मीर्न मुंचति ॥

———०———

श्री एवं पुत्र की प्राप्ति के लिये

सरागिलोकदुर्लभं विरागिलोकपूजितं सुरासुरैर्नमस्कृतं जरादिमृत्युना-शकम् ।
गिरा गुरुं श्रिया हरिं जयन्ति यत्पदार्चका नमामि तं गणाधिपं कृपापय पयोनिधिम् ॥
गिरीन्द्रजामुखाम्बुजप्रमोददान भास्करं करीन्द्रवक्त्रमानताघ-संघवारणोद्यतम् ।
सरीसृपेशबद्धकुक्षिमाश्रयामि संततं शरीरकान्तिनिर्जिताब्जबन्धुबा-लसंततिम् ॥
शुकादिमौनिवन्दितं गकारवाच्यमक्षरं प्रकाममिष्टदायिनं सकामनम्रपंक्तये ।
चकासतं चतुर्भुजैर्विकासिपद्मपूजितं प्रकाशितात्मतत्त्वकं नमाम्यहं गणाधिपम् ॥
नराधिपत्वदायकं स्वरादिलोकदायकं ज्वरादिरोगवारकं निरा-कृता सुरव्रजम् ।

करामबुजंधरंनसृणीन विकारशून्यमानसैर्हृदा सदा विभावितं
मुदा नमामि विघ्नपम् ॥
क्षमापनोदनक्षमं समाहितान्तरात्मना समाधिभिः सदार्चितं क्षमा-
निधिं गणाधिपम् ।
रमाधवादिपूजितं यमान्तकात्मसम्भवं शमादिषड्गुणप्रदं नमामि
तं विभूतये ॥
गणाधिपस्य पंचकं नृणामभीष्टदायकं प्रणामपूर्वकं जनाः पठन्ति
ये मुदायुताः ॥
भवन्ति ते विदाम्पुरः प्रगीतवैभवाः जनाश्चिरायुषो धिकश्रियः
सुसूनवो न संशयः ॥

पुत्र की प्राप्ति के लिये

नमो स्तु गणनाथाय सिद्धिबुद्धियुताय च ।
सर्वप्रदाय देवाय पुत्रवृद्धिप्रदाय च ॥
गुरूदराय गुरवे गोप्त्रे गुह्यासिताय ते ।
गोप्याय गोपिताशेषभुवनाय चिदात्मने ॥
विश्वमूलाय भव्याय विश्वसृष्टिकराय ते ।
नमो नमस्ते सत्याय सत्यपूर्णाय शुण्डिने ॥
एकदन्ताय शुद्धाय सुमुखाय नमो नमः ।
प्रपन्नजनपालाय प्रणतार्तिविनाशिने ॥
शरणं भव देवेश संततिं सुदृढां कुरु ।
भविष्यन्ति च ये पुत्रा मत्कुले गणनायक ॥
ते सर्वे तव पूजार्थं निरताः स्युर्वरो मतः ।
पुत्रप्रदमिदं स्तोत्रं सर्वसिद्धिप्रदायकम् ॥

संकष्टहरणं गणेशाष्टकम् ॥

श्री गणेशाय नमः ॥ ॐ अस्य श्री संकष्टहरणस्तोत्र मन्त्रस्य
श्री महागणपतिर्देवता संकष्ट हरणार्थे जपे विनियोगः ॥
ॐ ॐ ॐ कार रूपं-यहमिति च परं यत्स्वरूपं तुरीयं,
त्रैगुण्यातीतलीलं कलयति मनसस्तेज सिन्दूर मूर्तिम् ।
योगीन्द्रैर्ब्रह्मरन्ध्रैः सकल गुणमयं श्रीहरेन्द्रेण
संङ्ग गं गं गं गं गणेशं गजमुखमभितो व्यापकं चिन्तयामि,
वं वं वं विघ्नराजं भजति निजभुजे दक्षिणे न्यस्त तुण्डं,
क्रं क्रं क्रं क्रोधमुद्रा दलित रिपु बलं कल्पवृक्षस्य मूले ।
दं दं दं दन्त मेकं दधति मुनि मुखं काम धेन्वा निषेव्यं
धं धं धं धारयन्तं धन धर्मति धियं सिद्धि बुद्धि द्वितीयम् ॥२॥
तुं तुं तुं तुंङ्ग रूपं गगनपथि गतं व्याप्नुवन्तं दिगन्तान्,
क्लीं क्लीं क्लीं कारनाथं गलित मद मिलल्लोल मत्तालि मालम्
ह्रीं ह्रीं ह्रीं कारपिङ्ग सकल मुनि वरध्येयमुण्डं च शुण्डं,
श्रीं श्रीं श्रीं श्रीं श्रयन्तं निखिलनिधि कुलं नौमि हेरम्बबिम्बम्॥३॥
लौं लौं लौं कार माद्यं प्रणवमिव पदं मन्त्रमुक्तावलीनां शुद्धं
विघ्नेशबीजं शशि कर सदृशं योगिनां ध्यान गम्यम् ।
डं डं डं डामरूपं दलित भवभयं सूर्य कोटि प्रकाशं,
यं यं यं यज्ञनाथं जपति मुनिवरो बाह्यमभ्यन्तरं च ॥४॥
हुं हुं हुं हुं नवर्णं श्रुतिगणित गुणं शूर्प कर्णं कृपालु ध्येयं,
सूर्यस्य बिम्बं ह्युरसि च विलसत्सर्प यज्ञोपवीतम् ।
स्वाहा हुंफट् नमोन्तैष्ठ ठ ठ ठ सहितैः पल्लवैः
सेव्यमानं मन्त्राणां सप्त कोटि प्रगुणितमहिमाधारमीशं प्रपद्ये ॥५॥
पूर्वं पीठं त्रिकोणं तदुपरि रुचिरं षट्कपत्रं पवित्रं यस्योर्ध्वं
शुद्धरेखा वसुदल कमलम् वा स्वतेजश्च तुल्यम् ।
मध्ये हुंकार बीजं तदनु भगवतः स्वाङ्गषट्कं
षडस्त्रे अष्टौ शक्तिश्च सिद्धिर्बहुलगण पतिर्विष्टरश्चाष्टकं च ॥६॥
धर्माद्यष्टौ प्रसिद्धा दशदिशि विदिता बाध्वजालयः
कपालं तस्य क्षेत्रादिनाथं मुनिकुल मखिलं मंत्रमुद्रा महेशम् ।
एवं यो भक्ति युक्तो जपति गणपतिं पुष्प धूपाक्ष,
तार्धैर्नैवेद्यैर्मोदकानां स्तुति युत विलसद्गी तवादित्रनादैः ॥७॥

राजानस्तस्य भृत्या इव युवति कुलं दास वत्सर्वदास्ते,
लक्ष्मीः सर्वाङ्गयुक्ता श्रयति च सदनं किंकरा सर्वलोकाः ।
पुत्राः पुत्र्यः पवित्रा रणभुवि विजयी द्यूतवादेऽपि वीरो,
यस्येशो विघ्नराजो निवसति हृदये भक्ति भाग्यस्य रुद्रः ॥८॥

राम रक्षा स्तोत्र

प्रसिद्ध संत स्वामी महेशानन्दजी भारत की दिव्य विभूति हैं, उनसे इस जीवन में कई बार मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। वे उच्च कोटि के साधक एवं योगी हैं। एक बार चर्चा में जब 'राम रक्षा स्तोत्र' की बात चल पड़ी तो उन्होंने अपने अनुभव बताते हुए कहा कि 'रामरक्षा स्तोत्र' इस युग का सर्वश्रेष्ठ स्तोत्र है। मैंने अपने जीवन में इस स्तोत्र का विभिन्न अवसरों पर विभिन्न स्थितियों में प्रयोग किया है और वे सभी प्रयोग शत-प्रतिशत सही रहे हैं, उनके अनुसार बिच्छू काटने से लेकर भयंकर विष के प्रयोग में इस स्तोत्र के पाठ से लाभ पहुँचा है तथा घोर आर्थिक संकटों में ग्रस्त व्यक्ति द्वारा इस पाठ से कुछ ही समय में ऋण से उबरते हुए देखा है। नौकरी छूटना, बुखार आना, जी मचलाना, मुसीबत, व्यर्थ की परेशानी तथा संकटकालीन परिस्थितियों में मात्र एक दो पाठ से ही व्यक्ति परेशानी से मुक्त हो जाता है और उसे उसी समय नई राह सूझने लग जाती है।

एक बार महेशानन्दजी के परिचित श्री गंगाशरण सिंह जी से मिलने पर उन्होंने बताया कि मैं एक बार भयानक बीमारी से परेशान था और सैकड़ों उपचार कराकर हार गया था। मन बड़ा उद्विग्न था और उन दिनों मुझे कुछ भी अच्छा नहीं लग रहा था। साल भर बाद मेरी स्थिति ऐसी हो गई कि मैं आसानी से चल फिर भी नहीं सकता था। कमजोरी तथा बीमारी ने मेरे जीवन का आनन्द तथा प्रसन्नता समाप्त कर दी थी, एक दिन मैंने इसका जिक्र अपने एक मित्र से किया तो उन्होंने मुझे महेशानन्द जी से मिलने का उपाय सुझाया तथा उनसे सलाह लेने की राय बताई। मैंने जब महेशानन्दजी से मिलकर अपनी समस्या उनके सामने रखी तो उन्होंने मुझे अपने सामने बिठाकर एक स्तोत्र का पाठ किया और दस मिनट में ही मुझे अपूर्व मानसिक बल मिला।

लगभग एक महीने बाद मैं इतना अधिक ठीक हो गया था कि मैं आसानी से मील भर टहल सकता था। मेरे जीवन की जिन खुशियों का अन्त हो गया था, वे पुनः लौट आई थीं।

एक दिन जब मैंने महात्मा जी से उस स्तोत्र का रहस्य जानना चाहा तो उन्होंने मुझे बताया कि मैंने केवल मात्र राम रक्षा स्तोत्र का ही पाठ किया था। उन्होंने विस्तार से इसका अर्थ भी मुझे बताया, इसके बाद से 'राम रक्षा स्तोत्र' मेरे जीवन की पेटेन्ट दवाई बन चुकी है। जब भी मैं जीवन की किसी भी परेशानी से ग्रस्त होता हूँ तो मैं 'राम रक्षा स्तोत्र' का पाठ करने लग जाता हूँ, और एक पाठ से ही मुझे अपूर्व मानसिक बल मिलता है तथा एक सप्ताह के भीतर-भीतर मैं उस समस्या पर विजय प्राप्त कर लेता हूँ।

अब तो मैं स्वयं इस स्तोत्र का प्रयोग कई व्यक्तियों पर कर चुका हूँ, भूत-प्रेत भगाने से लेकर विष उतारने तथा बीमारियों से मुक्ति दिलाने से लेकर ऋण उतारने की बाधाओं में इसके पाठ की सलाह देता हूँ और वे सदैव इससे लाभ उठाते हैं, तथा सफलता प्राप्त करते हैं। इस स्तोत्र के एक-एक शब्द में अपूर्व शक्ति, साहस तथा अमूल्य गुण छिपे हुए हैं। इसके एक-एक शब्द में नई शक्ति है, जोश की नई क्षमताएँ हैं तथा बाधाओं पर विजय प्राप्त करने का अमोघ साधन है।

इसी प्रकार की एक चर्चा एक ध्वनि विज्ञानी मिस्टर रामानुजा से हुई तो उन्होंने बताया कि मंत्र में शब्दों का गुंफन ही अपने आप में महत्वपूर्ण है। स्तोत्र का प्रभाव या किसी मंत्र का प्रभाव इसलिये होता है कि उसके शब्दों का संयोजन अपने आप में विलक्षण होता है। उन्होंने बताया कि ध्वनि के माध्यम से कई असंभव कार्यों को संभव किया जा सकता है। युद्ध में बम के धमाके से आदमी बहरा हो जाता है, मकान की खिड़कियाँ टूट जाती हैं, तथा कई मकान भहरा करके नीचे गिर जाते हैं। अमेरिका में ध्वनि के प्रयोग से बड़े-बड़े तालाब खोद लिये जाते हैं तथा केवल मात्र, ध्वनि से बड़े-बड़े बांध तथा पहाड़ को इधर-उधर खिसकाया जाता है, उन्होंने बताया कि कई बार युद्ध में केवल बम की ध्वनि के आघात से व्यक्तियों को लकवा हो जाता है, उनके मुँह टेढ़े हो जाते हैं, नाड़ी संस्थान कार्य करना बन्द कर

देता है, गर्भवती स्त्रियों के गर्भ गिर जाते हैं, तथा हृदय रोग से पीड़ित व्यक्तियों का देहान्त हो जाता है। तेज आवाज से वायु मण्डल में तीव्र कम्पन्न पैदा होते हैं और जब वे कम्पन्न हमारे मस्तिष्क को स्पर्श करते हैं तो उसके दुष्प्रभाव से व्यक्ति पागल हो जाता है।

मंत्रों के प्रभाव के मूल में यही ध्वनि-विज्ञान कार्य करता है। मंत्रों के प्रत्येक अक्षरों का आपस में संबंध रहता है और उन अक्षरों के सम्बन्ध में एक विशेष ध्वनि का प्रादुर्भाव होता है और वही ध्वनि वायु-मण्डल में फैलकर इच्छित कार्य करने में सफल होती है।

'राम रक्षा स्तोत्र' के प्रभाव के मूल में भी यही ध्वनि कार्य करती है। इस स्तोत्र में शब्दों का संयोजन अपने आप में विलक्षण एवं अप्रतिम है, जिसकी वजह से एक विशेष ध्वनि का निर्माण होता है और उस ध्वनि के कम्पन बीमार के अचेतन मन में जाकर उसे साहस दृढ़ता एवं हिम्मत प्रदान करते हैं। इस आत्म बल से ही रोग दूर होते हैं तथा उसे आरोग्य, बल एवं शान्ति मिलती है। जो व्यक्ति जितनी ही पुष्टता से तथा विश्वास से इस स्तोत्र का पाठ करता है उसे उतनी ही जल्दी सफलता प्राप्त होती है। यह अपने आप में एक मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया है, और यह प्रक्रिया लाखों लोगों ने लाखों बार आजमाई है तथा उन्हें अपने कार्य में सफलता मिली है।

कई पुस्तकों तथा पत्र पत्रिकाओं में राम रक्षा स्तोत्र के फल के बारे में समाचार सुनने को मिलते रहते हैं। मेरे व्यक्तिगत अनुभव में भी सैकड़ों लोगों ने मुझे राम रक्षा स्तोत्र की सफलता के बारे में बताया। उनमें से कुछ संस्मरण नीचे दे रहा हूँ :

एक सज्जन को शराब की भयंकर लत लग गई थी और धीरे-धीरे यह आदत इतनी बलवान हो गई कि उसने अपना सारा धन इसके पीछे स्वाहा कर दिया, यही नहीं अपितु एक दिन ऐसा भी आया कि जब उसके पास पहनने के पूरे कपड़े तक भी नहीं थे, उसकी पत्नी बड़ी धर्मपरायण थी, और इस परेशानी को भी प्रभु का प्रसाद समझकर सन्तुष्ट रहती थी, पर जब स्थिति सीमा से बाहर हो गई तो उसने किसी महात्मा से इसका हल पूछा तो

महात्मा ने उसे शान्त चित्त से 'राम रक्षा स्तोत्र' का पाठ करने की सलाह दी और उसने उसी दिन से इस स्तोत्र का विधिपूर्वक पाठ करना प्रारंभ कर दिया।

कुछ ही दिनों बाद लोगों ने देखा कि वह व्यक्ति धीरे-धीरे सन्मार्ग पर आ रहा है और एक दिन उसने शराब की बोतल फोड़ कर यह प्रतिज्ञा कर ली कि आज से यदि मैं शराब पीऊँगा तो मेरे लिये गौ-मांस के बराबर होगा।

पता नहीं यह सद्बुद्धि उसे किस प्रकार से मिली, पर लोगों ने देखा कि उस दिन से उसने जो शराब छोड़ी तो वापस भूलकर भी उसने शराब को मुंह नहीं लगाया और आज वह व्यक्ति अत्यन्त सफल ग्रहस्थ-जीवन व्यतीत कर रहा है, उसकी पत्नी आज भी नियमपूर्वक राम रक्षा स्तोत्र का पाठ करती है और अपने सफल गृहस्थ-जीवन एवं पति के विचारों में परिवर्तन का श्रेय इस स्तोत्र को ही देती है।

आर० सी० मेहता एक सफल दिल्ली के प्रशासक हैं और उन्होंने अपने जीवन में कई खतरों का सामना केवल इस स्तोत्र के माध्यम से ही किया है।

एक बार वे वायुयान से यात्रा कर रहे थे, उन्होंने अपने अनुभव सुनाते हुए बताया कि जब मैं विमान में बैठा था कि अचानक वह विमान डगमगाने लगा और कुछ ही क्षणों बाद वह विमान आग के शोलों के रूप में बदल गया, जिस क्षण से वह विमान डगमगाने लगा उसी क्षण से यंत्रवत् मेरे मुंह से राम रक्षा स्तोत्र प्रारंभ हो गया था। एकदम ऐसा लगा कि जैसे मुझे किसी ने जोरों से धक्का देकर उछाल दिया हो। मैं जलते हुए विमान से लगभग ४० गज दूर पड़ा था, मेरे मुंह से उस समय भी अनवरत 'राम रक्षा स्तोत्र' का पाठ चल रहा था और मैंने जलते हुए मलबे को अपनी आंखों से देखा जिसमें केवल मैं ही एक यात्री जीवित बचा था, जिस प्रकार से उस विमान की दुर्घटना हुई थी उससे तो मेरा बचना असंभव सा ही था, पर राम रक्षा स्तोत्र के चमत्कारिक फल ने यहाँ पर भी मेरी प्राण रक्षा की।

जोधपुर में ही एक व्यक्ति एक अच्छे पद पर कार्य कर रहा था एक बार उसके खिलाफ कुछ चार्जेज या अभियोग लगाये गये और उसको नौकरी से हटा दिया गया। उन दिनों वह अधिकारी अत्यन्त परेशान था, उसने जब अपनी समस्या के बारे में मुझसे जिक्र किया तो मैंने उसे नित्य प्रातः-सायं राम रक्षा स्तोत्र के पाठ करने की सलाह दी। उसने उसी दिन से इसका पाठ शुरू कर दिया, और अगले ३० दिनों के भीतर-भीतर उसके खिलाफ जो अभियोग थे वे निर्मूल साबित हुए और उसे पुनः ससम्मान वह पद दिया गया, उसके बाद से राम रक्षा स्तोत्र उसके जीवन का अभिन्न अंग बन गया।

इन्दौर के आर० पी० सोनी ने मिलने पर मुझे अपने अनुभव बताते हुए कहा था कि मैं और कुछ नहीं जानता केवल राम रक्षा स्तोत्र का पाठ जानता हूँ और उसके प्रभाव से मैं आज अपने समाज में सम्माननीय स्थान प्राप्त किये हुए हूँ, यद्यपि मेरे जीवन में सैकड़ों परेशानियाँ और मुसीबतें आई हैं परन्तु मैंने एक दिन के लिये भी राम रक्षा स्तोत्र का पाठ नहीं छोड़ा, और आज मैं अधिकार पूर्ण स्वर से कहने को यह समर्थ हूँ कि मेरे जीवन में विपत्तियाँ और बाधाओं को टालने में इस स्तोत्र ने राम बाण की तरह काम किया।

उसने बताया कि सन् ६१ में जब अष्ट ग्रही योग था उन्हीं दिनों मेरा बच्चा सन्निपात में आ गया था। डाक्टर ने अपने हाथ झटक दिये थे, और कहा था अब संसार का कोई इंजेक्शन इसकी मृत्यु को नहीं टाल सकता, मैं दवाइयाँ तथा चिकित्सकों को प्रारम्भ से ही व्यर्थ समझता था, पर घर वालों की हठ के कारण ही मैंने उन्हें बुलाया था, जब डाक्टरों ने हाथ झटक लिये तो घर में कोहराम सा मच गया परन्तु उन कठिन क्षणों में भी मैं अडिग था और मुझे राम रक्षा स्तोत्र पर पूरा भरोसा था।

मैं उसके सिरहाने जाकर सस्वर राम रक्षा स्तोत्र का पाठ करने लग गया, मेरे सम्बन्धियों ने मुझे मूर्ख समझा और कहा

यह समय अत्यन्त कीमती है, इसके एक-एक क्षण का उपयोग करना चाहिए। तुम्हें, एक नहीं तो दूसरे अथवा तीसरे डाक्टर से परामर्श करना चाहिए, जबकि तुम इस व्यर्थ के स्तोत्र् को लेकर अपना समय बरबाद कर रहे हो।

मैं मौन रहा, और कहा—जो कुछ करना है तुम करो, मैं अब यहाँ से तब तक नहीं बूठूंगा जब तक इस बच्चे की सन्निपात अवस्था सुधर नहीं जाएगी, मैंने उसके सिरहाने सुगंधित अगरबत्ती लगा दी, और राम रक्षा स्तोत्र का पाठ करने लगा। मेरे मन में पूर्णतः शान्ति थी और भगवान श्री रामचन्द्र का पूरा-पूरा भरोसा था।

इस बीच मेरे बड़े भाई ने टेलीफोन से दो बड़े डाक्टरों को भी बुलाया मगर उन्होंने भी बताया कि अब कुछ नहीं किया जा सकता। वे दोनों डाक्टर भी अपनी-अपनी फीस लेकर चले गये।

मेरा स्तोत्र पाठ अनवरत रूप से चालू था। मैंने करीब ग्यारह पाठ पूर्ण किये थे कि धीरे-धीरे उसके शरीर की उन्मादावस्था ठीक होने लगी और दूसरे दिन सुबह तक पूर्ण स्वस्थ हो गया।

कलकत्ते में एक बार भयानक प्लेग फैल गया था। श्री हरीरामजी गोयनका अत्यन्त ही धार्मिक प्रवृत्ति के व्यक्ति थे। उनका सारा जीवन ईश्वर-चिन्तन एवं धार्मिक कार्यों में ही व्यतीत होता था। कलकत्ते में अधिकतर धार्मिक संस्थान गोयनका के वजह से ही चलते थे। संयोगवश उस प्लेग की चपेट में गोयनका जी भी आ गये, उन्हें तेज ज्वर चढ़ आया तथा दोनों ओर दो गिल्टियाँ निकल आईं, घर वाले अत्यन्त चिन्तित हुए और उस समय के कलकत्ता के प्रसिद्ध डाक्टर प्रभुपद बाबू को बुलाया, उन दिनों प्रभुपद बाबू कलकत्ता में ईश्वर के नाम से जाने जाते थे। गोयनका जी के परिवार से उनका घरेलू सम्बन्ध था, टेलीफोन करने पर वे दौड़ आये और जब उन्होंने गोयनका जी को देखा तो उनके चेहरे पर विषाद की रेखाएँ खिच गईं। उन्होंने स्पष्ट शब्दों में कहा कि प्लेग का आक्रमण इतना भयानक हुआ है कि

अब श्री गोयनका किसी प्रकार से नहीं बच सकते, यदि यह रात निकाल दें तो निकाल दें, परन्तु मेरे चिकित्सा-अनुभव के आधार पर यह रात इनकी अन्तिम रात्रि होगी और यह कहकर वे उल्टे पाँव लौट गये।

गोयनका जी यह सब सुन रहे थे, जब उनको पता चला कि आज की रात मेरे जीवन की अन्तिम रात है, तो उन्होंने नौकर को कहकर शुद्ध गंगाजल से सारा कमरा धुलवाया, स्वयं स्नान किया और परिवार वालों के मना करने पर भी वे फर्श पर आसन बिछाकर बैठ गये, और अन्दर से दरवाजा बन्द कर दिया।

रात्रि को उन्होंने भगवान श्रीराम का एक बड़ा सा चित्र अपने सामने रख दिया और अनवरत रूप से 'राम रक्षा स्तोत्र' का पाठ करने लगे, उन्होंने सोच लिया कि मुझे मरना तो है ही, फिर भी सांसारिक-विषयों में उलझकर अपने प्राण क्यों विसर्जित करूँ। सारी रात वे राम रक्षा स्तोत्र का पाठ करते रहे रात्रि को लगभग ५ बजे उनको महसूस हुआ कि उनके शरीर में प्लेग की गिल्टियाँ दब गई हैं, सुबह होते-होते वे अपने आपको पूर्ण स्वस्थ अनुभव करने लगे, ज्वर जाता रहा तथा शारीरिक तथा मानसिक रूप से अपने आपको काफी तरोताजा अनुभव करने लगे। प्रातः उठते ही उन्होंने नौकर को बुलाकर कहा मेरी मृत्यु नहीं हुई है, तुम अभी २५ ब्राह्मणों को बुलाकर लाओ, मुझे ब्राह्मण भोजन कराना है।

लगभग ११ बजे डाक्टर प्रभुपद आये उन्होंने तो यह सोच ही लिया था कि गोयनका जी का दाह संस्कार हो गया होगा और सात्वंना देने के लिये घर जाना जरूरी था। मगर डाक्टर साहब जब उनके घर पहुँचे तो उन्होंने देखा कि गोयनका जी लड्डू तथा पूड़ी खा रहे हैं और लगभग पूर्ण स्वस्थ से दिखाई दे रहे हैं।

डाक्टर साहब अत्यन्त आश्चर्यचकित हुए, उन्होंने पूछा तुम अभी तक जीवित कैसे हो? और यह लड्डू तथा इतना गरिष्ठ भोजन करने की सलाह तुम्हें किसने दी?

गोयन जी ने उत्तर दिया जिन्होंने मुझे स्वस्थ किया है उनकी आज्ञानुसार ही मैं यह भोजन भी ग्रहण कर रहा हूँ।

इस घटना के बाद लगभग ३० वर्ष तक गोयनका जी और

जीवित रहे तथा जब तक जीवित रहे उन्होंने राम रक्षा स्तोत्र का पाठ करना नहीं छोड़ा ।

स्वामी कृष्णानन्द जी का अनुभव भी अपने आप में अद्भुत है । एक बार उन्होंने बताया कि मैं सन् १९३७-३८ में हिमालय की तरफ गया था । कश्मीर में श्रीनगर से आगे जब मैं अमरनाथ की तरफ बढ़ रहा था तो मार्ग में आस्थानमर्ग की चढ़ाई आती है, इसे हत्यारा तालाब भी कहते हैं । घूमते-घूमते जब मैं इस स्थान पर आया तब तक सांझ घिर आई थी, उस जगह के लिये मैं सर्वथा अपरिचित था, तथा उस भयंकर शीत में विश्राम के लिये मुझे कोई स्थान दिखाई नहीं दे रहा था, मेरा हृदय आशंकित हो उठा, और इधर-उधर देखा परन्तु ऐसा लगा जैसे मैं रास्ता भूल गया हूं और चारों तरफ अंधकार घिरता जा रहा था ।

एक प्रकार से मेरी हिम्मत जवाब दे गई, पर उसी समय मन में कुछ ऐसा अनुभव हुआ कि इस विपत्तिकाल में केवल राम रक्षा स्तोत्र ही मेरी रक्षा कर सकता है, और कोई उपाय नहीं है । मैं वहीं पर रुक गया और आगे मार्ग-दर्शन के लिये जोर-जोर से राम रक्षा स्तोत्र का पाठ करने लग गया ।

लगभग २५-३० मिनट बीते होंगे और मैंने राम रक्षा स्तोत्र के २-३ पाठ ही किये थे कि मुझे उस बियावान जंगल में और अंधेरी रात में, एक तरफ से टार्च का प्रकाश आता दिखाई दिया, ऐसा लग रहा था जैसे वह टार्च का प्रकाश मुझे संकेत से उस दिशा की ओर आने के लिये प्रेरित कर रहा हो, मैं उठा और जिधर से टार्च का प्रकाश आ रहा था उस तरफ अपने पांव बढ़ा दिया, ज्यों-ज्यों मैं आगे बढ़ता जाता, त्यों-त्यों वह प्रकाश भी आगे बढ़ता जाता, और मुझे उस तरफ चलने का संकेत करता जाता ।

उस अंधेरी रात में लगभग एक मील चलने के बाद मुझे डाक बंगला दिखाई दिया, जो कि उस जंगल में केवल मात्र वही आश्रय स्थल था, जब मैं डाक बंगला के पास पहुँचा तो मुझे वह टार्च का प्रकाश दिखाई देना बन्द हो गया ।

डाक-बंगले में वहां का चौकीदार था उससे मैंने प्रार्थना की तो उसने मुझे सोने के लिये एक कमरा दे दिया । मैंने उस चौकीदार से पूछा भी, कि क्या इस डाक बंगले के आस-पास कोई और

लोग भी रहते हैं तो उसने उत्तर दिया कि इस डाक बंगले के चारों ओर १०-१२ मील तक न तो कोई घर है और न कोई व्यक्ति ही रहता है । जब मैंने उसे टार्च के प्रकाश के बारे में बताया तो उसने कहा यहां से तो किसी ने टार्च का प्रकाश डाला नहीं, और आस-पास भी कोई व्यक्ति हो, ऐसा प्रतीत नहीं होता । अस्तु ।

रात भर मैं प्रभु का धन्यवाद कर आराम से सोया । सुबह उठने पर चौकीदार से पता चला कि रात को भयंकर बर्फीला तूफान आया था, और लगभग १२-१२ इंच बर्फ चारों तरफ गिर चुकी है । मैं यह सुनकर सिहर उठा और सोचा कि यदि मैं रास्ता भूलकर जंगल में ही पड़ा रहता तो अब तक तो मैं कभी का समाप्त हो चुका होता, पर प्रभु के हाथ लम्बे हैं और उसने मुझे बचा लिया ।

स्वामी जी मुझे अपना यह अनुभव बताते हुए बोले कि उस दिन से मुझ पर जब-जब भी कोई विपत्ति आई है तो मैंने केवल राम रक्षा स्तोत्र का ही पाठ किया है, और इस पाठ के बाद मेरी वह समस्या स्वतः ही सुलझती चली गई है ।

मुझे सन् १९४७-४८ का जमाना याद है उन दिनों जब कि भारत-पाकिस्तान के टुकड़े हो गये थे, तथा चारों तरफ मार-काट मची हुई थी, तब मैं पाकिस्तान में था, हमारे घर के पास ही एक सोनार रहते थे जिनका नाम द्वारिका प्रसाद था । उसने एक बार बताया था कि जब मुसलमानों ने मेरे घर पर आक्रमण कर दिया तब मैंने यह अच्छी तरह से सोच लिया था कि अब मुझे संसार की कोई भी ताकत नहीं बचा सकती । मैंने बाहर से दरवाजा बन्द कर दिये थे ? अन्दर मैं, मेरी पत्नी तथा मेरी जवान पुत्री थी । बाहर से धर्मान्ध आततायी दरवाजा तोड़ने में व्यस्त थे, और मैं मन ही मन डर रहा था कि अभी यह आततायी कमरे में घुस पड़ेंगे और मेरी बच्ची का शील-भंग मेरे सामने ही हो जायगा और इसके अलावा भी न मालूम किस-किस प्रकार की विपत्तियों का सामना करना पड़ेगा ।

उसी क्षण मेरे हृदय में जैसे प्रकाश सा हुआ, मन के एक कोने से आवाज आई आज तक जब श्रीराम ने तुम्हारी मदद की है तो आज वे कैसे तुम्हें भूल सकते है ?

मैं पूजा गृह में चला गया और पूरा परिवार मेरे पास आकर बैठ गया, मैं आखें बन्द किये लगातार राम रक्षा स्तोत्र का पाठ करने लगा मन में यह निश्चय कर लिया था कि अब जो भी होगा देखा जायगा, मगर पाठ करते-करते लगभग घण्टा बीत गया और कोई आततायी अन्दर नहीं घुसा तो मुझे आश्चर्य हुआ, पहले तो मैंने चुपचाप कान लगाकर सुनने की चेष्टा की परन्तु जब बाहर किसी प्रकार की हलचल न सुनाई दी तो मैंने दरवाजा धीरे से खोला और बाहर झांका तो मुझे एक भी व्यक्ति बाहर दिखाई नहीं दिया, पता नहीं श्री राम ने किस प्रकार से मेरी रक्षा की और किस भय से वे आततायी वहाँ से भाग गये । मैं कह नहीं सकता परन्तु उस दिन मेरा बाल भी बांका नहीं हुआ ।

उसी रात को हम लोगों ने किराये पर ऊँट किये और भारत पाक सीमा से होकर जैसलमेर पहुँचे, यदि मैं उस दिन राम रक्षा स्तोत्र का पाठ नहीं करता तो मुझे कोई भी बचा नहीं सकता था ।

२१-४-७० की बात है, मेरी माता जी भयानक रूप से बीमार पड़ गई । यद्यपि वे पिछले काफी वर्षों से बीमार चल रही थी और उन्हें गुर्दों की बीमारी थी, अनेक इलाज करवाये तथा तरह-तरह के वैद्यों और डाक्टरों से उपचार भी करवाया, मगर रोग-नियंत्रण में आ ही नहीं रहा था ।

होता यह कि थोड़ा बहुत इलाज कराने पर वे स्वस्थ हो जाती पर तभी पथ्यापथ्य का ध्यान न रखती और यह बीमारी पुनः उन्हें दबोच लेती ।

२१ अप्रैल की घटना है, सुबह जब मैं चाय लेकर उनके पास पहुँचा तब वे लगभग संज्ञा शून्य सी बिस्तर पर पड़ी थी, मैं घबरा गया, उनकी नाड़ी देखी जो अत्यन्त मंद गति से चल रही थी, उन्हें हिलाया-डुलाया तो उनके शरीर में किसी प्रकार की हरकत मुझे

दिखाई नहीं दी ।

मैं चिन्तित हो उठा और उसी समय अपने लड़के को भेजकर वहाँ के प्रसिद्ध चिकित्सक प्यारे लाल जी को बुलवाया उन्होंने आकर जब उनकी परीक्षा की तो पता चला कि यह संज्ञा शून्य अवस्था में तीन चार घण्टे से चल रही है और नाड़ी स्पन्दन इतना कमजोर हो रहा है कि संभवतः रोगी ३-४ घंटों से ज्यादा जीवित नहीं रह सकता, मैंने वैद्य जी से प्रार्थना की कि क्या इन्हें शहर के बड़े अस्पताल में ले जाना ठीक रहेगा ?

उन्होंने उत्तर दिया कि मेरी राय में वहाँ ले जाना अपने आप में कोई अर्थ नहीं रखता, क्योंकि ऐसा करने से मार्ग में ही इनके प्राण-विसर्जन होने का खतरा है और जिस प्रकार से नाड़ी-संस्थान कार्य कर रहा है उस हिसाब से माँ अब ३-४ घंटों से ज्यादा जीवित नहीं रह सकती, इतना कहकर वैद्य जी अपने घर लौट गये, मैंने आंगन पर चौका दिया तथा माताजी को उस पर लिटा दिया, उसके सारे शरीर को गंगाजल से धोया, और पास में श्री रामचन्द्र जी की बड़ी सी तस्वीर लाकर रख दी, तथा उसके सामने घृत का दीपक लगा दिया एवं सुगन्धित अगरबत्ती भी जला दी, इसके बाद मैं सस्वर राम रक्षा स्तोत्र का पाठ करने लग गया ।

इस प्रकार पाठ करते-करते लगभग तीन घण्टे बीत गए तो मैंने देखा कि माँ ने आंखें खोल ली है, और मुझसे पुनः पलंग पर सोने को कहने लगी । मैंने उन्हें वहाँ से उठाकर पलंग पर लेटाया, तो उन्होंने बताया कि मुझे कुछ ऐसा प्रतीत हुआ कि जैसे मैं इस देह से मुक्त होकर कहीं दूर जा रही हूँ । परन्तु इसके कुछ ही समय बाद पीछे से श्री राम मुझे वापस बुला रहे है और ज्यों ही मैं पुनः शरीर में आई त्यों ही मेरी आंख खुल गई ।

राम रक्षा स्तोत्र की अनन्य शक्ति पर मैं श्रद्धा विनीत हो गया और एक प्रकार से इस स्तोत्र के कारण ही माता को पुनंजन्म मिला ।

मेरी ऐसी धारणा है कि असंभव कार्य में भी राम रक्षा स्तोत्र अत्यन्त सहायक तथा सिद्धिप्रद रहता है, इसके बाद भी अनेक बार विपत्तियां आई, पर राम रक्षा स्तोत्र ने हमेशा मेरी सहायता की ।

राम रक्षा स्तोत्रम्
विनियोगः

अस्य श्रीराम रक्षा स्तोत्रमन्त्रस्य बुधकौशिक ऋषिः श्रीसीता-रामचन्द्रो देवता अनुष्टम् छन्दः सीता शक्तिः श्रीमान् हनुमान् कीलक श्रीरामचन्द्रप्रीत्यर्थे रामरक्षा स्तोत्रजपे विनियोगः।

ध्यानम्

ध्यायेदाजानुबाहुं धृतशरधनुषं बद्धपद्मासनस्थं।
पीतं वासोवासानं नवकमलदलस्पर्धि नेत्रं प्रसन्नम्।
वामाङ्कारूढसीतामुखकमलमिलल्लोचनं नीरदाभं।
नानालंकारदीप्तं दधतमुरुजटामण्डलं रामचन्द्रम्॥

स्तोत्रम्

चरितं रघुनाथस्य शतकोटिप्रविस्तरम्।
एकैकमक्षरं पुंसां महापातकनाशनम्॥१॥
ध्यात्वा नीलोत्पलश्यामं रामं राजीवलोचनम्।
जानकीलक्ष्मणोपेतं जटामुकुटमण्डितम्॥२॥
सासितूणधनुर्बाणपाणिं नक्तंचरान्तकम्।
स्वलीलया जगत्त्रातुमाविर्भूतमजं विभुम॥३॥
रामरक्षां पठेत्प्राज्ञः पापघ्नीं सर्वकामदाम्।
शिरो मे राघवः पातु भालं दशरथात्मजः॥४॥
कौसल्येयो दृशो पातु विश्वामित्रप्रियः श्रुती।
घ्राणं पातु मखत्राता मुखं सौमित्रिवत्सलः॥५॥
जिह्वां विद्यानिधिः पातु कण्ठं भरतवन्दितः।
स्कन्धौ दिव्यायुधः पातु भुजो भग्नेशकार्मुकः॥६॥
करौ सीतापितिः पातु हृदयं जामदग्न्यजित्।
मध्यं पातु खरध्वंसी नाभिं जाम्बवदाश्रयः॥७॥
सुग्रीवेशः कटी पातु सक्थिनी हनुमत्प्रभुः।
ऊरू रघूत्तमः पातु रक्ष कुलविनाशकृत॥८॥

जानुनी सेतुकृत्पातु जङ्घे दशमुखान्तकः।
पादौ विभीषणश्रीदः पातु रामोऽखिलं वपुः॥९॥
एतां रामबलोपेतां रक्षां यः सुकृती पठेत्।
सचिरायुः सुखी पुत्री विजयी विनयी भवेत्॥१०॥
पातालभूतलव्योमचारिणश्छद्मचारिणः।
न द्रष्टुमपि शक्तास्ते रक्षितं रामनामभिः॥११॥
रामेति रामभद्रेति रामचन्द्रेति वा स्मरन्।
नरो न लिप्यते पापैर्भुक्तिं च विन्दति॥१२॥
जगज्जैत्रैकमन्त्रेण रामनाम्नाभिरक्षितम्।
यः कण्ठे धारयेत्तस्य करस्थाः सर्वसिद्धयः॥१३॥
वज्रपंजरनामेदं यो रामकवचं स्मरेत्।
अव्याहताज्ञः सर्वत्र लभते जयमंगलम्॥१४॥
आदिष्टवान्यथा स्वप्ने रामरक्षमिमां हरः।
तथा लिखितवान्प्रातः प्रबुद्धो बुधकौशिकः॥१५॥
आरामः कल्पवृक्षाणां विरामः सकलापदाम्।
अभिरामस्त्रिलोकानां रामः श्रीमान्स नः प्रभुः॥१६॥
तरुणो रूपसम्पन्नौ सुकुमारौ महाबलौ।
पुण्डरीकविशालाक्षौ चीरकृष्णाजिनाम्बरौ॥१७॥
फलमूलाशिनौ दान्तौ तापसौ ब्रह्मचारिणौ।
पुत्रौ दशरथस्यैतौ भ्रातरौ रामलक्ष्मणौ॥१८॥
शरण्यौ सर्वसत्त्वानां श्रेष्ठौ सर्वधनुष्मताम्।
रक्षः कुलनिहन्तारौ त्रायेतां नो रघूत्तमौ॥१९॥
आत्तसज्जधनुषाविषुस्पृशावक्षयाशुगनिषंगसंगिनौ।
रक्षणाय मम रामलक्ष्मणावग्रतः पथि सदैव गच्छताम्॥२०॥
संनद्धः कवची खंगी चापबाणधरो युवा।
गच्छन्मनोरथान्नश्च रामः पातु सलक्ष्मणः॥२१॥
रामो दाशरथिः शूरो लक्ष्मणानुचरो बली।
काकुत्स्थः पुरुषःपूर्णः कौसल्येयोरघूत्तमः॥२२॥
वेदान्तवेद्यो यज्ञेशः पुराणपुरुषोत्तमः।
जानकीवल्लभः श्रीमानप्रमेयपराक्रम:॥२३॥
इत्येतानि जपन्नित्यं मद्भक्तः श्रद्धयान्वितः।
अश्वमेधाधिकं पुण्यं सम्प्राप्नोति न संशय।॥२४॥

रामं दूर्वादलश्यामं पद्माक्षं पीतवाससम् ।
स्तुवन्ति नामभिर्दिव्यैर्न ते संसारिणो नराः ॥२५॥
रामं लक्ष्मणपूर्वजं सीतापतिं सुन्दरं ।
काकुत्स्थं करुणार्णवं गुणनिधिं विप्रप्रियं धार्मिकम् ।
राजेन्द्रं सत्यसंधं दशरथतनयं श्यामलं शान्तमूर्तिं ।
वन्दे लोकाभिरामं रघुकुलतिलकं राघवं रावणारिम् ॥२६॥
रामाय रामभद्राय रामचन्द्राय वेधसे ।
रघुनाथाय नाथाय सीतायाः पतये नमः ॥२७॥
श्रीराम राम रघुनन्दन राम राम
श्रीराम राम भरताग्रज राम राम ।
श्रीराम राम रणकर्कश राम राम
श्रीराम राम शरणं भव राम राम ॥२८॥
श्रीरामचन्द्रचरणौ मनसा स्मरामि ।
श्रीरामचन्द्रचरणौ वचसा गृणामि ।
श्रीरामचन्द्रचरणौ शिरसा नमामि
श्रीरामचन्द्रचरणौ शरणं प्रपद्ये ॥२९॥
माता रामो मत्पिता रामचन्द्रः
स्वामी रामो मत्सखा रामचन्द्रः ।
सर्वस्वं मे रामचन्द्रो दयालु ॥
नान्यं जाने नैव जाने न जाने ॥३०॥
दक्षिणे लक्ष्मणो यस्य वामे च जनकात्मजा ।
पुरतो मारुतिर्यस्य तं वन्दे रघुनन्दनम् ॥३१॥
लोकाभिरामं रणरंगधीरं
राजीवनेत्रं रघुवंशनाथम् ।
कारुण्यरूपं करुणाकरं तं
श्रीरामचन्द्रं शरणं प्रपद्ये ॥३२॥
मनोजवं मारुततुल्यवेगं
जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम् ।
वातात्मजं वानरयूथमुख्यं ।
श्रीरामदूतं शरणंप्रपद्ये ॥३३॥
कूजन्तं रामरामेति मधुरं मधुराक्षरम् ।
आरुह्य कविताशाखां वन्दे वाल्मीकिकोकिलम् ॥३४॥

आपदामपहर्तारं दातारं सर्वसम्पदाम् ।
लोकाभिरामं श्रीरामं भूयो भूयो नमाम्यहम् ॥३५॥
भर्जनं भवबीजानामर्जनं सुखसम्पदाम् ।
तर्जनं यमदूतानां रामरामेति गर्जनम् ॥३६॥
रामो राजमणिः सदा विजयते रामं रमेशं भजे
रामेणाभिहता निशाचरचमू रामाय तस्मै नमः ।
रामान्नास्ति परायणं परतरं रामस्य दासोऽस्म्यहं
रामे चित्तलयः सदा भवतु मे भो राम मामुद्धर ॥३७॥
राम रामेति रामेति रमे रामे मनोरमे ।
सहस्रनाम तत्तुल्यं रामनाम वरानने ॥३८॥

——०——

गजेन्द्र मोक्ष

गजेन्द्र मोक्ष स्तुति सभी स्तुतियों से अत्यन्त श्रेष्ठ एवं प्रभावकारी मानी गई है। महामना मालवीय इसके परम भक्त थे। एक बार हनुमान प्रसाद जी पोद्दार से चर्चा चलने पर उन्होंने बताया था कि जब-जब भी मेरे जीवन पर समस्याएँ संकट आए हैं, या हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना के समय आर्थिक संकट से मैं परेशान हुआ हूँ तब-तब गजेन्द्र मोक्ष का मैंने पाठ किया है और इससे मैंने उस विपत्ति से छुटकारा पाया है।

एक बार मालवीय जी का पुत्र अत्यन्त बीमार पड़ा तो उन्होंने तार द्वारा मालवीय जी को सूचना दी कि मेरी तबीयत ठीक नहीं है, उन दिनों मालवीय जी किसी ऐसे कार्य से उलझे हुए थे कि चाह कर भी उधर नहीं जा सकते थे, उन्होंने पुनः अपने पुत्र को एक लम्बा पत्र लिखते हुए कहा कि तुम्हें अपने स्वास्थ्य के बारे में चिन्ता करने की कोई आवश्यकता नहीं है, मैंने तुम्हें गजेन्द्र मोक्ष के समान अद्भुत औषधि दी है तो फिर तुम मेरी उस औषधि का सेवन क्यों नहीं करते ?

पुत्र ने गजेन्द्र मोक्ष का पाठ किया और कुछ ही दिनों में वह उस भयानक रोग से बच गया।

एक बार जब मालवीय जी वाराणसी में थे तो एक महात्मा उनसे मिलने के लिये उनके घर गये और पूछा कि आप गृहस्थ होते हुए भी परम तपस्वी कैसे हैं ? वह कौन-सा मंत्र आपके पास है जिससे कि आप इस गृहस्थी रूपी कीचड़ में भी कमलवत् खिले रहते हैं।

मालवीय जी ने उत्तर दिया, आज मैं पहली बार आपको इस रहस्य की बात बताता हूँ। मेरी माता ने मुझे इस अद्भुत मंत्र की शिक्षा दी थी और कहा था कि जब भी तुझ पर संकट आए या किसी प्रकार की परेशानी महसूस हो तब तुम इसी मंत्र-राज

का उपयोग करना।

स्वामी जी काफी उतावले हो गए, उन्होंने निवेदन किया मालवीय जी ! कृपा करके आप मुझे भी वह मंत्र बताए, जिससे कि मैं उसका समुचित उपयोग कर सकूँ।

मालवीय जी ने उत्तर दिया वास्तव में यह मंत्र अपने आपमें अद्भुत है, मेरा जीवन बाधाओं और समस्याओं का घर है। शायद ही कोई ऐसा दिन बीतता होगा जिस दिन मेरे सामने नई समस्या नहीं आई हो मगर जब भी समस्या मेरे सामने आती है तो मैं एक क्षण के लिये भी हिचकिचाता नहीं हूँ क्योंकि मैं जानता हूँ कि मेरे पास मेरी पूज्य माता जी द्वारा दिया हुआ एक ऐसा अमोघ मंत्र है जो इस विपत्ति को चुटकी बजाते ही दूर कर देगा। और महात्मा जी ! मेरे जीवन में जब-जब भी विपत्ति या कोई समस्या आई है, तभी मैंने इस मंत्र का स्मरण किया है और आज तक भी इस मंत्र का प्रताप व्यर्थ नहीं गया।

महात्मा जी अत्यन्त उतावले हो गये उनके प्रत्येक शब्द से आग्रह टपक रहा था, उन्होंने कहा मालवीय जी मैं वह अद्भुत मंत्र आपसे अवश्य सीखना चाहूंगा मुझे विश्वास है कि आप मेरी इस प्रार्थना को ठुकराएंगे नहीं।

मालवीय जी ने अन्दर से गजेन्द्र मोक्ष की पुस्तक लाकर उन्हें दी और कहा—यही वह अद्भुत एवं अमोघ मंत्र है, जिसकी वजह से मैं आज तक अपने प्रत्येक कार्य में सफल होता आया हूँ, यद्यपि मैंने अपने जीवन में अन्य कई स्तोत्रों का पाठ किया है, उसका प्रभाव देखा है, परन्तु गजेंद्र मोक्ष में एक विशेषता है, कि इसका प्रभाव तुरन्त होता है और अपने आप से अद्भुत एवं पूर्ण होता है, मेरी माँ ने मुझे जो अमोघ मंत्र दिया था, वही मैंने आपके सामने रखा है। और आप भी श्रद्धा से यदि इसका पाठ करेंगे तो निश्चय ही आप अपने प्रत्येक कार्य में पूर्ण सफलता प्राप्त कर सकेंगे।

वास्तव में दो प्रकार के गजेन्द्र मोक्ष पाठ मिलते हैं। एक पाठ वामन पुराण के अन्तर्गत गजेन्द्र मोक्ष अध्याय से लिया गया है, जो कि पूर्णतः अनुकूल है। इसके अतिरिक्त दूसरा श्री मद् भागवत् में से लिया हुआ गजेन्द्र मोक्ष पाठ है, यद्यपि ये दोनों ही पाठ अपने आप में पूर्णतः अनुकूल हैं, पर महामना मालवीय श्री-

मद् भागवत् के अष्टम स्कन्ध में द्वितीय अध्याय के अन्तर्गत आया हुआ गजेन्द्र मोक्ष पाठ को ही फलप्रद समझते थे।

मेरी भी ऐसी धारणा है कि श्रीमद् भागवत्तान्तर्गत गजेन्द्र मोक्ष पाठ ज्यादा अनुकूल तथा सिद्धिप्रद है।

मुझे इस स्तोत्र के प्रभाव से संबंधित कई आख्यान सुनने को मिले हैं, और कई व्यक्तियों से इसकी सिद्धि के बारे में भी जानने को प्राप्त हुआ है जयपुर में एक बार इस स्तोत्र की परीक्षा का ऐसा ही अवसर आ गया। मेरे परिचित बन्धु श्री हरीराम जी के पुत्र आई० ए० एस० की परीक्षा दे रहे थे, दूसरे ही दिन सुबह उनका पेपर था और उससे एक दिन पहले ही उन्हें तेज बुखार चढ़ आया था, बुखार के साथ-साथ तेज सिर दर्द तथा खांसी भी आई थी, ऐसी स्थिति में परीक्षा देना संभव भी नहीं था, और यदि परीक्षा दी भी जाती तो उसके लिये भली प्रकार तैयारी नहीं हो सकती थी।

श्री हरीराम जी ने मेरे सामने इस समस्या को रखा, उन्होंने बताया कि डाक्टरों का इन्जेक्शन देने से बुखार तो टूट जायगा पर इससे कमजोरी इतनी अधिक बढ़ जायगी कि यह शान्त चित्त से परीक्षा नहीं लेने पाएगा, मैंने उन्हें बताया कि इस समय और कोई उपाय नहीं है, यदि वह लड़का शान्त चित्त से मात्र गजेन्द्र, मोक्ष के ११ पाठ करले तो मुझे विश्वास है कि वह परीक्षा में अवश्य ही सफलता प्राप्त कर सकेगा। मैं श्री हरिराम जी के साथ उनके घर भी गया और उनके पुत्र से यह सारी बात बताई तथा गजेन्द्र मोक्ष के पाठ की विधि भी उसे समझाई।

उसने मेरी बात तुरन्त स्वीकार कर ली और उसी समय हाथ पैर धोकर पूजा-कक्ष में आसन पर बैठ गया, तथा गजेन्द्र मोक्ष का पाठ करने लग गया।

शाम को लगभग सात-आठ बजे उसने ऐसा अनुभव किया जैसे वह पूर्णतः स्वस्थ है तथा बुखार व खांसी का नाम तक नहीं है, रात भर उसने परीक्षा की तैयारी की और दूसरे दिन प्रसन्न चित्त से आई० ए० एस० की परीक्षा दी और इस परीक्षा में पूर्णतः सफल भी रहा।

———

लखनऊ के मंगल प्रासद जी ने भी इस बारे में मुझे अपना अनुभव बताया था कि जब अधिकारियों के षड्यंत्र से उन्हें बैंक की नौकरी से अलग कर दिया गया और उन पर झूठे चार्जेज लगाये गये, तो उन्होंने और किसी सिफारिश या अन्य किसी कार्य का आश्रय नहीं लिया, उन्होंने यह निश्चय कर लिया कि मेरी विपत्ति का निवारण गजेन्द्र मोक्ष ही कर सकता है दूसरा कोई उपाय इसके लिये अनुकूल नहीं है।

वे घर आये, और दूसरे दिन से उन्होंने नित्य ११ पाठ करने का प्रण ले लिया। श्रीकृष्ण की मूर्ति के सामने श्रीमद् भागवत् के अन्तर्गत आये हुए गजेन्द्र मोक्ष के पाठ का क्रम प्रारम्भ हो गया।

उन्होंने बताया कि मात्र २१ दिन में ही मेरे विरुद्ध जो अभियोग लगाये गये थे वे निर्मूल साबित हुए और मेरे व्यवहार को उचित मानते हुए मुझे अतिरिक्त वेतन वृद्धि देकर स-सम्मान उसी स्थान पर नियुक्त किया जबकि मैंने इसके लिये न तो किसी अधिकारी को कहा था और न किसी प्रकार की सिफारिश ही करवायी थी। इन २१ दिनों में गृहस्थी के कार्यों के अतिरिक्त घर से बाहर भी नहीं निकला था।

उन्होंने अपने अनुभव बताते हुए कहा था कि आज मैं सभी दृष्टियों से पूर्णतः सुखी और अपने आपको सफल मानता हूँ, मेरे जीवन का एकमात्र सहारा गजेन्द्र मोक्ष स्तुति ही है और मैंने कभी भी अपने जीवन में किसी प्रकार की असफलता का सामना नहीं किया है।

——o——

एक बार मैं गीता भवन, ऋषि केश सत्संग में गया हुआ था मेरे साथ प्रद्युम्न कुमार जी भी थे जो कि श्रेष्ठ व्यवसायी एवं धर्मात्मा व्यक्ति हैं, प्रति वर्ष वे गीता भवन सत्संग के लिये जाते हैं।

गीता भवन गये मुश्किल से सप्ताह भर बीता होगा कि घर से उनके बच्चे की सख्त बीमारी का तार मिला, उसमें लिखा हुआ था बच्चा मृत्यु के निकट है, तुरन्त घर आओ।

मैंने वह तार पढ़ा, प्रद्युम्न कुमार जी ने मुझसे पूछा कि क्या मुझे आज ही घर रवाना हो जाना चाहिए, उसके दिल में अफसोस इस बात का था कि इस बार वे सत्संग का पूरा लाभ नहीं उठा सकेंगे।

मैंने उन्हें परामर्श दिया कि अभी तार मिला है, आज की रात यहां रुक जाइये सुबह घर से टेलिफोन कर वास्तविकता जान लेंगे, और तभी आगे के लिये आवश्यक कदम उठायेंगे, इसके साथ ही मैंने उनसे आग्रह किया कि आज रात भर श्रीकृष्ण मन्दिर में हम दोनों अनवरत गजेन्द्र मोक्ष का पाठ करेंगे।

वे तैयार हो गये और उन्होंने अपनी यात्रा के बारे में भावी कार्यक्रम मुझ पर छोड़ दिया। सायंकाल श्रीगंगा में स्नान कर हम दोनों श्रीकृष्ण मन्दिर में बैठ गये और रात भर गजेन्द्र मोक्ष का पाठ करते रहे, इस बीच हमने न तो किसी प्रकार की कोई बातचीत की थी और न किसी प्रकार का कोई व्यवधान ही आया, सुबह लगभग ८ बजे हम में से प्रत्येक ने १०८ पाठ पूरे कर लिये थे।

प्रातः हमने घर टेलिफोन लगाया तो वहाँ से समाचार मिला कि बच्चा स्वस्थ है और यहां सभी इस बात के लिये आश्चर्य कर रहे हैं कि कल सायंकाल तक बच्चा भयानक रूप से बीमार था, पर आज काफी स्वस्थ है, ऐसी स्थिति में घर आना कोई आवश्यक नहीं है।

प्रद्युम्न कुमार जी के जी में जी आया और उन्होंने मुझसे प्रार्थना की कि आज साय-सत्संग तक, मैं फिर गजेन्द्र मोक्ष के पाठ करना चाहता हूँ और शाम को एक बार फिर टेलिफोन कर लेंगे और तभी आगे का कार्य-क्रम निश्चित किया जायगा।

मैंने उन्हें स्वीकृति दे दी और मैं घर चला आया। वे सायंकाल चार बजे तक गजेन्द्र मोक्ष का अनवरत पाठ करते रहे। शाम को लगभग पाँच बजे घर से टेलिफोन मिला और उससे ज्ञात हुआ कि बच्चा पूर्णतः स्वस्थ है किसी प्रकार की चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं है।

मैंने देखा है कि गजेन्द्र मोक्ष में अद्भुत प्रभाव है। आध्यात्मिक, भौतिक या दैहिक किसी भी प्रकार की समस्या को सुलझाने में यह स्तुति अपने आप में रामबाण है और इसका प्रयोग जब-जब भी मैंने किया है अपने आप में पूर्ण अनुकूल समाचार प्राप्त हुए हैं।

———०———

एक बार मैं भोपाल अपने एक परिचित स्वजन के यहाँ ठहरा था उनके यहाँ मेरा तीन चार दिन रुकने का इरादा था। एक दिन रात को उनकी पत्नी किसी तांत्रिक प्रभाव से अस्वस्थ हो गई। यद्यपि मैं भूत-प्रेतों में विश्वास नहीं करता परन्तु मित्र की पत्नी की ऊल-जलूल बातें सुनकर ऐसा लग रहा था, मानो वह किसी भूत या प्रेत के प्रभाव में है।

मैंने उनकी नाड़ी देखी ठीक तरह से चल रही थी परन्तु वह अपने होश में नहीं थी, तथा अपने आपको एक अन्य स्त्री बता रही थी, जिसकी मृत्यु कुछ समय पहले ही हुई थी, और वह जोर से चीख रही थी, और अपने कपड़े फाड़ रही थी।

मुझे आश्चर्य इस बात का हो रहा था कि शाम के पाँच बजे तक पूर्ण स्वस्थ थी परन्तु आठ बजते-बजते उनकी ऐसी हालत कैसे हो गई थी ?

अपने परिचित बन्धु से पूछने पर उन्होंने बताया कि पंडित जी यह क्या रोग है, किसी के समझ में नहीं आता, मैं सैकड़ों डाक्टरों, वैद्यों तथा हकीमों को दिखा चुका हूँ, तथा तरह-तरह की दवाइयाँ दे चुका हूँ। परन्तु इस रोग से छुटकारा नहीं मिलता, इस प्रकार का यह आक्रमण कभी भी हो जाता है, कई बार दो-दो महीने तक नहीं होता, और कई बार एक दो दिन के अन्तराल से ही हो जाता है।

मैंने उनसे पूछा कि क्या कोई तांत्रिक प्रयोग तो इस पर नहीं है ? मित्र ने जवाब दिया कि मैं सयानों और ओझाओं को भी दिखा चुका हूँ।

इधर मैं अपने मित्र से जानकारी प्राप्त कर रहा था और उधर

मित्र की पत्नी चण्डिका के समान अपने बाल फैलाकर घर के बर्तन तोड़ रही थी, तथा बच्चों को मारपीट, रही थी।

मित्र ने मेरे कहने से पत्नी को जबरदस्ती पलंग पर सुला दिया और मेरी ही आज्ञा के अनुसार उसके सामने बैठकर दीपक जलाकर गजेन्द्र मोक्ष का पाठ करना प्रारम्भ कर दिया।

दो तीन पाठ के बाद ही पत्नी की उन्मादावस्था शान्त होने लगी, धीरे-धीरे पूर्ववत रूप में आने लगी, पांच पाठ के बाद वह बिलकुल शान्त थी।

मैंने गृह स्वामी से अनुरोध किया कि आज रात भर इस पाठ को करते रहें और आपकी पत्नी रात भर इस गजेन्द्र मोक्ष पाठ का श्रवण करती रहे, मेरे कहने से पत्नी भी शान्ति होकर पलंग के नीचे आसन पर बैठ गई।

सारी रात पाठ चलता रहा और प्रातः आठ बजे लगभग श्रीकृष्ण की आरती कर पाठ को समाप्त किया, रात भर में लगभग गजेन्द्र मोक्ष के १०० पाठ हो चुके थे।

इसके बाद कई बार उनके यहां जाने का मौका मिला, इस बात को लगभग ६ वर्ष बीत गए हैं, परन्तु आज तक वापिस उनकी पत्नी को उन्मादावस्था नहीं हुई और वे पूर्णतः स्वस्थ एवं स्थिर चित्त हैं, उनके घर में आज भी नित्य पति-पत्नी दोनों गजेन्द्र मोक्ष का पाठ करते हैं।

———•———

एक बार ऐसी ही एक घटना से मैं भी उलझ गया था। हरिद्वार की ही बात है मैं जहां ठहरा हुआ था, वहां रात्रि को अपना ध्यान पुजा पाठ करता था और इस प्रकार मेरी साधना १० बजे रात से ३ बजे प्रातः तक चलती थी।

एक दिन सुबह चार बजे अपनी साधना समाप्त कर गंगा स्नान के लिये रवाना हुआ तो कोने में पड़ी छड़ी को अपने हाथ में पूर्वाभ्यास के अनुसार ली, कि तुरन्त एक लिजलिजा सा अनुभव हुआ। ऐसा प्रतीत हुआ जैसे मेरा हाथ सांप पर पड़ गया हो।

हुआ यह था कि सांप उस छड़ी से लिपटा हुआ था, और ज्यों

ही मैंने उस छड़ी को छुआ, त्यों ही सांप का सिर मेरी मुट्ठी में आ गया और उसने घबरा कर अपने बाकी शरीर से मेरे हाथ पर ऐंठन दे दी? एक प्रकार से उसका सारा शरीर मेरे हाथ पर लिपट गया था।

यद्यपि मैं घबराया नहीं, परन्तु चिन्ता अवश्य हुई कि ज्यों ही मैं मुट्ठी खोलता हूँ, त्यों ही सांप मुझे डस लेगा और व्यर्थ की एक प्रकार की परेशानी होगी, ऐसे समय में मैंने गजेन्द्र मोक्ष का ही आश्रय लेना उपयुक्त समझा, और उसी प्रकार मुट्ठी बन्दकर गजेन्द्र मोक्ष का पाठ करता-करता गंगा तट की ओर रवाना हो गया।

गंगा के किनारे पहुंचते-पहुंचते मेरा पाठ भी समाप्त हो गया था, और पाठ समाप्त होते ही श्री कृष्ण को स्मरण कर मैंने धीरे से अपनी मुट्ठी खोल ली, सांप बिना हिचकिचाहट के अपनी जकड़न को छोड़कर मेरे कंधे पर से होता हुआ पीठ की ओर से नीचे उतर गया, और गंगा की रेती में आगे चलकर कहीं खो गया, इतनी देर तक मैं बिलकुल निश्चित खड़ा था।

यदि मैं उस समय कुछ भी हरकत करता तो निश्चय ही सांप मुझे काट डालता और एक नयी परेशानी पैदा हो जाती, पर मुझे विश्वास था कि गजेन्द्र मोक्ष का पाठ करने के बाद इस प्रकार की कोई समस्या मेरे सामने आयेगी ही नहीं और इस प्रकार मैं उस दिन गजेन्द्र मोक्ष के पाठ के फलस्वरूप ही सर्प से बच सका।

———०———

बिहार के राजा सुमन प्रसाद सिंह ने भी गजेन्द्र मोक्ष का अद्भुत चमत्कार मुझे सुनाया था, उन्होंने बताया कि मेरा ३ वर्ष का बच्चा बिलकुल गूंगा था, मैंने सैकड़ों डाक्टरों को दिखाया पर उसका कोई शुभ फल प्राप्त नहीं हुआ था। बच्चा मामूली ध्वनियों के अलावा कोई शब्द मुंह से नहीं निकलता था।

हारकर मैंने इस बारे में आपसे जिज्ञासा प्रकट की थी और पत्र में इसका उपाय भी पूछा था कि उस समय तक आपका मेरा

परिचय इतना घनिष्ट नहीं था, आपने अपने पत्र में यह बताया था कि नित्य गजेन्द्र मोक्ष का पाठ करने से तुम्हारे पुत्र का गूंगापन दूर हो जायगा, और आपका पत्र प्राप्त होने के दूसरे ही दिन से मैंने गजेन्द्र मोक्ष का पाठ करना शुरू कर दिया था ।

मैं नित्य प्रातः गजेन्द्र मोक्ष के ११ पाठ करता और मुझे ही नहीं अन्य सभी लोगों को यह जानकर अत्यन्त आश्चर्य हुआ था, कि मात्र ३ महीनों में ही बच्चा बोलने लग गया था, और अब तो वह खूब धड़ल्ले से बोल लेता है ।

———०———

पिछली गर्मियों की ही बात है मेरे मित्र डाक्टर शिवकृष्ण जी कार से सपरिवार अपने गाँव जा रहे थे, वे डाक्टर होते हुए भी पूर्ण भगवान के उपासक हैं, और नित्य प्रातः गजेन्द्र, मोक्ष का पाठ अवश्य कर लेते हैं अब भी उनके जीवन में किसी प्रकार की समस्या आती है तो वे बिना हिचकिचाहट के गजेन्द्र मोक्ष का पाठ आरम्भ कर देते हैं । इस प्रकार उनका जीवन सुखमय व्यतीत हो रहा था । उनके जीवन में अभ्यास ही कुछ ऐसा पड़ गया था जब भी कोई मुसीबत आती स्वतः ही उनके मुंह से गजेन्द्र मोक्ष का पाठ प्रारम्भ हो जाता ।

जब वे कार से गाँव की तरफ जा रहे थे तो मार्ग में तेज वर्षा प्रारम्भ हो गई और ऐसी स्थिति हो गई कि चारों तरफ पानी ही पानी नजर आने लगा ।

मार्ग में एक स्थान पर चढ़ाई थी और उससे नीचे ढलान थी, उसके दोनों तरफ बड़े-बड़े खड्ड थे, संयोग की बात कि सामने से आती हुई गाड़ी को रास्ता देने में उनके हाथ का स्टेयरिंग थोड़ा ज्यादा घूम गया और कार तेजी से खड्ड की ओर लपकने लगी ।

डाक्टर साहब के हाथ पैर फूल गये और स्वतः ही उनके मुंह से अभ्यासवश गजेन्द्र मोक्ष की स्तुति प्रारम्भ हो गई, डाक्टर साहब ने अपनी आँखें बन्द कर ली थी, मन में एक क्षण के लिये घूम गया था कि अब मैं तथा मेरा परिवार किसी भी प्रकार से बच नहीं सकता । यह गाड़ी खड्ड में गिरेगी और चकनाचूर हो

जायगी । इसके साथ ही हम लोगों की इहलीला भी समाप्त हो जायगी ।

पर इस प्रकार दो-तीन मिनट बीत गए उन्होंने दिमाग को झटका दिया तो ज्ञात हुआ कि गाड़ी का इंजन बन्द है, और कार में सारा परिवार सुरक्षित है, उन्हें विश्वास नहीं हो रहा था कि यह सब किस प्रकार हुआ ?

वे कार से नीचे उतरे और उन्होंने देखा कि कार आधी खड्ड के भीतर और आधी खड्ड के बाहर है, खड्ड के प्रारम्भ में ही एक बड़ा थूहर का झाड़ था और कार का अगला भाग उस झाड़ पर जाकर टिक गया था, एक प्रकार से पूरी कार का आधार वह थूहर का पेड़ ही था, यदि कार एक इंच भी इधर-उधर होती तो कार सैकड़ों फीट खड्ड में जा गिरती, और इससे क्या स्थिति होती इसकी कल्पना ही की जा सकती है ।

डाक्टर साहब प्रभु के चमत्कार के आगे श्रद्धा से भर आये उन्होंने प्रभु को जीवन-दान के लिये धन्यवाद दिया और फिर कार का पिछला हिस्सा खोलकर पूरे परिवार को बाहर निकाला, तथा बाद में उधर से जाते हुए कुछ मजदूरों को बुलाकर कार को पीछे से खींचकर खड्ड से बाहर सड़क पर निकाल कर लाया गया । डा० साहब आज भी अपना तथा अपने परिवार के जीवन का श्रेय गजेन्द्र मोक्ष स्तुति को ही देते हैं, उनका विश्वास है कि जीवन में हम किसी भी विपत्ति में उलझ नहीं सकते जब तक कि हमारे पास गजेन्द्र मोक्ष जैसा अमोघ साधन विद्यमान है ।

———०———

मेरे बचपन की बात है, मैं अपने पिता के साथ आबू घूमने गया था । पिता जी को गजेन्द्र मोक्ष पर पूर्ण विश्वास था, और उसी के संस्कारवश हम सब बालकों के जीवन में भी गजेन्द्र मोक्ष का प्रभाव काम कर रहा है ।

पिता जी ने बताया था कि आबू में जब हम सब लोग नक्की तालाब में नाव पर सैर कर रहे थे कि अचानक बीच धारा में नाव उलट गई और ऐसा प्रतीत होने लगा कि अब हम सब लोगों का

जीवन इसी झील में समाप्त होगा ।

अभ्यासवश पिता जी के मुंह से गजेन्द्र मोक्ष का पाठ प्रारम्भ हो गया । नाव चलाने वाला मल्लाह इस बीच जल में कूद चुका था और संयोग वश उसी समय एक नाव पास में से गुजरी और उन दोनों मल्लाहों ने हम सब बच्चों को उठाकर दूसरी नाव में बिठा दिया और इस प्रकार से हमारे पूरे परिवार की प्राण रक्षा हुई ।

वस्तुतः गजेन्द्र मोक्ष अपने आप में अद्भुत स्तुति है, मैंने अपने स्वय के जीवन में सैकड़ों बार इसका प्रयोग किया है, और जब-जब भी इसका प्रयोग किया है मुझे आशातीत सफलता प्राप्त हुई, विशेषकर नौकरी के संबंध में ऋण से सम्बन्धित मामलों में, तथा अन्य किसी भी परेशानियों में यदि इसका प्रयोग किया जाता है, तो कुछ पाठ करने के बाद ही उसे आशाजनक सफलता मिलती है, और कुछ समय के बाद तो वह अपनी समस्या से मुक्ति पा लेता है, मेरी स्वयं की नित्य की पूजा में यह पाठ सम्मिलित है ।

मुझे विश्वास है कि यदि व्यक्ति कोई अन्य पाठ या स्तुति न भी करे तब भी उसे चाहिए कि नित्य उठकर एक बार अवश्य गजेन्द्र मोक्ष का पाठ कर ले, ऐसा करने से उसके जीवन में किसी भी प्रकार की समस्या रह ही नहीं सकती । वस्तुतः कलियुग में इसे एक आश्चर्यजनक स्तुति कह सकते हैं ।

———o———

गजेन्द्र मोक्ष

एवं व्यवसितो बुद्धया समाधाय मनो हृदि ।
जजाप परमं जाप्यं प्रागजन्मन्यनुशिक्षितम् ॥१॥
ओम नमो भगवते तस्मै, यत एतच्चिदात्मकम् ।
पुरुषायादिबीजाय परेशायाभिधीमहि ॥२॥
यस्मिन्निदं यतश्चेदं येनेदं य इदं स्वयम् ।
यो स्मात्परस्माच्च परस्तं प्रपद्ये स्वयम्भुवम् ॥३॥

यः स्वात्मनीदं निजमाययार्पितं
क्वचिद्विभातं क्व च तत्तिरोहितम् ।
अविद्धदृक् साक्ष्युभयं तदीक्षते
स आत्ममूलो वतु मां परात्परः ॥४॥
कालेन पंचत्वमितेषु कृत्स्नशो
लोकेषु पालेषु च सर्वहेतुषु ।
तमस्तदा सीद् गहनं गभीरं
यस्तस्य पारे भिविराजते विभुः ॥५॥
न यस्य देवा ऋषयः पदं विदु-
र्जन्तुः पुनः को र्हति गन्तुमीरितुम् ।
यथा नटस्याकृतिभिर्विचेष्टतो
दुरत्ययानुक्रमणः स मावतु ॥६॥
दिदृक्षवो यस्य पदं सुमंगलं
विमुक्तसंगा मुनयः सुसाधवः
चरन्त्यलोकव्रतमव्रणं वने ।
भूतात्मभूताः सुहृदः स मे गतिः ॥७॥
न विद्यते यस्य च जन्म कर्म वा
न नामरूपे गुणदोष एव वा
तथापि लोकाप्ययसम्भवाय यः
स्वमायया तान्यनुकालमृच्छति ॥८॥
तस्मै नमः परेशाय ब्रह्मणे नन्तशक्तये ।
अरूपायोरुरूपाय नम आश्चर्यकर्मणे ॥९॥
नम आत्मप्रदीपाय साक्षिणे परमात्मने ।
नमो गिरां विदूराय मनसश्चेतसामपि ॥१०॥
सत्वेन प्रतिलभ्याय नैष्कर्म्येण विपश्चिता ।
नमः कैवल्यनाथाय निर्वाण सुखसंविदे ॥११॥
नमः शान्ताय घोराय मूढाय गुणधर्मिणे ।
निर्विशेषाय साम्याय नमो ज्ञानघनाय च ॥१२॥
क्षेत्रज्ञाय नमस्तुभ्यं सर्वाध्यक्षाय साक्षिणे ॥
पुरुषायात्ममूलाय मूलप्रकृतये नमः ॥१३॥
सर्वेन्द्रियगुणद्रष्टे सर्वप्रत्ययहेतवे ।
असताच्छाययोक्ताय सदाभासाय ते नमः ॥१४॥

नमो नमस्ते खिलकारणाय
निष्कारणायाद्भुतकारणाय
सर्वागमाम्नायमहार्णवाय
नमो पवर्गाय परायणाय ॥१५॥
गुणारणिच्छन्नचिदूष्मपाय
तत्क्षोभविस्फूर्जितमानसाय।
नैष्कर्म्यभावेन विवर्जितागम-
स्वयम्प्रकाशाय नमस्करोमि ॥१६॥
मादृक्प्रपन्नपशुपाशविमोक्षणाय
मुक्ताय भूरिकरुणाय नमो लयाय।
स्वांशेन सर्वतनुभृन्मनसि प्रतीत-
प्रत्यग्दृशे भगवते बृहते नमस्ते ॥१७॥
आत्मात्मजाप्तगृहवित्तजनेषु सक्तै
र्दुष्प्रापणाय गुणसंगविवर्जिताय।
मुक्तात्मभिः स्वहृदये परिभाविताय
ज्ञानात्मने भगवते नम ईश्वराय ॥१८॥
यं धर्मकामार्थविमुक्तिकामा
भजन्त इष्टां गतिमाप्नुवन्ति
किं त्वाशिषो रात्यपि देहमव्ययं
करोतु मे दभ्रदयो विमोक्षणम् ॥१९॥
एकान्तिनो यस्य न कंचनार्थं
वांछन्ति ये वै भगवत्प्रपन्नाः।
अत्यद्भुतं तच्चरितं सुमंगलं
गायन्त आनन्दसमुद्रमग्नाः ॥२०॥
तमक्षरं ब्रह्म परं परेश-
मव्यक्तमाध्यात्मिकयोगगम्यम्।
अतीन्द्रियं सूक्ष्ममिवातिदूर-
मनन्तमाद्यं परिपूर्णमीडे ॥२१॥
यस्य ब्रह्मादयो देवा वेदा लोकाश्चराचराः।
नामरूपविभेदेन फल्गव्या च कलया कृताः ॥२२॥
यथार्चिषो ग्नेः सवितुर्गभस्तयो
निर्यान्ति संयान्त्यसकृत् स्वरोचिषः।

तथा यतो यं गुणसम्प्रवाहो
बुद्धिर्मनः खानि शरीरसर्गाः ॥२३॥
स वै न देवासुरमर्त्यतिर्यङ्
न स्त्री न षण्ढो न पुमान् न जन्तुः।
नायं गुणः कर्म न सन्न चासन्
निषेधशेषो जयतादशेषः ॥२४॥
जिजीविषे नाहमिहामुया कि-
मन्तर्बहिश्चावृतयेभयोन्या
इच्छामि कालेन न यस्य विप्लव-
स्तस्यात्मलोकावरणस्य मोक्षम् ॥२५॥
सो हं विश्वसृजं विश्वमविश्वं विश्ववेदसम्।
विश्वात्मानमजं ब्रह्म प्रणतो स्मि परं पदम् ॥२६॥
योगरन्धितकर्माणो हृदि योगविभाविते।
योगिनो यं प्रपश्यन्ति योगेशं तं नतो स्म्यहम् ॥२७॥
नमो नमस्तुभ्यमसह्यवेग-
शक्तित्रयायाखिलधीगुणाय।
प्रपन्नपालाय दुरन्तशक्तये
कदिन्द्रियाणामनवाप्यवर्त्मने ॥२८॥
नायवेद स्वमात्मानं यच्छक्त्याहंधियाहतम्।
तं दुरत्ययमाहात्म्यं भगवन्तमितो स्म्यहम् ॥२९॥
एवं गजेन्द्रमुपवर्णितनिर्विशेषं
ब्रह्मादयो विविधलिंगभिदाभिमानाः।
नैते यदोपससृपुर्निखिलात्मकत्वात्
तत्राखिलामरमयो हरिराविरासीत् ॥३०॥
तं तद्वदार्तमुपलभ्य जगन्निवासः
स्तोत्रं निशम्य दिविजैः सह संस्तुवद्भिः।
छन्दोमयेन गरुडेन समुह्यमान-
श्चक्रायुधो, भ्यगमदाशु यतो गजेन्द्रः ॥३१॥
सो न्तस्सरस्युरुबलेन गृहीत आर्तो
दृष्ट्वाव गरुत्मति हरिं ख उपात्तचक्रम्।
उत्क्षिप्य साम्बुजकरं गिरमाह कृच्छ्रा-
न्नारायणाखिलगुरो-भगवन् नमस्ते ॥३२॥

तं वीक्ष्य पीडितमजः सहसावतीर्य
सग्राहमाशु सरसः कृपयाज्जहार ।
ग्राहाद् विपाटितमुखादरिणा गजेन्द्रं
सम्पश्यतां हरिरमूमुचदुस्रियाणाम् ॥३३॥

—0—

नारायण कवच

नारायण कवच अपने आप में अत्यन्त अद्भुत एवं शीघ्र फल दायक स्तुति है, कलयुग में जितना शीघ्र फल यह कवच देता है उतना दूसरा कोई कवच नहीं दे पाता, सबसे बड़ी विशेषता इस कवच में यह है कि इसके लिये व्यर्थ की न तो कोई पूजा अर्चना है तथा न कोई जटिल विधि-विधान, सीधे-सादे इसके पाठ मात्र से ही सैकड़ों मनुष्यों की मनोवांछित कामनाएं सिद्ध होते हुए मैंने देखा है ।

इस कवच की एक बड़ी भारी विशेषता यह है कि जीवन के प्रत्येक पहलु को सुलझाने में यह कवच अत्यन्त सहायक है ।यदि व्यक्ति की नौकरी नहीं लग रही हो, या नौकरी में किसी प्रकार की बाधा आ गई हो, अथवा उसे सन्तान की तरफ से कोई तकलीफ हो, आदि ऐसी कोई भी घटना या परेशानी उसके जीवन में हो तो उसके लिये यह कवच अमोघ औषधितुल्य है । मेरी व्यक्तिगत राय है कि इस कवच का पाठ नित्य प्रत्येक घर में होना ही चाहिए ।

इससे सम्बन्धित मुझे जो अनुभव तथा पाठकों, परिचितों एवं मित्रों से जो अनुभव प्राप्त हुए हैं उनमें से कुछ मैं नीचे दे रहा हूं,—

कलकत्ता के सेठ जौहरी जी अत्यन्त धर्मपरायण व्यक्ति थे, उनके जीवन का अधिकांश समय व्यापारिक कार्यों में अथवा धार्मिक कार्यों में ही व्यतीत होता था, परन्तु उनके जीवन की सबसे बड़ी विडम्बना यह थी कि उन्हें वृद्धावस्था में मात्र एक पुत्र प्राप्त हुआ था और वह भी मुंह से बोल नहीं सकता था । केवल कुछ ध्वनियां ही मुंह से निकाल पाता था । छः-सात वर्ष का होने के बावजूद भी उसके मुंह से एक भी शब्द नहीं निकल पा रहा था । डाक्टरों ने उसे गूंगा घोषित कर दिया था, यद्यपि जौहरी जी ने इसके उपचार के लिये काफी प्रयत्न किये थे, सैकड़ों डाक्टरों को

दिखाया था, उसका इलाज करवाया था परन्तु उन्हें इस कार्य में कोई सफलता नहीं मिल सकी थी। थक तथा हार कर सेठ जी ने विधि का विधान समझकर यह निश्चिय कर लिया था कि मेरे भाग्य में गूंगे पुत्र का ही सुख है।

उन्हीं दिनों कलकत्ता प्रवास में उनसे मेरा मिलना हुआ। सेठ जी अत्यन्त सरल, साम्य एव धार्मिक प्रकृति के व्यक्ति थे और पुत्र का इतना भारी दुख होने के बावजूद भी उनके मन में किसी प्रकार की मलिनता नहीं थी। वे इसे ईश्वर का ही प्रसाद समझ रहे थे, उनके आग्रह पर मैं उनके घर गया और बच्चे से बातचीत करने का प्रयत्न किया, यद्यपि बच्चा बोलना चाहता था परन्तु सम्भवतः कुछ ऐसी विवशता थी, या को ऐसा कारण था कि जिससे वह बालक बोलना चाह कर भी नहीं बोल रहा था। मैंने सेठ जी को श्री नारायण कवच का नित्य पाठ करने की सलाह दी और उन्हें विश्वास दिलाया कि आप नित्य पाठ करने के उपरान्त प्रभु से अपने पुत्र की श्रवण-शक्ति प्राप्त होने की इच्छा प्रकट करें और यथासंभव नित्य इस बालक को सामने बैठाकर ही नारायण कवच का पाठ करें, उन्होंने मेरी आज्ञा शिरोधार्य कर ली, और वे भक्ति पूर्वक नित्य बच्चे को सामने बिठाकर नारायण कवचका पाठ करने लगे।

लगभग ४ महीनों के बाद एक दिन प्रातः उनका टेलिफोन मिला कि पंडित जी! बालक बोलने लग गया है, और काफी सही शब्द मुंह से निकाल लेता है, मैंने उन्हें नारायण कवच का पाठ आगे के समय में भी करते रहने का आदेश दिया।

एक साल के भीतर-भीतर बालक भली प्रकार से बोलने लग गया और सबसे बड़ी आश्चर्य की बात यह थी कि उस बालक ने एक ही वर्ष में उतने शब्दों का ज्ञान सहज ही प्राप्त कर लिया था जितना कि कोई अन्य बालक सहज गति से विकास करता हुआ प्राप्त करता है।

———०———

ऐसी ही एक घटना लखनऊ के निवासी देवव्रत जी ने मुझे बताई थी वे सीधे-सादे सरल प्रकृति के सेवारत कर्मचारी हैं। माता

के प्रति उनका सेवा-भाव वन्दनीय है, वे नित्य नारायण कवच का पाठ करते हैं। उन्होंने एक बार नारायण कवच की प्रशंसा करते हुए बताया कि पिछली गर्मियों में मेरी माता जी अत्यन्त बीमार थी। मैं और बहू उनकी सेवा में लगे हुए थे, रात्रि के लगभग ११ बजे का समय होगा कि माता जी जोर से चीखी, मेरे पूछने पर उन्होंने बताया कि उन्हें दो काले भयानक यमदूत दिखाई दे रहे हैं, मैंने उनके मुंह में गंगाजल डाला और उनके पास बैठकर नारायण कवच का पाठ प्रारम्भ कर दिया, लगभग १५-२० मिनट के बाद उनके चेहरे पर शान्ति दिखाई दी और उन्होंने बताया कि अब मुझे भयानक यमदूत दिखाई नहीं दे रहे हैं, पर वे भागते हुए मुझे अवश्य नजर आ रहे हैं, कुछ समय के बाद ही उन्हें यम दूत बिलकुल ही दिखाई देने बन्द हो गए।

वस्तुतः मरणासन्न रोगी के पास बैठकर नारायण कवच का पाठ किया जाय तो निश्चय ही उस व्यक्ति की सद्गति होती है और वह किसी भी स्थिति में यमपुरी में नहीं जाता।

———०———

भोपाल के स्वामी कीर्तनानन्द जी ने भी मुझे नारायण कवच के बारे में अपना एक अनुभव सुनाया था, उन्होंने बताया था कि मेरे पिताजी अत्यन्त धार्मिक प्रकृति के व्यक्ति थे और मृत्यु से लगभग एक महीने पहले ही उन्होंने हम लोगों को सूचित कर दिया था कि मैं उस तारीख को मृत्यु प्राप्त करूँगा।

आखिर वह दिन भी आ पहुँचा, उन दिनों वे अस्वस्थ थे हिलने-डुलने की भी उनमें शक्ति नहीं थी, तथा बड़ी मुश्किल से वे बोल पाते थे, एकाएक उन्हें ऐसा लगा जैसे दो विकराल मुख वाले व्यक्ति उनकी तरफ आ रहे हैं। उनके हाथ में मोटा मुद्गल तथा रस्सियाँ है, उन्हें देखते ही पिता जी की चीख निकल गई और उन्होंने नारायण कवच का पाठ प्रारम्भ कर दिया। उस एक मिनट के अन्तराल में मुझे भी उन्होंने नारायण कवच का जोर-जोर से पाठ करने की आज्ञा दी। मेरे द्वारा पाठ का प्रारम्भ करने से पूर्व ही भय से वे अर्द्ध-मूर्छित से हो गये थे।

मैं उनके पास बैठा लगातार नारायण कवच का पाठ करता रहा, लगभग आधे घण्टे के बाद उनकी मूर्छा टूटी, उनके चेहरे पर शान्ति एवं संतोष के चिन्ह थे, उन्होंने बताया कि मैंने दो यमदूतों को मेरे गले में रस्सी डालते हुए देखा तो मेरी चीख निकल गई थी, पर मुझे नारायण कवच पर पूरा भरोसा था और इसीलिये मैंने तुम्हें नारायण कवच का पाठ करने को कहा था, अब मुझे वे यमदूत कहीं भी दिखाई नहीं दे रहे हैं और चारों तरफ शान्ति का वातावरण अनुभव हो रहा है।

इसके बाद उन्हें गंगा जल से स्नान कराया जनेऊ बदला और उन्होंने राम-राम का उच्चारण करते हुए अपना शरीर छोड़ा।

———o———

एक बार मैं किसी कार्य से अपने गाँव गया था, वहाँ एक चौधरी के घर बड़ी परेशानी थी, उसके बड़े पुत्र को भूत लग गया था और पिछले छः महीनों से वह बराबर घर वालों को तंग करता था। चौधरी ने कई सयानों को बुलाया, ओझाओं से भी उपचार करवाए पर किसी प्रकार वह भूत निकल नहीं सका। धीरे-धीरे वह बच्चा कमजोर होने लगा और छः महीनों के भीतर बच्चे का शरीर पीला सा पड़ गया, आँखें अन्दर धँस गई और चल फिरने में भी वह अपने आप को असमर्थ सा अनुभव करने लगा।

मेरे गाँव जाने पर चौधरी मुझसे मिला और इस घटना का सविस्तार वर्णन किया, उसने बताया कि उसका पुत्र दुबला-पतला होने के बावजूद भी एक बार में ५०, ६० रोटियां खा लेता है मगर फिर भी उसकी भूख शान्त नहीं होती। उसका अभी एक साल पहले तो विवाह किया ही है, और यदि यही स्थिति रही तो यह बालक महीने दो महीने से ज्यादा जीवित नहीं रह सकेगा। यह कहकर वह फूट-फूट कर रोने लगा।

मैंने उसे सान्त्वना दी और बताया कि यद्यपि इस जगत में भूत प्रेतों का भी अस्तित्व है, मगर इस बारे में मैं बहुत अधिक नहीं जानता, इतना अवश्य कह सकता हूँ कि यदि तुम किसी योग्य ब्राह्मण से अपने पुत्र के सामने नित्य श्री नारायण कवच का पाठ

कराते रहे तो इस समस्या से मुक्ति मिल सकती है, मैंने उसे नारायण कवच की एक प्रति भी दी।

दूसरे दिन से उसने गाँव के ब्राह्मण से अपने घर नित्य नारायण कवच का पाठ कराने लगा और यथा संभव यह प्रयत्न करता कि पाठ करते वक्त उसका वह बालक सामने ही रहे, वह युवक कमजोर था खाट पर पड़ा रहता था, अतः इच्छा-अनिच्छा से वह नारायण कवच का पाठ सुनता रहता, लगभग १०-१२ दिन बीते होंगे कि एक दिन नारायण कवच का पाठ सुनते सुनते वह जोरों से उछला, और चिल्ला कर कहने लगा अब मैं किसी तरीके से यहाँ नहीं रह सकता, मुझे समाप्त करने का षड्यन्त्र किया जा रहा है, यह कवच मेरी मृत्यु है और ऐसा कहता-कहता वह खाट से उठा, पाँच-सात कदम दौड़ा और पृथ्वी पर गिर पड़ा।

घर वालों ने उसे उठाया और अन्दर लाकर पलंग पर सुलाया, इसके बाद से उसका स्वास्थ्य सुधरने लगा तथा अगले तीन-चार महीनों में ही वह पुनः हृष्ट-पुष्ट युवक दिखाई देने लगा, उसके चेहरे पर ललाई छा गई तथा पागलपन का कोई चिन्ह उसके मन तथा मस्तिष्क पर नहीं रहा।

———o———

ऐसी ही एक घटना मेरे मित्र गोपाल जी ने सुनाई थी, उन्होंने बताया कि मैं सुबह पूजा में बैठा हुआ था, मेरे सामने बड़े पुत्र ने कहा कि मैं तालाब में स्नान करने जा रहा हूँ, मेरे कुछ मित्र भी हैं, पता नहीं क्यों उसका यह वाक्य सुनते ही मेरा मन किसी अज्ञात आशंका से काँप गया, मैं उसे मना भी नहीं कर सकता था पर रह-रह कर, मेरे मन में कई प्रकार के तर्क-वितर्क उबलने लगे, वह अपने मित्रों के साथ स्नान करने चला गया।

वर्षा ऋतु थी, तालाब लबालब पानी से भरा हुआ था, मेरे घर से तालाब मुश्किल से २ फर्लांग दूर होगा, मैं अपने पूजा कक्ष में बराबर बैठा रहा और नारायण कवच का पाठ करता रहा, यद्यपि नित्य मैं इस कवच का एक ही पाठ करता हूँ पर इस दिन किसी अज्ञात प्रेरणा से मैं लगातार इसी के पाठ करता रहा, लगभग

२०-२५ मिनट ही बीते होंगे कि एक लड़का दौड़ता हुआ आया और जोर से चिल्लाया रमेश बाबू डूब रहे हैं। रमेश मेरे पुत्र का नाम था, मैं हड़बड़ाकर उठ खड़ा हुआ, मेरे होठों से अभी तक नारायण कवच का पाठ चल रहा था, मैं तालाब की तरफ दौड़ा तब तक उसके तीन-चार मित्र उसे अपने हाथों में उठाये मेरे घर की तरफ आ रहे थे, मैं तुरन्त रमेश को उसके मित्रों की सहायता से घर लाया, उल्टा करके उसके पेट का पानी निकाला तथा उसके पास बैठकर नारायण कवच का पाठ करता रहा।

होश में आने पर उसने मुझे बताया कि मैं तालाब में अचानक फिसल गया और मेरे मुंह में जरूरत से ज्यादा पानी भर गया, मैं एक प्रकार से डूब ही गया था क्योंकि इस समय मैं तालाब के मध्य में था, परन्तु न मालूम किसी ने अपने हाथ से मुझे जोरों से धक्का दिया और मैं किनारे पर अपने आपको गिरते हुए अनुभव किया, मित्रों ने यह भी बताया कि यह डूबते हुए अपने आप किनारे की तरफ आया था।

मैं प्रभु की महान कृपा पर गद्गद हो गया, प्रभु अपने भक्तों की किस प्रकार से रक्षा करते हैं, प्रभु के अलावा ऐसा कौन अन्य हो सकता है जिसने डूबते हुए बालक को सहारा देकर किनारे पर लाकर पटका और उसकी जान बचाई।

उस दिन के बाद से इस नारायण कवच पर मेरी अनन्य श्रद्धा हो आई है और जब भी मैं किसी परेशानी का अनुभव करता हूँ तो नारायण कवच का पाठ प्रारंभ कर लेता हूँ इससे मुझे अपने कार्य में शीघ्र ही सफलता मिल जाती है।

———०———

प्रभुपाद ब्रह्मचारी मेरे गुरुभाई हैं, उन्होंने भी एक बार नारायण कवच के प्रभाव का वर्णन मेरे सामने किया था, उन्होंने बताया कि श्रावण का महीना था, गंगा के किनारे मेरा घर था और मैं नित्य की भाँति उसमें स्नान करने के लिये घुसा, मेरे साथ तीन-चार मित्र थे, अन्दर घुसने के बाद मेरे दूसरे मित्र तो तैर कर किनारे पर जा लगे, पर मेरा पैर फिसलने से मैं बीच धारा में

चला गया, धारा वेगवती थी और मैं अत्यन्त तीव्रता से धारा के साथ बह रहा था, मेरे मुँह में कसैला पानी घुस रहा था, धीरे-धीरे मैं बेहोश सा होता जा रहा था, पर मेरे पिताजी ने मुझे नारायण कवच सिखाया था और नित्य पाठ करने की उनकी आज्ञा थी, इस समय भी मेरे मुँह से अनायास नारायण कवच का पाठ प्रारम्भ हो गया, एक प्रकार से मैंने मृत्यु को निकट समझ लिया था, साथी दूर किनारे पर खड़े चिल्ला रहे थे पर धारा में घुसने का उनमें से किसी को साहस नहीं था। अपने आपको मैं प्रभु के हवाले कर नारायण कवच का पाठ कर रहा था और धीरे-धीरे संज्ञा शून्य होता जा रहा था, अचानक ऐसा लगा कि जैसे किसी ने मुझे धक्का दिया हो, और मैं किसी वस्तु से जा टकराया, आंखें खोलीं तो मैंने देखा कि मैं किनारे पर पड़ा हुआ हूँ।

दो-तीन मिनट किनारे की रेती पर उल्टा पेट के बल पड़ा रहा, मेरे अन्दर का पानी बाहर निकल आया, तो मेरी साँस में साँस आई, उठकर खड़ा हो गया और प्रभु को अनेक धन्यवाद दिये, वस्तुतः उस दिन यदि मेरे पास यह नारायण कवच न होता तो मेरी मृत्यु अवश्यभावी थी और दुनियां की कोई ताकत मुझे बचा नहीं सकती थी।

———

बिहार के रमेशचन्द्र जी मेरे शिष्य हैं, सद्गृहस्थ हैं उनके दो पुत्र और एक पुत्री है। पति-पत्नी दोनों ईश्वर परायण हैं और वर्ष में एक बार मुझसे मिलने के लिये अवश्य आ जाते हैं।

कुछ समय पहले मैंने रमेश जी को नारायण कवच की प्रति दी थी और यह कहा था कि जब भी तुम्हें किसी प्रकार की असुविधा हो, या कोई परेशानी अनुभव हो तो तुम ईश्वर को स्मरण कर इस कवच का पाठ प्रारम्भ कर देना, अवश्य ही तुम उस समस्या से मुक्ति पाने में सफल हो सकोगे उन्होंने मेरी आज्ञा स्वीकार कर ली।

इसके तीन-चार महीने बाद की ही बात है वे अपने गाँव में शाम के समय अपने पुत्र-पुत्री तथा पत्नी के साथ भोजन करने

बैठे थे कि इतने में जोर का अन्धड़ और तूफान आया, और उनके उठते-उठते ही पीछे की कच्ची दीवार भहरा कर उन पर गिर पड़ी, रमेश जी लगभग बच से गए, परन्तु पत्नी तथा पुत्रों की क्या स्थिति हुई होगी। इस आशंका मात्र से वे घबरा उठे। आंधी का तूफान वेग से चल रहा था, उन्हें और कुछ दिखाई नहीं दिया और उन्होंने उच्च स्वर से नारायण कवच का पाठ प्रारम्भ कर दिया।

लगभग तीन-चार मिनट ही बीते होंगे कि कुछ ग्रामीण घर के पास से गुजर रहे थे, वे दीवार गिरी देख अन्दर आए, और सबने मिलकर ईंटें हटाईं, तो रमेश जी को यह देखकर सुखद आश्चर्य हुआ कि पत्नी तथा तीनों ही सन्तान सकुशल हैं, और दीवार गिरने के बावजूद भी उन चारों के कहीं खरोंच तक नहीं आई थी, वे प्रेम से गद्गद हो गये, और उसी समय घुटनों के बल बैठकर प्रभु को अनेकानेक धन्यवाद देने लगे, महीनों तक उस गाँव में इस घटना की चर्चा होती रही, कि दीवार गिरने के बाद भी वह कौन-सी शक्ति थी, जिसके कारण बालकों को खरोंच तक नहीं आई थी, और सभी सकुशल थे।

उनके जीवन में नारायण कवच एक अभिन्न अंग बन गया और जब भी वे किसी प्रकार की मुसीबत अनुभव करते हैं तो नारायण कवच ही उनके लिये सहायक रहता है। इसका उन्होंने कई बार अनुभव किया है।

———०———

वस्तुतः नारायण कवच अपने आप में एक अद्भुत स्तुति अथवा कवच है, यदि मैं इससे संबंधित घटनाएँ लिखूं तो एक पूरा अलग से ग्रंथ बन सकता है सैंकड़ों लोगों ने सैंकड़ों घटनाएं मुझे सुनाई और बताया कि नारायण कवच के प्रभाव से ही वे अपनी समस्याओं से मुक्ति पा सके हैं।

प्रसिद्ध स्वामी सेवानन्दजी से मुझे जब मिलने का अवसर प्राप्त हुआ तो मैंने उनसे पूछा था कि वह कौन-सी शक्ति या आराधना आपके पास है जिसके बल से आप अत्यन्त समर्थ एवं योग्य बन सके हैं, तो उन्होंने अत्यन्त ही रहस्य भरी वाणी में मुझसे बोले,

इस सबके पीछे केवल नारायण कवच ही है, यदि मैं यह कहूं कि नारायण कवच प्रत्येक प्रकार के कार्य में सहायक है, प्रत्येक प्रकार की समस्याओं को सुलझाने में सक्षम है, तो कोई अत्युक्ति नहीं होगी। जीवन में यदि साधना के बल पर ऊँचा उठना है तो उसे सबसे पहले नारायण कवच को हृदयस्थ करना ही होगा और जब इस नारायण कवच पर अधिकार हो जाता है, तो उसे जीवन में दैहिक, दैविक तथा भौतिक ताप नहीं व्याप्त होते।

मेरा स्वयं का अनुभव है कि श्री नारायण कवच अपने आप अत्यन्त सक्षम है, और प्रत्येक व्यक्ति को अपने पूजा क्रम में इस कवच को स्थान देना चाहिए।

———०———

अथ श्रीनारायणकवचम्

राजोवाच

यया गुप्तः सहस्राक्षः सवाहान् रिपुसैनिकान्।
क्रीडन्निव विनिर्जित्य त्रिलोक्या बुभुजे श्रियम् ॥१॥
भगवंस्तन्ममाख्याहि वर्म नारायणात्मकम्।
यथा ततायिनः शत्रून् येन गुप्तो जयन्मृधे ॥२॥

श्री शुक उवाच

वृतः पुरोहितस्त्वाष्ट्रा महेन्द्रायानुपृच्छते।
नारायणाख्यं वर्माह तदिहैकमनाः शृणु ॥३॥
धोताङ्घ्रिपाणिराचम्य सपवित्र उदङ् मुखः।
कृतस्वांगकरन्यासो मन्त्राभ्यां वाग्यतः शुचिः ॥४॥
नारायणमयं वर्म संनह्येद् भय आगते।
पादयोर्जानुनोरूर्वोरुदरे हृद्यथोरसि ॥५॥
मुखे शिरस्यानुपूर्व्यादों कारादीनि विन्यसेत्।
ओम नमो नारायणायेति विपर्ययमथापि वा ॥६॥

करन्यासं ततः कुर्याद् द्वादशाक्षरविद्यया ।
प्रणवादियकारान्तमंगुल्यंगुष्ठपर्वसु ॥७॥
न्यसेद्धृदय ओंकारं विकारमनु मूर्धनि ।
षकारं तु भ्रुवोर्मध्ये णकारं शिखया दिशेत् ॥८॥
वेकारं नेत्रयोर्युंज्यान्नकारं सर्वसंधिषु ।
मकारमस्त्रमुद्दिश्य मन्त्रमूर्तिर्भवेद् बुधः ॥९॥
सविसर्गं फडन्तं तत्सर्वदिक्षु विनिर्दिशेत् ।
ओम विष्णवे नम इति ॥१०॥
आत्मानं परमं ध्यायेद् ध्येयं षट्शक्तिभिर्युतम् ।
विद्यातेजस्तपोमूर्तिमिमं मन्त्रमुदाहरेत् ॥११॥
ओम हरिर्विदध्यान्मम सर्वरक्षां । न्यस्तांघ्रिपद्मः पतगेन्द्र पृष्ठे ।
दरारिचर्मासिगदेषुचाप पाशान् दधानो ष्टगुणों ष्टबाहुः ॥१२॥
जलेषु मां रक्षतु मत्स्य मूर्तिर्यादोगणेभ्यो वरुणस्य पाशात् ।
स्थलेषु मायावटुवामनो व्यात् त्रिविक्रमः खे वतु विश्वरूपः ॥१३॥
दुर्गेष्वटव्याजिमुखादिषु प्रभुः पायान्नृसिंहो सुरयूथपारिः ।
विमुंचतो यस्य महाट्टहासं दिशो विनेदुर्न्यपतंश्च गर्भाः ॥१४॥
रक्षत्वसौ माध्वनि यज्ञकल्पः स्वदंष्ट्रयोन्नीतधरो वराहः ।
रामो द्रिकूटेष्वथ विप्रवासे सलक्ष्मणो व्याद् भरताग्रजो स्मान् ॥१५॥
मामुग्रधर्मादखिलात् प्रमादान्नारायणः पातु नरश्च हासात् ।
दत्तस्त्वयोगादथ योगनाथः । पायाद्गुणेशः कपिलः कर्मबन्धात् ॥१६॥
सनत्कुमारो वतु कामदेवाद्धयशीर्षा मां पथि देवहेलनात् ।
देवर्षिवर्यः पुरुषार्चनान्तरात् कूर्मो हरिर्मां निरयादशेषात् ॥१७॥
धन्वन्तरिर्भगवान् पात्वपथ्याद् द्वन्द्वाद् भयादृषभो निर्जितात्मा ।
यज्ञश्च लोकादवतांजनान्ताद् बलो गणात् क्रोधवशादहीन्द्रः ॥१८॥
द्वैपायनो भगवानप्रबोधाद् बुद्धस्तु पाखण्डगणात् प्रमादात् ।
कल्किः कलेः कालमलात् प्रपातु धर्मावनायोरुकृतावतारः ॥१९॥
मां केशवो गदया प्रातरव्याद् गोविन्द आसंगवमात्तवेणुः ।
नारायणः प्राह्ण उदात्तशक्तिर्मध्यंदिने विष्णुररीन्द्रपाणिः ॥२०॥
देवो पराह्णे मधुहोग्रधन्वा सायं त्रिधामावतु माधवो माम् ।
दोषे हृषीकेश उतार्धरात्रे निशीथ एको वतु पद्मनाभः ॥२१॥
श्रीवत्सधामापररात्र ईशः प्रत्यूष ईशो सिधरो जनार्दनः ।
दामोदरो व्यादनुसंध्यं प्रभाते, विश्वेश्वरो भगवान् कालमूर्तिः ॥२२॥

चक्रं युगान्तानलतिग्मनेमि, भ्रमत् समन्ताद् भगवत्प्रयुक्तम् ।
दंदग्धि दंदग्ध्यरिसैन्यमाशु कक्षं यथा वातसखो हुताशः ॥२३॥
गदे शनिस्पर्शनविस्फुलिंगे निष्पिण्ढि निष्पिण्ढ्यजितप्रियासि ।
कूष्माण्डवैनायकयक्षरक्षोभूतग्रहांश्चूर्णय चूर्णयारीन् ॥२४॥
त्वं यातुधानप्रमथप्रेतमातृपिशाचविप्रग्रहघोरदृष्टीन्
दरेन्द्र विद्रावय कृष्णापूरितो भीमस्वनो रेर्हृदयानि कम्पयन् ॥२५॥
त्वं तिग्मधारासिवरारिसैन्यमीशप्रयुक्तो मम छिन्धि छिन्धि ।
चक्षूंषि चर्मञ्छतचन्द्र छादय द्विषमघोना हर पापचक्षुषाम् ॥२६॥
यन्नोभयं ग्रहेभ्यो भूत केतुभ्यो नृभ्य एव च ।
सरीसृपेभ्यो दंष्ट्रिभ्यो भूतेभ्यं होभ्य एव वा ॥२७॥
सर्वाण्येतानि भगवन्नामरूपास्त्रकीर्तनात् ।
प्रयान्तु संक्षयं सद्यो ये नः श्रेयः प्रतीपकाः ॥२८॥
गरुड़ो भगवान् स्तोत्रस्तोभश्छन्दोमयः प्रभुः ।
रक्षत्वशेषकृच्छ्रेभ्यो विष्वक्सेनः स्वनामभिः ॥२९॥
सर्वापद्भ्यो हेर्नामरूपयानायुधानि नः ।
बुद्धीन्द्रियमनः प्राणान् पान्तु पार्षदभूषणाः ॥३०॥
यथा हि भगवानेव वस्तुतः सदसच्च यत् ।
सत्येनानेन नः सर्वे यान्तु नाशमुपद्रवाः ॥३१॥
यथैकात्म्यानुभावनानां विकल्परहितः स्वयम् ।
भूषणायुधलिंगाख्या धत्ते शक्तिः स्वमायया ॥३२॥
तेनैव सत्यमानेन सर्वज्ञो भगवान् हरिः ।
पातु सर्वः स्वरूपैर्नः सदा सर्वत्र सर्वगः ॥३३॥
विदिक्षु दिक्षूर्ध्वमधः समन्तादन्तर्बहिर्भगवान् नारसिंह ।
प्रहापयंल्लोकभयं स्वनेन स्वतेजसा ग्रस्तसमस्ततेजाः ॥३४॥
मघवन्निदमाख्यातं वर्म नारायणात्मकम् ।
विजेष्यस्यंजसा येन दंशितो सुरयूथपान् ॥३५॥
एतद् धारयमाणस्तु यं यं पश्यति चक्षुषा ।
पदा वा संस्पृशेत् सद्यः साध्वसात् स विमुच्यते ॥३६॥
न कुतश्चिद् भयं तस्य विद्यां धारयतो भवेत् ।
राजदस्युग्रहादिभ्यो व्याघ्रादिभ्यश्च कर्हिचित् ॥३७॥
इमां विद्यां पुरा कश्चित् कौशिको धारयन्त द्विजः ।
योगधारणया स्वांग जहौस मरुधन्वनि ॥३८॥

तस्योपरि विमानेन गन्धर्वपतिरेकदा ।
ययौ चित्ररथः स्त्रीभिर्वृतो यत्र द्विजक्षयः ॥३९॥
गगनान्न्यपतत् सद्यः सविमानो ह्यवाक्शिराः ।
स वालखिल्यवचनादस्थीन्यादाय विस्मितः ।
प्रास्य प्राचीसरस्वत्यां स्नात्वा धाम स्वमन्वगात् ॥४०॥

श्रीशुक उवाच

य इदं शृणुयात् काले यो धारयति चादृतः ।
तं नमस्यन्ति भूतानि मुच्येत सर्वतो भयात् ॥४१॥
एतां विद्यामधिगतो विश्वरूपाच्छतक्रतुः ।
त्रैलोक्यलक्ष्मीं बुभुजे विनिर्जित्य मृधे सुरान् ॥४२॥

———o———

सुदर्शन कवच

सुदर्शन कवच, रक्षा से सम्बन्धित कार्यों में अत्यधिक फलप्रद माना गया है, मनुष्य भौतिक अथवा आध्यात्मिक रूप से कैसी भी परेशानी से ग्रस्त हो यदि वह सुदर्शन कवच का पाठ करता है तो उसे जीवन में किसी भी प्रकार की समस्या देखनी नहीं पड़ती। मैंने स्वयं सुदर्शन कवच का कई बार पाठ किया है और जब-जब भी मैं मानसिक परेशानियों से जूझा हूं उन्हीं क्षणों में इसने ढाल की तरह मेरी रक्षा की है, और मैं उन यंत्रणाओं से शीघ्राति-शीघ्र मुक्त हो सका हूँ।

पूरे भारत और विदेशों में फैले मेरे मित्रों, परिचितों एवं भक्तों के पास जाते रहने का मौका मुझे मिलता ही रहता है, कई स्थानों पर मैंने इस कवच की प्रशंसा सुनी, और जिन-जिन लोगों ने इस कवच से लाभ उठाया है उनकी संख्या अत्यधिक है। मैंने जब भी किसी व्यक्ति या परिचित को परेशान या दुखी देखा है, उसे सुदर्शन कवच के पाठ करने की सलाह दी है और कुछ ही दिनों के बाद उसने राहत का अनुभव किया है। सुदर्शन कवच की प्रशंसा के बारे में जितना भी लिखा जाय वह कम है। मैं नीचे के पृष्ठों में कुछ ऐसी सत्य घटनाएं दे रहा हूँ जिन्हें विश्वस्त व्यक्तियों ने अनुभव किया है और मुझे सुनाई है—

पटना के मेरे परिचित बन्धु हरीराम जी ने अपने पुत्र का किस्सा सुनाते हुए बताया था, कि मेरे पुत्र लगभग सोलह-सतरह साल का है वह और तो कुछ पूजा या विधि विधान नहीं करता पर सुदर्शन कवच का पाठ नित्य एक बार अवश्य कर लेता है, इससे धीरे-धीरे कुछ अभ्यास ऐसा बन गया है कि जब भी वह किसी भी परेशानी में होता है या किसी प्रकार की बाधा अनुभव करता है तो उसके मुंह से स्वतः ही सुदर्शन कवच का पाठ आरम्भ हो जाता है।

एक दिन वह आम के पेड़ की ऊंची डाल पर बैठा हुआ था, आम पके हुए थे और वह आम को तोड़ने के लिये और ऊंचा चढ़ रहा था कि हठात् उसका पैर फिसला और धड़ाम से नीचे आ गिरा, यद्यपि वह कमर के बल गिरा था परन्तु गिरते ही एक प्रकार से बेहोश सा हो गया था, मुझे ज्ञात होते ही मैं दौड़ा हुआ गया और उसे तुरन्त अस्पताल पहुँचाया, मेरी बुद्धि उस समय कुछ काम नहीं कर रही थी, मेरे मुँह से केवल सुदर्शन कवच का पाठ हो रहा था और मुझे कुछ भी राह दिखाई नहीं दे रही थी। नगर के प्रसिद्ध डाक्टर श्रीवास्तव ने देखा और निर्णय सुनाया कि बच्चे के सिर में गहरी चोट लगी है, अतः अड़तालीस घंटों से पहले होश में नहीं आ सकता, यह सुनते ही मेरी हालत कटे पक्षी की तरह हो गई। उसे ग्लूकोज चढ़ाया जा रहा था, पर मेरा अन्तर-मन कह रहा था कि यदि मैं इसके पास बैठकर सुदर्शन कवच का पाठ करूँ तो अवश्य ही इसके प्राण बच सकते हैं, और यह शीघ्रातिशीघ्र होश में आ सकता है, मैं अस्पताल के वार्ड में उसके पास ही बैठ गया और धीरे-धीरे सुदर्शन कवच का पाठ प्रारम्भ कर दिया।

हरीराम जी ने यह अनुभव सुनाते हुए मुझसे कहा पंडित जी! आप शायद विश्वास नहीं करें, मैंने केवल उसके पास बैठकर ११ बार सुदर्शन कवच का पाठ ही किया था कि उसने आँखें खोलीं और मुझे अच्छी तरह से पहचाना तुरन्त डा० श्रीवास्तव को टेलीफोन किया गया, वे आए, और उन्होंने जब बच्चे को होश में आया हुआ देखा तो आश्चर्य चकित रह गए, उन्हें विश्वास नहीं हो रहा था कि सिर में इतनी सांघातिक चोट लगने के बाद भी बालक इतनी जल्दी होश में कैसे आ गया जब उन्हें बताया गया कि मैंने इसके पास बैठकर सुदर्शन कवच का पाठ किया था, तो एक बार तो डाक्टर साहब को विश्वास नहीं हुआ, पर जब उन्होंने इसी प्रकार के प्रयोग और भी कई रोगियों पर किये तो उन्होंने पाया कि वस्तुतः यह कवच इस प्रकार के मामलों में अद्भुत है और प्रत्येक बार इसका परिणाम अनुकूल ही रहता है, आज भी डाक्टर इस कवच के अनन्य भक्त है और पूर्ण वैज्ञानिक होते हुए भी इस प्रकार के कार्यों में रोगियों पर वे इस कवच का प्रयोग

करते है, और इससे वे अत्यधिक लोकप्रिय हो गए है।

—o—

ऐसी ही एक घटना मुझे मेरे भक्त महेश कुमार ने बताई थी, उसने बताया कि एक बार मैं कश्मीर गया था, केसरवाड़ी से होता हुआ मैं ग्लैशियर की तरफ जा रहा था। प्रातःकाल का समय था उस समय ग्लैशियर का बहाव कम होता है अतः सुविधा से उस पानी के बहाव को पार किया जा सकता है, यद्यपि सूर्य की किरणें चमकने लग गई थी और पानी का बहाव भी बढ़ गया था पर इतना अधिक बहाव नहीं था कि उसे पार न किया जा सके, अतः मैंने ईश्वर का नाम लेकर उसको पार करने का निश्चय कर लिया, यद्यपि मेरे मित्र मुझे मना करते रहे, मैं उस बहाव के साथ-साथ बहने लगा, तेज बहाव और उस पर ठंडा बर्फ का पानी, मेरे सारे शरीर को सुन्न किये जा रहा था, घबराहट में मुझे कुछ भी नहीं सूझा और मेरे मुँह से अनायास ही सुदर्शन कवच का पाठ प्रारम्भ हो गया। लगभग ३-४ मिनट के बाद मैं संज्ञा शून्य सा हो गया था, जब होश में आया तो मैंने देखा कि मैं अपने मित्रों से घिरा हुआ हूँ और मेरे मित्र मेरे सिर की तथा सीने की मालिश कर रहे है, पूछने पर उन्होंने बताया कि तुम्हें बहाव में बहते हुए देखकर हमारे तो हाथ-पांव फूल गये थे, और यह विश्वास हो गया था कि अब महेश किसी भी प्रकार से बच नहीं सकता, परन्तु कुछ ही गज बहाव में बहने के बाद तुम एक चट्टान से टकरा गए थे और तुम्हारा शरीर उस चट्टान पर टिक गया था, बड़ी कठिनता से उस चट्टान से तुम्हें किनारे तक ला सके है, और भगवान को लाख-लाख धन्यवाद है कि उसने तुम्हारी जान बचा ली। वे भगवान को धन्यवाद दे रहे थे और मैं सुदर्शन कवच को धन्यवाद दे रहा था जिसकी वजह से मैंने एक बार पुनः नया जन्म पाया था।

इसके बाद मैं जब-जब भी इस प्रकार की परेशानियों या समस्याओं से उलझा हूँ तो मेरा एकमात्र सहारा सुदर्शन कवच ही रहा है और मैं बाल-बाल उन संकटों से बचता रहा हूँ।

—o—

मेरे गाँव की ही घटना है किसन लाल कुम्हार अत्यन्त धर्म-परायण व्यक्ति है उसने मुझसे कोई एक स्तोत्र सीखने की जिद् की तो मैंने कुछ दिनों के प्रयत्न से उसे सुदर्शन कवच मौखिक याद करवा दिया वह कुछ पढ़ा लिखा भी था और शिक्षा क्रम में संस्कृत भी एक विषय रहा था, अतः आसानी से वह सीख गया।

पिछली गर्मियों की ही बात है उसने मुझे अपना संस्मरण सुनाते हुए बताया, कि एक दिन वर्षा में जब दिन भर के थके-मांदे बैलों को चरने के लिये रात को छोड़ दिया था, तो एक बैल अंधेरे की वजह से एक खड्डे में गिर गया और वह खड्डे में कुछ इस प्रकार गिरा कि प्रयत्न करने के बावजूद भी उसको निकालना आसान न रहा।

जब चरवाहे ने मुझे यह सूचना दी तो मैं घबरा गया। मेरी खेती का एक मात्र आधार ही मेरे बैल थे। उनमें से भी यदि एक बैल टूट जाता है तो मेरी दुनियाँ निश्चय ही अंधकारमय हो जायगी, मैंने हाथ में लालटेन ली, प्रभु से प्रार्थना की कि उस मूक पशु की रक्षा करना, ऐसा न हो कि गीदड़ उसको खा जाएँ और इस प्रकार मैं इस वर्ष अपनी खेती से वंचित हो जाऊँ। उस समय मुझे आप द्वारा बताई गई स्तुति याद आ गई, मैं लालटेन लिये मार्ग पर बढ़ रहा था, और मेरे होठों से सुदर्शन कवच का पाठ चल रहा था।

जंगल में मैं काफी घूमा पर मुझे वह बैल कहीं दिखाई नहीं दिया। वर्षा ऋतु होने से रास्ता भी भूल गया, तीन-चार घण्टे भटकने के बाद जब मुझे बैल नहीं मिला तो मैं घर लौट आया, और सारी रात सुदर्शन कवच का पाठ करता रहा। सुबह जब मैं गोशाला गया तो वहाँ पर भी मेरा बैल नहीं था, पर उस समय मेरे आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा, जब मैं वापिस घर लौटा तो मेरे घर के दरवाजे पर वही बैल खड़ा था, उसके शरीर पर किसी भी प्रकार के चोट के निशान नहीं थे, भयानक वर्षा की अंधेरी रात जंगल में खड्डे में गिर जाने के बाद भी वह बैल उस कीचड़ भरे खड्डे से कैसे निकल आया, और खड्डे में गिरने के बावजूद भी उसे किसी प्रकार की चोट नहीं लगी, यह परमात्मा की असीम कृपा थी या सुदर्शन कवच का ही प्रभाव था कि जिसने उस दिन

मेरे बैल की रक्षा कर ली, और इस प्रकार मैं एक गंभीर हानि से बच गया, उसके बाद कुम्हार का यह पक्का नियम बन गया कि वह तब तक भोजन नहीं करता था जब तक कि वह एक बार सुदर्शन कवच का पाठ नहीं कर लेता।

—०—

इसी प्रकार की एक घटना ठाकुर बलभद्र सिंह जी ने मुझे सुनाई थी, उनका मेरा परिचय काफी वर्षों का रहा है, एक बार भाद्रपद की अंधेरी रात में मूसलाधार वर्षा हो रही थी, बिजली जोरों से कड़क रही थी, और ठाकुर साहब अपने दो बच्चों तथा पत्नी को लेकर अपनी पुरानी हवेली में सो रहे थे, अचानक उन्हें कुछ झटका सा महसूस हुआ और ऐसा अनुभव हुआ जैसे यह पुरानी हवेली इस भयानक तूफान का सामना नहीं कर सकेगी, रात के लगभग दो बजे होंगे कि उन्हें विचार आया कि मुझे अपनी पत्नी तथा बच्चों को लेकर पूजा गृह में जाकर बैठ जाना चाहिए, वे उठे उनके मुँह से सुदर्शन कवच का पाठ चल रहा था, और ज्योंही वे अपनी पत्नी तथा पुत्र को लेकर कमरे से बाहर निकले कि वह कमरा तूफान के चोटों से भहरा कर गिर पड़ा, यदि एक क्षण भी विलम्ब होता तो ठाकुर साहब का पूरा परिवार उसी में दब कर हमेशा-हमेशा के लिये समाप्त हो जाता।

इसके बाद वे सारी रात पूजा गृह में बैठे रहे जो कि उसी कमरे से सटा हुआ था। पर इसका बाल भी बाँका नहीं हुआ था। वे आज भी इस बात पर आश्चर्य प्रकट कर रहे हैं, कि वह कौन सी शक्ति थी जिसने मुझे रात को दो बजे उठने के लिए बाध्य किया और पत्नी तथा बच्चों के साथ कमरे से बाहर निकलने की प्रेरणा दी? यदि मैं पाँच मिनट और उस कमरे में बिताता तो आज मैं यह अनुभव सुनाने के लिये जीवित नहीं रहता।

ठाकुर साहब की पूजा में केवल सुदर्शन कवच का पाठ ही है, इसके अलावा वे किसी प्रकार की कोई पूजा या विधि-विधान नहीं रखते, उन्होंने इस कवच से सम्बन्धित सैकड़ों घटनाएँ मुझे बताईं, उन्होंने कहा कि आज मैं यदि जीवित हूँ तो केवल इस

कवच के प्रभाव से ही। उन्होंने अपने जीवन की एक और घटना मुझे सुनाई थी।

एक बार ठाकुर साहब अपनी पत्नी, माता जी तथा बहिन को लेकर अपने ससुराल जा रहे थे, उस समय बैलगाड़ियों से आवागमन ज्यादा होता था और बैलगाड़ियाँ भी रात के ठंडे पहर में चलने में सुविधा अनुभव करती थीं।

ठाकुर साहब ने किस्सा बताते हुए कहा कि मेरी पत्नी तथा बहिन के शरीर पर काफी गहने थे, जब बैलगाड़ी मेरे गाँव से लगभग ८-१० मील दूर निकल गई तो मार्ग में सुस्ताने के लिये हमने पाँच-सात मिनट रुकने का निश्चय किया, अभी हम भली-प्रकार से ठहर ही नहीं पाये थे कि चार-पाँच लट्ठधारी न मालूम किधर से आये और हम लोगों को चारों ओर से घेर लिया, निश्चय ही उनका विचार हमें लूटने का था और यदि हम जोर जबरदस्ती करते तो प्राण भी ले लेने की उनकी नीयत थी। गाड़ी वाला अलग खड़ा थर-थर काँप रहा था। मेरे पास तलवार के अलावा कोई ऐसा शस्त्र नहीं था कि जिससे उन पाँच-छः लाठीधारियों से मुकाबला कर सकूँ। मैंने अपने आपको भगवान के भरोसे छोड़ दिया और मुँह से सुदर्शन कवच स्वतः ही प्रारम्भ हो गया।

पंडित जी ! आपको आश्चर्य होगा कि इस प्रकार दो-तीन मिनट भी नहीं बीते होंगे कि सामने वाले रास्ते से तेजी से दौड़ते हुए दो घुड़सवार आए, और उन्होंने उन चार-पाँच लाठी-धारियों से बिना कुछ कहे सुने ही मुकाबला करना शुरू कर दिया, मामूली से प्रतिरोध के बाद लट्ठधारी भाग खड़े हुए।

घुड़सवार बोले ठाकुर साहब आपको रात में बिना पूरी रक्षा के नहीं निकलना चाहिए था, आप तो हमें शायद नहीं पहचानते पर हम आपको जानते हैं, अब आप जाइये आपको मार्ग में किसी प्रकार से कोई तकलीफ नहीं होगी।

उस दिन से आज तक उन घुड़सवारों के वापिस दर्शन नहीं हुए और न मैं उन्हें पहचान सका कि वे कौन थे और वे मेरी मदद करके किधर चले गए ? उस दिन इस सुदर्शन कवच ने ही मेरी इज्जत धन तथा प्राणों की रक्षा की थी।

———०———

बाबू राम सहाय ने भी इसी प्रकार की एक घटना मुझे बताई थी, एक बार बाबू राम सहाय व्यापार के कार्य से चौबीस हजार रुपये लेकर बम्बई गये उन्हें योगेश्वरी किसी कार्य से जाना था। सेन्ट्रल स्टेशन पर उतर कर उन्होंने टैक्सी किराये पर की और अपने गन्तव्य स्थल की ओर बढ़ गए।

पर ऐसा प्रतीत हो रहा था कि टैक्सी ड्राइवर को कुछ ऐसा अनुमान हो गया था कि इस आसामी के पास भारी रकम है, अतः मार्ग में एक स्थान पर जान बूझकर उसने टैक्सी रोक दी और बताया कि टैक्सी में कुछ खराबी हो गई है। मैं अभी दूर किये देता हूँ। उस समय रात्रि के लगभग साढ़े-दस ग्यारह बजे थे। एक मिनट के बाद ड्राइवर ने मुँह से सीटी बजाई कि एक दूसरा व्यक्ति तहमद बाँधे मेरे सामने आ खड़ा हुआ और एक लम्बा सा चाकू दिखाते हुए मुझसे बोला तुरन्त पास में जो रुपया-पैसा है वह निकाल कर दे दो, अन्यथा यह पूरा का पूरा चाकू सीने में घुस जाएगा। मेरे हाथ में अटैची थी और उस अटैची में चौबीस हजार रुपये के नोट थे। मैंने उस अटैची को कस कर पकड़ ली। प्रभु को सहायता के लिये पुकारा और मुँह से स्वतः ही सुदर्शन कवच का पाठ प्रारम्भ हो गया।

अचानक मेरे हाथ को झटका लगा और मैंने देखा कि तहमद वाला व्यक्ति मेरे हाथ से अटैची छीनकर भाग रहा है, सम्भवतः टैक्सी ड्राइवर तथा उस व्यक्ति का कोई गुप्त समझौता था पर उस समय टैक्सी ड्राइवर को ऐसा लगा कि वह अकेले ही सारा रुपया लेकर भाग रहा है, अतः वह भी उसके पीछे भागा और आठ-दस कदम पर ही उसे दबोच लिया। दोनों आपस में गुत्थमगुत्था हो गये, अटैची हाथ से छिटक कर एक तरफ जा गिरी, और मैंने देखा कि दोनों ने चाकू निकाल लिये हैं। मैं साँस रोके इस घटना को भयातुर होकर देख रहा था, अचानक मैंने देखा कि ड्राइवर के हाथ का चाकू उस तहमद वाले व्यक्ति के सीने में पूरा का पूरा घुस गया है पर इस बीच तहमद वाले व्यक्ति का चाकू भी ड्राइवर के पेट में दो तीन बार घुस चुका था, दोनों अशक्त होकर पास-पास पड़े हुए थे खून बह रहा था, और कुछ ही मिनटों में तड़फ कर दोनों वहीं शान्त हो गये।

इसी समय एक पुलिस-मैन वहाँ आ गया, मैंने उसे सारी बात बताई, वह भला व्यक्ति था उसने अटैची उठाकर चुपचाप चले जाने को कहा, नहीं तो व्यर्थ में और कई समस्याएँ पैदा हो सकती हैं। भगवान को लाख-लाख धन्यवाद दिया और तुरन्त वहाँ से अटैची लेकर रवाना हो गया, उस दिन सुदर्शन कवच के प्रभाव से ही मैं अपने प्राण और धन की रक्षा कर सका।

वस्तुतः सुदर्शन कवच अपने आप में अद्भुत प्रभावकारी स्तुति है, मैंने सैकड़ों व्यक्तियों को इसके पाठ करने की सलाह दी है, और इन लोगों ने यह अनुभव किया है कि विपत्ति के समय इस कवच की कुछ पंक्तियों का ही पाठ हो जाता है तो वह तुरन्त प्रभाव देने लग जाता है। आवश्यकता इस बात की है कि इस कवच का पाठ नित्य एक बार अवश्य हो जिससे कि विपत्ति पड़ने पर यह कवच उसके लिये स्वतः सिद्ध हो, और इसका लाभ मिल सके।

वस्तुतः इस कवच का नित्य पाठ करना आज के युग में प्रत्येक व्यक्ति के लिये अनुकूल एवं श्रेष्ठकर ही माना जाना चाहिए।

———o———

सुदर्शन कवच

ओम अस्य श्री सुदर्शनकवचमालामन्त्रस्य। श्रीलक्ष्मीनृसिंहः परमात्मा देवता। मम सर्वकार्यसिद्धयर्थे जपे विनियोगः।
ओ क्षां अंगुष्ठाभ्यां नमः ओम ह्वीं तर्जनीभ्यां नमः।
ओम श्रीं मध्यमाभ्यां नमः। ओम सहस्रार अनामिकाभ्यां नमः।
ओम हुं फट् कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ओम स्वाहा करतल-कर पृष्ठाभ्यां नमः एवं हृदयादि।

ध्यानम् उपास्महे नृसिंहाख्यं ब्रह्मवेदान्तगोचरम्। भूयो लालित-संसार च्छेदहेतुं जगद्गुरुम्॥

मानस-पूजाः लं पृथिव्यात्मकं गन्ध समर्पयामि आकाशात्मकं पुष्पं समर्पयामि। यं वाय्वात्मकं धूपं समर्पयामि। रं वह्न्यात्मकं

दीपं समर्पयामि। वं अमृतात्मकं नैवेद्यं निवेदयामि। सं सर्वात्मकं ताम्बूलं समर्पयामि। नमस्करोमि।

ओम सुदर्शनाय नमः। ओम आं ह्वीं क्रों नमो भगवते प्रलयकालमहाज्वालाघोर-वीर-सुदर्शन-नारसिंहाय ओम महाचक्रराजाय महाबलाय सहस्रकोटिसूर्यप्रकाशाय सहस्रशीर्षाय सहस्राक्षाय सहस्रपादाय संकर्षणात्मने सहस्रदिव्यास्त्र-सहस्रहस्ताय सर्वतोमुखज्वलन-ज्वालामालावृताया विस्फुलिंगस्फोटपरिस्फोटित ब्रह्माण्ड भाण्डाय महापराक्रमाय महोग्रविग्रहाय महावीराय महाविष्णुरूपिणे व्यतीतकालान्तकाय महाभद्ररौद्रावताराय मृत्युस्वरूपाय किरीटहार-केयूर-ग्रैवेय-कटकांगुलीय-कटिसूत्र-मंजीरादिकनकमणि-खचित दिव्यभूषणाय महाभीषणाय महाभीक्षया व्याहततेजोरूप-निधेय रक्तचण्डान्तक मण्डितमदोरुकुण्डादुनिरीक्षमाण प्रत्यक्षाय ब्रह्मचक्र विष्णुचक्र-कालचक्र-भूमिचक्रे-जोरूपाय आश्रितरक्षाय।

ओम सुदर्शनाय विद्महे महाज्वालाय धीमहि। तन्नश्चक्रः प्रचोदयात् इति स्वाहा स्वाहा (दो बार) भो भो सुदर्शन नारसिंह मां रक्षय रक्षय।

ओम सुदर्शनाय विद्महे महाज्वालाय धीमहि। तन्नश्चक्रः प्रचोदयात्॥ (दो बार)

मम शत्रुन्नाशय नाशय। ओम सुदर्शनाय विद्महे महाज्वालाय धीमहि। तन्नश्चक्र प्रचोदयात्॥ (दो बार)

ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल चंड चंड प्रचंड प्रचंड स्फुर स्फुर प्रस्फुर घोर घोर घोरतर घोरतर चट चटं प्रचंट प्रचंट प्रस्फुट दह कहर नग भिंधि हुंधि खटट प्रचट फट जहि जहि पय सस प्रलयवा पुरुषाय रं रं नोत्रग्निरूपाय। ओम सुदर्शनाय विद्महे महाज्वालाय धीमहि। तन्नश्चक्रः प्रचोदयात् (दो बार)

भो भो सुदर्शन नारसिंह मां रक्षय रक्षय। ओम सुदर्शनाय विद्महे महाज्वालाय धीमहि। तन्नश्चक्रः प्रचोदयात्॥ (दो बार)

एहि एहि आगच्छ आगच्छ भूतग्रह प्रेतग्रह-पिशाचग्रह-दानवग्रह कृतिमग्रह-प्रयोगग्रह-आवेशग्रह-आगतग्रह-अनागतग्रहान ब्रह्मग्रह-रुद्र ग्रह-पाताल-निराकारग्रह-आचारअनाचरग्रह-नानजातिग्रह-भूचरग्रह-खेचरग्रह-वृक्षचरग्रह-पीक्षिचरग्रह-गिरिचरग्रह-श्मशानचरग्रह-जल-चरग्रह-कूपचरग्रह-देगारचलग्रह-शून्याचारचरग्रह-स्वप्नग्रह-दिवामनो

ग्रह-बालग्रह-मूकग्रह-मूलग्रह-बधिरग्रह-स्त्रीग्रह-पुरुषग्रह-यक्षग्रह-राक्षस ग्रह-प्रेतग्रह-किन्नरग्रह-साध्यचरग्रह-सिद्धचरग्रह कामिनीग्रह-मोहिनी-ग्रह-पद्मिनीग्रह-यक्षिणीग्रह-पक्षिणीग्रह-संध्याग्रह-नालग्रह-कालिका-देवीग्रह-भैरवग्रह-वेतालग्रह-गंधर्वग्रह प्रभृतसकलदुष्टग्रह रातान् आकर्षय आकर्षय आवेशय ड ड ठ ट ह्राप वाचय दह भस्मीकुरु उच्चाटय उच्चाटय ।

ओम सुदर्शन विद्महे महाज्वालाय धीमहि । तन्नश्चक्रः प्रचोदयात ।। (दो बार)

ओम क्षां क्षीं क्षूं क्षूं क्षौं क्षः भ्रां भ्रीं भ्रूं भ्रौं भ्रः ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः घ्रां घ्रीं घ्रूं घ्रैं घ्रें घ्रौं घ्रः ध्रीं ध्रीं ध्रूं ध्रें ध्रौं ध्रः ।

ओम सुदर्शनाय विद्महे महाज्वालाय धीमहि । तन्नश्चक्रः प्रचोदयात् ।। (दो बार)

एहि एहि सालवं संहारय शरभं क्रंदय विद्रावय विद्रावय भैरवं भीषय भीषय प्रत्यंगिरं मर्दय मर्दय चिदम्बरं बन्धय बन्धय चिदम्बरं ग्रासय ग्रासय शाम्भवी निवर्तय निवर्तय काली दह दह महिषासुरी छेदय छेदय दुष्टशक्ति निर्मूलय निर्मूलय हं हं हूं हूं मुच मुच परमंत्र-परयंत्र-परतंत्र कटुपर वादुपर वेदुपर जप पर होमपर सहस्रदीप-कोटिपूजां भेदय भेदय मारय मारय खंडय खंडय परकृतकं विषं निर्विषं कुरु कुरु अग्निमुखं प्रकाण्ड नानाविध-कनूमुख-वनमुख-प्रहान् चूर्णय चूर्णय मारी विदारय विदारय कूष्मां डं वैनायक मारी-चगणान् भेदय भेदय मंत्रापरस्मात्क विमोचय विमोचय अक्षिशूल-कुक्षिशूल-गुल्मशूल-पार्श्वशूल-पादशूल-सर्वाबाधां निवारय निवारय पांडुरोगं संहारय संहारय विषमज्वरं त्रासय त्रासय एकाहिकं द्वाहिकं त्र्याहिकं चातुर्थिकं पंचाहिकं षष्टज्वरं सप्तमज्वरं अष्टमज्वरं नवमज्वरं प्रेतज्वरं भूतज्वरं पिशाचज्वरं दानवज्वरं महाकालज्वरं दुर्गाज्वरं ब्रह्मविष्णुज्वरं मोहेश्वरज्वरं चतुःषष्टीयोगिनी ज्वरं गंधर्वज्वरं वेतालज्वरं एतान् ज्वाराग्रादाय नाशय दोषं मथय मथय दुरितं हर हर अनंतवासुकि तक्षक कालीय पद्म कुलिक कर्कोटक शंख पालाद्यष्टनागकुलानां विषं हन हन खं खं घं घं पाशुपतं नाशय नाशय शिखण्डिं खंडय खंडय ज्वालामालिनी निवर्तय निवर्तय प्रभृतदुष्टतंत्र स्फोटय सर्वेन्द्रियाणि स्तंभय स्तंभय खंडय खंडय प्रभृतदुष्टतंत्र स्फोटय भ्रामय भ्रामय महानारायणास्त्राय पंचाशद्वर्णरूपाय लल लल

शरणागतरक्षणाय हुं हुं गं वं मं वं शं शं अपूतमूर्तये सर्व्वं नमः ।

श्री सुदर्शनाय विद्महे महाज्वालाय धीमहि । तन्नश्चक्रः प्रचोदयात् ।। (दो बार)

श्री श्री सुदर्शन नारसिंह मां रक्षय रक्षय । ओम सुदर्शनाय विद्महे महाज्वालाय धीमहि । तन्नश्चक्रः प्रचोदयात् ।। मम सर्वा-रिष्टशांति कुरु कुरु सर्वतो रक्ष रक्ष ओम ह्रीं हुं फट् स्वाहा । ओम क्ष्रौं ह्रौं श्रीं सहस्रार हुं फट् स्वाहा ।

———o———

बगला मुखी कवच

बगला मुखी कवच अपने आप में विश्व-विख्यात है, क्योंकि इसकी उपासना और साधना कई व्यक्ति करते हैं, और इसका फल उठाते हैं। बगला मुखी कवच की बड़ी भारी विशेषता यह है कि यह कवच मुख्यतः शत्रु-हन्ता है। शत्रुओं को दमन करने, शत्रुओं को परासत करने तथा मुकदमें आदि में विजय प्राप्त के लिये इससे बढ़कर कोई कवच नहीं है, यदि कोई किसी षड्यन्त्र का शिकार हो गया हो तो उसे अवश्य ही बगला मुखी कवच का पाठ करना चाहिए। यों भी मेरी धारणा तो यह है कि शत्रु चाहे वह व्यक्ति के रूप में हो, चाहे रोग के रूप में और चाहे मानसिक परेशानियों के रूप में हो, उनको शान्त करने एवं परास्त करने के लिये इससे बढ़कर कोई उपाय नहीं है, सामान्यतः कोई न कोई शत्रु हमारे जीवन में बना ही रहता है, चाहे वह शत्रु दैहिक, दैविक अथवा भौतिक हो, अतः हमारे लिये यह जरूरी है कि हम नित्य एक बार बगला मुखी कवच का पाठ अवश्य करें।

नीचे मैं कुछ उदाहरण दे रहा हूँ जिनको बगला मुखी कवच से लाभ हुआ है और उनके जीवन में बगला मुखी कवच ने महत्व-पूर्ण हिस्सा अदा किया है।

दिल्ली के एक प्रसिद्ध बैंक के मैनेजर ऐसे ही एक षडयन्त्र के शिकार हो गये थे और उनकी कोई गल्ती न होने पर भी वे उस षड्यन्त्र में उलझ गये थे, इसका तुरन्त प्रभाव यह हुआ कि उन्हें नौकरी से निकाल दिया गया, उन दिनों उसकी प्रतिष्ठा तथा सामाजिक स्थिति डावाडोल हो रही थी। ऐसी ही दिनों में उनका टेलिफोन मेरे पास आया और उन्होंने बताया कि मैं व्यर्थ में ही उलझ गया हूँ जबकि इस प्रकार की कोई बात मेरे जीवन में नहीं रही है, न तो मैंने किसी प्रकार का गबन किया है और न इस षड्यन्त्र में किसी रूप में शामिल हूँ। पर पता नहीं ऐसी कौन-सी

यह स्थिति मेरे जीवन में आ गई है कि जिससे मैं इस चक्रव्यूह में उलझ गया हूँ। अब आप ही मेरे रक्षक है कोई ऐसा उपाय मुझे बताइये जिससे कि मैं इस चक्रव्यूह से छुटकारा पा सकूँ।

मैंने उसी समय टेलीफोन पर सूचित किया कि तुम्हें बगला मुखी कवच का पाठ नित्य से प्रारम्भ कर लेना चाहिए। इस कवच का ज्यादा प्रभाव तब होता है जबकि पाठ करते समय हम पीले वस्त्र ही धारण करें? ज्यादा अच्छा यही रहता है कि धोती तथा अंगोछा पीले रंग में रंगे हुए हों? जिस समय बगला मुखी कवच का पाठ करें उस समय यही वस्त्र पहने तो ज्यादा अच्छा रहता है।

दूसरे ही दिन से उसने मेरी आज्ञा को मानते हुए मेरे निर्देशों के अनुसार बगला मुखी कवच का पाठ आरम्भ कर दिया और उनको तथा उनके मित्रों को यह देखकर अत्यन्त आश्चर्य हुआ कि उसी दिन से उनकी स्थिति में सुधार होना प्रारम्भ हो गया, तथा मात्र एक महीने के भीतर-भीतर उनके ऊपर जितने चार्जेज थे, वे दूर हो गए तथा ससम्मान उन्हें पुनः नौकरी में ले लिया गया।

उस दिन से वे बगला मुखी कवच के अनन्य भक्त बन गये हैं और जब भी वे अपने किसी मित्र को किसी भी प्रकार की मुसीबत में देखते हैं तो उन्हें इसी कवच के पाठ करने की सलाह देते हैं, इस प्रकार उन्होंने अपने सैकड़ों मित्रों की सहायता की है, तथा इस कवच के माध्यम से उनकी समस्याओं को दूर करने में सहायक हुए हैं।

———०———

इन्दौर के रामसहायजी मेरे अच्छे परिचितों में से हैं। एक बार उनके ही एक रिश्तेदार ने उन पर झूठा मुकदमा दायर कर दिया और धीरे-धीरे स्थिति इतनी विकट हो गई कि ऐसा ज्ञात होने लगा कि इसका परिणाम राम सहाय जी के विरुद्ध हो जायगा और उन्हें अवश्य ही जेल हो जायगी।

जब वे इस प्रकार की गम्भीर मानसिक यन्त्रणाओं से ग्रस्थ थे तो वे जोधपुर मेरे पास आए और उन्होंने मुझे अपनी सारी स्थिति से अवगत कराया। साथ ही मुझे कहा कि यदि मैं इस मुकदमें

में सफल नहीं हुआ तो मुझे जेल अवश्य हो जायगी और जेल जाने की अपेक्षा मैं आत्म-हत्या को ज्यादा श्रेयस्कर समझता हूँ, ऐसा कहते-कहते उनकी आँखों से टप-टप आँसू बहने लगे।

मैंने उन्हें सान्त्वना दी और विश्वास दिलाया कि यदि आप सही रास्ते पर हैं तो आपका बाल भी बाँका नहीं हो सकता, अच्छा हो आप बगला मुखी कवच का एक पाठ नित्य करने लग जांय। मैंने उन्हें बगला मुखी कवच की एक प्रति दी और किस प्रकार से पाठ किया जाना चाहिए इसकी विधि भी समझाई।

लगभग महीने भर बाद उनका पत्र आया कि पंडित जी! आपने जो मुझे अद्भुत कवच दिया था उसी का यह प्रभाव है कि आज मैं मुकदमें में पूर्णतः सफल हो गया हूँ और एक बार पुनः मुझ में जीने की उमंग बढ़ गई है, वस्तुतः यह कवच अपने आप में अद्भुत है। इस मुकदमें में जीतने का एक प्रतिशत चान्स मेरा नहीं था। परन्तु जिस दिन से मैंने इस कवच का पाठ प्रारम्भ किया उस दिन से स्थिति मेरे अनुकूल होती चली गई और एक महीने के अन्दर ही अन्दर इसने मुझे चमत्कार दिखा दिया है और मैं अपने कार्य में पूर्णतः सफल हो गया हूँ।

इसके बाद उन्होंने अपने कई मित्रों एवं परिचितों को इस स्तोत्र के बारे में बताया है और अन्य लोगों ने भी इस स्तोत्र से पूरा-पूरा लाभ उठाया है।

———०———

जैसलमेर के खीची हरीसिंह ने भी इस स्तोत्र के बारे में एक आश्चर्यजनक किस्सा बताया था।

एक बार वे अपने भानजे की बारात से लौट रहे थे। बैलगाड़ियों में उनके परिवार की स्त्रियाँ तथा समान लदा हुआ था। जैसलमेर की तरफ लुटेरे घूमते ही रहते हैं। अतः प्रत्येक व्यक्ति साथ में शस्त्र रखता ही है, खीची जी के पास में एक बन्दूक थी, जब वे बीच मार्ग में थे तो लगभग १४-१५ डाकुओं ने उन्हें घेर लिया और चारों तरफ से उन्होंने बन्दूक उठा ली, यह सब इतने अप्रत्याशित रूप में हुआ कि उन्हें तथा

गाड़ीवालों को अपने शस्त्र उठाने का अवसर ही नहीं मिल सका।

खीची जी के पास और कोई साधन तो नहीं था उन्होंने उस समय प्रभु को स्मरण करना ही उचित समझा, और अनवरत रूप से बगला मुखी कवच का पाठ करना प्रारम्भ कर दिया, गाड़ी वाले तथा खीची जी ने लगभग पाँच सात मिनट के बाद ही देखा कि वे डाकू एक स्थान पर एकत्रित होकर कुछ विचार-विमर्श कर रहे हैं, और दो तीन मिनट बाद ही वे वहाँ से भाग खड़े हुए, तो उन्होंने खीची जी को ललकारा और न किसी प्रकार की मार-काट ही की। आश्चर्य की बात तो यह है कि उस समय स्त्रियों के गहने आदि मिलाकर एक लाख से ज्यादा का सामान गाड़ियों में लदा हुआ था, यदि मारकाट भी होती तो डाकू संख्या में ज्यादा थे। अतः उस दिन किसी का बचना सम्भव नहीं था, पर यह इस कवच का ही प्रभाव था कि वे सकुशल डाकुओं से बच सके और अपनी इज्जत को कायम रखते हुए अपने घर पहुँच सके।

वस्तुतः बगला मुखी कवच अपने आप में अत्यन्त विलक्षण है। यदि इससे संबंधित घटनाएँ लिखूँ तो काफी पृष्ठ भरे जा सकते हैं, पर मैंने यह अनुभव किया है कि यह कवच पूर्ण रूपेण शत्रुहन्ता है और शत्रुओं से निपटने के लिये इससे बढ़कर कोई उपाय नहीं है।

———०———

अथ बगला मुखी कवच प्रारम्भ्यते

श्रुत्वा च बगलापूजां स्तोत्रं चापि महेश्वर ॥ इदानीं श्रोतुमिच्छामि कवचं वद मे प्रभो ॥१॥ वैरिनाशकरं दिव्यं सर्वा शुभविनाशनम् ॥ शुभदं स्मरणात्पुण्यं त्राहि मां दुःखनाशनम् ॥२॥ श्री भैरव उवाच ॥ कवचं श्रृणु वक्ष्यामि भैरवीप्राणवल्लभम् ॥ पठित्वा धारयित्वा तु त्रैलोक्ये विजयी भवेत् ॥३॥

ओम अस्य श्री बगलामुखीकवचस्य नारद ऋषिः । अनुष्टुप्छन्दः । श्रीबगलामुखी देवता । लं बीजम । ऐं कीलकम् । पुरुषार्थचतुष्टयसिद्धये जपे विनियोगः ॥ ओम शिरो मे बगला पातु हृदयं काक्षरी परा । ओम ह्लीं ओम मे ललाटे च बगला वैरिनाशिनी ॥१॥ गदाहस्ता सदा पातु मुखं मे मोक्षदायिनी ॥ वैरिजिह्वाधरा पातु कण्ठं मे बगलामुखी ॥२॥ उदरं नाभिदेशं च पातु नित्यं परात्परा ॥ परात्परतरा पातु मम गुह्यं सुरेश्वरी ॥३॥ हस्तौ चैव तथा पादौ पार्वती परिपातु मे ॥ विवादे विषमे संग्रामे रिपुसंकटे ॥४॥ पीताम्बरधरा पातु सर्वांग शिवनर्तकी । श्रीविद्या समयं पातु मातंगी पूरिता शिवा ॥५॥ पातु पुत्रं सुतांश्चैव कलत्रं कालिका मम ॥ पातु नित्यं भ्रातरं मे पितरं शूलिनी सदा ॥६॥ रन्ध्रंहि बगलादेव्याः कवचं मन्मुखोदितम् ॥ न वै देयममुख्याय सर्वसिद्धिप्रदायकम् ॥७॥ पठनाद्धारणादस्य पूजनाद्वांछितं लभेत् ॥ इदं कवचमज्ञात्वा यो जपेद् बगलामुखीम् ॥८॥ पिबन्ति शोणितं तस्य योगिन्यः प्राप्य सादराः ॥ वश्ये चाकर्षणे चैव मारणे मोहने तथा ॥९॥ महाभये विपत्तौ च पठेद्वा पाठयेत्तु यः ॥ तस्य सर्वार्थसिद्धिः स्याद्भक्तियुक्तस्य पार्वति ॥१०॥

॥अथ बगला मुखी स्तोत्रम् ॥

श्री गणेशायनमः ॥ श्रीबगलामुखीदेव्यै नमः ॥ ओम अस्य श्रीबगलामुखीस्तोत्रस्य भगवान् नारद ऋषिः । बगलामुखी देवता । मम सन्निहितानां दुष्टानां विरोधिनां वाङमुखपदजिह्वाबुद्धिनां स्तम्भनार्थे श्रीबगलामुखीवरप्रसादसिद्धयर्थे जपे विनियोगः ॥ ओम ह्लीं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः ॥ ओम बगलामुखी तर्जनीभ्यां स्वाहा ॥ ओम सर्वदुष्टानां मध्यमाभ्यां वषट् ॥ ओम वाचं मुखं पदं स्तम्भय अनामिकाभ्यां हुम् ॥ ओम जिह्वां कीलय कनिष्ठिकाभ्यां वौषट् ॥ ओम बुद्धिं नाशय ओम ह्लीं स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां फट् ॥ एवं हृदयादिषु ॥

अथ ध्यानम् ॥ सौवर्णासनसंस्थितां त्रिनयनां पीतांशुकोल्लासिनीं हेमाभांगरुचिं शशांकमुकुटां सच्चम्पकस्रग्युताम् ॥ हस्तैर्मुद्गरपाशबद्धरसनां संबिभ्रतीं भूषणैर्व्याप्तांगीं बगलामुखीं

त्रिजगतां संस्तम्भिनीं चिन्तये ॥१॥

अथ मन्त्रः ॥ ओम ह्लीं बगलामुखि सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय जिह्वां कीलय बुद्धिं नाशय ह्लीं ओम स्वाहा ॥

अथ स्तोत्रम ॥ ओम मध्ये सुधाब्धिमणिमण्डपरत्नवेद्यां सिंहासनोपरिगतां परिपीतवर्णाम् ॥ पीताम्बराभरणमाल्यविभूषितांगीं देवीं भजामि धृतमुद्गरवैरिजिह्वाम् ॥१॥ जिह्वाग्रमादाय करेण देवीं वामेन शत्रून् परिपीडयन्तीम् ॥ गदाभिघातेन च दक्षिणेन पीताम्बराढ्यां द्विभुजां भजामि ॥२॥ ओम चलत्कनककुण्डलोल्लसितचारुगण्डस्थलीं लसत्कनकचम्पकद्युतिमदिन्दुबिम्बाननाम् गदाहतविपक्षकांकलितलोलजिह्वांचलां स्मरामि बगलामुखीं विमुखवाङ्मुखस्तम्भिनीम् ॥३॥ पीयूषोदधिमध्यचारु विलसद्रक्तोत्पले मण्डपे ॥ तत्सिंहासनमौलिपातितरिपुं प्रेतासनाध्यासिनीम् ॥ स्वर्णाभां करपीडितारिरसनां भ्राम्यद्गदां बिभ्रतीमित्थं ध्यायति यान्ति तस्य विलयं सद्यो थ सर्वापदः ॥४॥ देवि त्वच्चरणाम्बुजार्चनकृते यः पीतपुष्पांजलिम् भक्त्या वामकरे निधाय च पुनर्मंत्रं मनोज्ञाक्षरम् ॥ पीठध्यानपरो थ कुम्भकवशाद् बीजं स्मरेत्पार्थिवं तस्यामित्रमुखस्य वाचिहृदये जाड्यं भवेत् तत्क्षणात् ॥५॥ वादी मूकति रंकति क्षितिपतिर्वैश्वानरः शीतति क्रोधी शाम्यति दुर्जनः सुजनति क्षिप्रानुगः खंजति ॥ गर्वी खर्वति सर्वविच्च जडति त्वद्यन्त्रणायन्त्रितः श्रीनित्ये बगलामुखि प्रतिदिनं कल्याणि तुभ्यं नमः ॥६॥ मन्त्रस्यात्मबलं विपक्षदलने स्तोत्रं पवित्रं च ते यन्त्रं वादिनियन्त्रणं त्रिजगतां जैत्रंच चित्रंच ते ॥ मातः श्रीबगलेति नाम ललितं यस्यास्ति जन्तोर्मुखे त्वन्नामग्रहणेन संसदि मुखस्तम्भो भवेद्वादिनाम् ॥७॥ दुष्टस्तम्भनमुग्रवैरिशमनं दारिद्र्यविद्रावणं भूभृद्भीशमनं चलन्मृगदृशां चेतः समाकर्षणम् ॥ सौभाग्यैकनिकेतनं समदृशः कारुण्यपूर्णामृतं मृत्योर्मारणमाविरस्तु पुरतो मातस्त्वदीयं वपुः ॥८॥ मातर्भंजय मे विपक्षवदनं जिह्वां च संकीलय ब्राह्मीं मुद्रय मुद्रयाशु धिषणामुग्रां गतिं स्तम्भय ॥ शत्रूंश्चूर्णय देवि तीक्ष्णगदया गौरांगि पीताम्बरे विघ्नौघं बगले हर प्रणमतां कारुण्यपूर्णेक्षणे ॥९॥ मातर्भैरवि-भद्रकालि विजये वाराहि विश्वाश्रये श्रीविद्ये समये महेशि बगले कामाक्षिवामे रमे ॥ मातंगि त्रिपुरे परात्परतरे स्वर्गापवर्गप्रदे दासो हं शरणागतः करुणया विश्वेश्वरि त्राहि

माम् ॥१०॥ संरम्भे चोरसंघे प्रहरणसमये बन्धने वारिमध्ये विद्यावादे विवादे प्रकुपितनृपतो दिव्यकाले निशायाम् ॥ वश्यत्वे स्तम्भने वा रिपुवधसमये दुर्विवादे रणेवा गच्छंस्तिष्टंस्त्रिकालं यदि पठति शिवं प्राप्नुयादशु धीरः ॥११॥ नित्यं स्तोत्रमिदं पवित्रमिह यो देव्याः पठत्यादराद् धृत्वान्यत्र इदं तथैव समरे वाहो करे वा गले ॥ राजानो प्यरयो मदान्धकरिणः सर्पां मृगेन्द्रादिकास्ते वै यान्ति विमोहिता रिपुगणा लक्ष्मी : स्थिरा सर्वतः ॥१२॥ त्वं विद्या परमा त्रिलोकजननी विघ्नौघसंछेदिनी योषाकर्षकारिणी त्रिजगतामानन्दसंवर्द्धिनी ॥ दुष्टोच्चटनकारिणी जनमनः संमोहसंदायिनी जिह्वां कीलय भैरवी विजयते ब्रह्मास्त्रविद्या परा ॥१३॥ विद्या लक्ष्मीः सर्वसौभाग्यमायुः पुत्रं पौत्रैः सर्वसाम्राज्यसिद्धिः ॥ मानं भागो वश्यमारोग्यसौख्यं प्राप्ते तत्तद्भूतले स्मिन्नरेण ।१४॥ यत्कृतं जपसन्नाहं गदितं परमेश्वरि ॥ दुष्टानां निग्रहार्थास्त्र तद्गृहाण नमो स्तुते ॥१५॥ ब्रह्मास्त्रमिति विख्यातं त्रिषु लोकेषु विश्रुतम् ॥ गुरुभक्ताय दातव्यं न देयं यस्य कस्यचित् ।१६॥ पीताम्बरांच द्विभुजां त्रिनेत्रां गात्रकोज्जवलाम् ॥ शिलामुद्गरहस्तां च स्मेरत्तां बगलामुखीम् ॥१७॥

—o—

: सौभाग्याष्टोत्तरशतनाम स्तोत्रम् :

सौभाग्याष्टोत्तरशतनामस्तोत्र मुख्य रूप से स्त्रियों के लिये है। इसके बारे में शास्त्रों में वर्णित है कि जो स्त्री अपने सौभाग्य को अक्षुण्ण देखना चाहती है या जिसे अपना पति प्रिय है, या जो पूर्ण गृहस्थ सुख देखना चाहती है उसे इस स्तोत्र का पाठ अवश्य ही करना चाहिए, क्योंकि यह स्तोत्र उसके सुख-सौभाग्य की रक्षा के लिए तथा पति के स्वास्थ्य के लिये पूर्णतः प्रभावकारी है। जब भी कोई महिला अपने पति को परेशानी में देखें या किसी समस्या से ग्रस्त देखें तो उसे इस स्त्रोत का पाठ नियमित रूप से प्रारम्भ कर देना चाहिए। निश्चय ही कुछ समय बाद ही वह देखेगी कि उसके पति तत्कालिक समस्या से मुक्त हो गए हैं और काफी लाभदायक स्थिति में हैं।

इससे सम्बन्धित सैकड़ों घटनाएँ मेरे मानस में घूम रही हैं यद्यपि मैं उन सभी घटनाओं को यहां लिपिबद्ध नहीं कर सकता परन्तु उनमें से कुछ घटनाएं पाठकों के सामने रखना आवश्यक समझता हूँ।

इलाहाबाद की तरफ मैं यात्रा पर था उन्हीं दिनों एक महिला मुझे मिली और उसने करुणा भरे स्वर में मुझे बताया कि मैं संसार में सबसे अधिक दुखी महिला हूँ क्योंकि मुझे अपने पति का सुख नहीं के बराबर मिल रहा है, इस समय मेरे तीन बच्चे हैं फिर भी मेरे पति किसी अन्य स्त्री के सम्पर्क में है जिसके कारण वे न तो समय पर घर आते हैं और न मुझसे बातचीत ही करते है, लगभग एक साल बीत गया है मैं सब तरीकों से उन्हें समझा कर हार चुकी हूँ मेरे पीहर की तरफ से भी दबाव डाला गया है। मेरे ससुराल वालों ने भी उन्हें कई तरीकों से समझाने की चेष्टा की है पर उन पर किसी प्रकार का कोई प्रभाव नहीं पड़ता। अब तो वे मुझे मारने-पीटने भी लग गये हैं।

वस्तुतः उस महिला का सौभाग्य खतरे में पड़ गया था वह

माम् ॥१०॥ संरम्भे चोरसंघे प्रहरणसमये बन्धने वारिमध्ये विद्यावादे विवादे प्रकुपितनृपतो दिव्यकाले निशायाम् ॥ वश्यत्वे स्तम्भने वा रिपुवधसमये दुर्विवादे रणेवा गच्छंस्तिष्टंस्त्रिकालं यदि पठति शिवं प्राप्नुयादशु धीरः ॥११॥ नित्यं स्तोत्रमिदं पवित्रमिह यो देव्याः पठत्यादराद् धृत्वान्यत्र इदं तथैव समरे वाहो करे वा गले ॥ राजानो प्यरयो मदान्धकरिणः सर्पा मृगेन्द्रादिकास्ते वै यान्ति विमोहिता रिपुगणा लक्ष्मी : स्थिरा सर्वतः ॥१२॥ त्वं विद्या परमा त्रिलोकजननी विघ्नौघसंश्छेदिनी योषाकर्षकारिणी त्रिजगतामानन्दसंवर्द्धिनी ॥ दुष्टोच्चटनकारिणी जनमनः संमोहसंदायिनी जिह्वां कीलय भैरवी विजयते ब्रह्मास्त्रविद्या परा ॥१३॥ विद्या लक्ष्मीः सर्वसौभाग्यमायुः पुत्रं पौत्रैः सर्वसाम्राज्यसिद्धिः ॥ मानं भागो वश्यमारोग्यसौख्यं प्राप्ते तत्तद्भूतले स्मिन्नरेण ।१४॥ यत्कृतं जपसन्नाहं गदितं परमेश्वरि ॥ दुष्टानां निग्रहार्थास्त्र तद्गृहाण नमो स्तुते ॥१५॥ ब्रह्मास्त्रमिति विख्यातं त्रिषु लोकेषु विश्रुतम् ॥ गुरुभक्ताय दातव्यं न देयं यस्य कस्यचित् ।१६॥ पीताम्बरांच द्विभुजां त्रिनेत्रां गात्रकोज्जवलाम् ॥ शिलामुद्गरहस्तां च स्मेरत्तां बगलामुखीम् ॥१७॥

—०—

: सौभाग्याष्टोत्तरशतनाम स्तोत्रम् :

सौभाग्याष्टोत्तरशतनामस्तोत्र मुख्य रूप से स्त्रियों के लिये है। इसके बारे में शास्त्रों में वर्णित है कि जो स्त्री अपने सौभाग्य को अक्षुण्ण देखना चाहती है या जिसे अपना पति प्रिय है, या जो पूर्ण गृहस्थ सुख देखना चाहती है उसे इस स्तोत्र का पाठ अवश्य ही करना चाहिए, क्योंकि यह स्तोत्र उसके सुख-सौभाग्य की रक्षा के लिए तथा पति के स्वास्थ्य के लिये पूर्णतः प्रभावकारी है। जब भी कोई महिला अपने पति को परेशानी में देखे या किसी समस्या से ग्रस्त देखे तो उसे इस स्त्रोत का पाठ नियमित रूप से प्रारम्भ कर देना चाहिए। निश्चय ही कुछ समय बाद ही वह देखेगी कि उसके पति तत्कालिक समस्या से मुक्त हो गए हैं और काफी लाभदायक स्थिति में है।

इससे सम्बन्धित सैकड़ों घटनाएं मेरे मानस में घूम रही है यद्यपि मैं उन सभी घटनाओं को यहां लिपिबद्ध नहीं कर सकता परन्तु उनमें से कुछ घटनाएं पाठकों के सामने रखना आवश्यक समझता हूं।

इलाहाबाद की तरफ मैं यात्रा पर था उन्हीं दिनों एक महिला मुझे मिली और उसने करुणा भरे स्वर में मुझे बताया कि मैं संसार में सबसे अधिक दुखी महिला हूं क्योंकि मुझे अपने पति का सुख नहीं के बराबर मिल रहा है, इस समय मेरे तीन बच्चे है फिर भी मेरे पति किसी अन्य स्त्री के सम्पर्क में हैं जिसके कारण वे न तो समय पर घर आते हैं और न मुझसे बातचीत ही करते हैं, लगभग एक साल बीत गया है मैं सब तरीकों से उन्हें समझा कर हार चुकी हूं मेरे पीहर की तरफ से भी दबाव डाला गया है। मेरे ससुराल वालों ने भी उन्हें कई तरीकों से समझाने की चेष्टा की है पर उन पर किसी प्रकार का कोई प्रभाव नहीं पड़ता। अब तो वे मुझे मारने-पीटने भी लग गये है।

वस्तुतः उस महिला का सौभाग्य खतरे में पड़ गया था वह

यह अनुभव कर रही थी कि उसके बच्चे इस प्रकार की घटनाओं को देखकर क्या सोचते होंगे ? उनके कोमल हृदय पर इसका क्या प्रभाव पड़ता होगा ? इसके साथ ही जब वह देखती कि मुझे पति का सुख नहीं के बराबर है तो उसकी आत्मा का क्रन्दन क्या स्वाभाविक नहीं था ?

मैंने उसकी सारी करुणगाथा को सुनकर सलाह दी कि इसके लिये तान्त्रिकों अथवा साधुओं के चक्कर में पड़ने से कोई फायदा नहीं है ? अच्छा तो यह हो कि आप सौभाग्याष्टोत्तरशतनाम स्तोत्र का एक पाठ नित्य करें। मैंने बाजार से लाकर एक प्रति भी उन्हें भेंट दी। साथ ही किस प्रकार से पाठ किया जाना चाहिए इसकी विधि भी समझाई। पाठकों को यह जानकर आश्चर्य होगा कि वह जिन समस्याओं से जूझ रही थी उनसे वह मात्र एक महीने में मुक्त हो गई। उसके पति ने जिस अन्य स्त्री से सम्पर्क किया हुआ था, किसी कारण वश उन दोनों में भयंकर लड़ाई हो गई, और हमेशा-हमेशा के लिये उनका सम्पर्क टूट गया, जब उससे सम्पर्क समाप्त हो गये तो उनका रुझान अपनी पत्नी की तरफ बढ़ा, वह अपनी पत्नी में रुचि लेने लगा और गृहस्थ की तरफ ध्यान देने लगा और महीने भर के अन्दर-अन्दर उसका खोया हुआ सौभाग्य उसे वापस मिल गया।

वह आज भी इस स्तोत्र को संसार के सबसे अच्छे स्तोत्रों में मनाती है। इस स्तोत्र के माध्यम से कई दुखी बहिनों की उसने सहायता की है।

———०———

अहमदाबाद की घटना है। जब मैं अहमदाबाद में था तो एक दिन एक गुजराती महिला मुझसे मिलने के लिए आई, वह करीब पांच दिनों तक मुझसे मिलने आती रही पर मुंह से कुछ भी नहीं कहती, तो एक दिन मैंने पूछा कि आप क्या पूछने आई हैं ? क्या कोई आपको तकलीफ है ? तुम्हारे पति का स्वास्थ्य तो अच्छा है न ? अपने पति का नाम सुनते ही उसके आंखों से अजस जलधारा बरसने लगी। थोड़ी देर बाद उसकी हिचकियां बंध गईं और

बताया कि वस्तुतः मेरे पति एक असाध्य रोग से ग्रस्त हैं। मेरे विवाह हुए अभी तीन ही वर्ष बीते हैं, विवाह से पूर्व वे पूर्णतः स्वस्थ थे, और उसके बाद न जाने क्यों बीमार पड़ गए और आज तीन साल से खाट में पड़े हुए हैं। मेरे ससुराल वालों ने और अन्य लोगों ने मुझे बदनाम करना शुरू कर दिया है कि मैं जिस दिन से इस घर में आई हूं उसी दिन से मेरे पति बीमार हैं और यह बीमारी मेरे ही कारण है। मैंने एक दिन भी अपने पति का सुख नहीं भोगा। दुःखी होकर आज से छः महीने पहले मैंने आत्म-हत्या करने की भी सोची पर उसमें भी मैं सफल नहीं हो सकी। इस बीच में कई तान्त्रिकों के पास तथा साधुओं के पास भटक चुकी हूं और लगभग सभी ने मुझसे रुपया ही ऐंठना अच्छा समझा, मेरी मदद किसी ने नहीं की। अब मैं अन्तिम रूप से आपके पास आई हूं क्योंकि आपका नाम काफी सुना है अब भी यदि मेरे लिये कुछ अनुकूल नहीं हो सका तो मैं निश्चय ही अपने प्राणों को समाप्त कर दूंगी।

मैंने उसका हाथ देखा, उसके पति की आयु काफी थी, मैंने उसे इसी स्तोत्र के पाठ करने की सलाह दी और बताया कि शीघ्र ही आपको इस सम्बन्ध में लाभ मिलेगा और आज से ही आप यह अनुभव करेंगी कि आपके पति पहले की अपेक्षा स्वस्थ होते जा रहे हैं।

उसने उसी दिन से इस स्तोत्र का पाठ आरम्भ कर दिया। लगभग मैं इस घटना को भूल ही चुका था कि छः-सात महीनों के बाद एक दिन सुबह वे दोनों पति-पत्नी जोधपुर में मेरे घर बिना किसी पूर्व सूचना के आ गये। मैंने उन्हें तुरन्त पहचान लिया और पूछा कि अब कैसी स्थिति है, उन्होंने बताया कि इनके इलाज पर मैं लगभग पचास हजार रुपये व्यय कर चुकी पर उससे किसी प्रकार का कोई फायदा नहीं हुआ था, आपने मुझे स्तोत्र दिया था वह अपने आप में अद्भुत था और उस स्तोत्र का पाठ मैंने उसी दिन से प्रारम्भ कर दिया था जिस दिन आपने मुझे दिया था, आज लगभग छः महीने बीते हैं मेरे पति पूर्णतः स्वस्थ हैं और इसका उदाहरण आपके सामने है कि मैं और मेरे पति आपकी सेवा में प्रस्तुत हैं।

मैंने उन्हें आशीर्वाद दिया और सलाह दी कि इस स्तोत्र का नित्य एक पाठ अपने जीवन में करती रहें आपके जीवन में गृहस्थ से सम्बन्धित कोई परेशानी नहीं आ पाएगी।

वस्तुत: स्त्रियों के लिए इससे बढ़कर कोई स्तोत्र या पाठ अथवा विधान नहीं है, पति का स्वास्थ्य ठीक नहीं हो, उनकी उन्नति में बाधा आ रही हो, आर्थिक दृष्टि से परेशान हो, स्वभाव में चिड़-चिड़ापन आ गया हो, पत्नी से प्रेम न रहा हो, किसी दूसरी स्त्री के सम्पर्क में हो, या अन्य किसी प्रकार की बीमारी या बुरी आदत हो अथवा उसके गृहस्थ सुख में कोई बहुत बड़ी बाधा आ रही हो, तो उस महिला को मेरा परामर्श है कि इस स्तोत्र का पाठ प्रारम्भ कर दें और तब तक नित्य एक पाठ करती रहे जब तक कि उसे मनोवांछित अवसर न मिल जाये या जैसा वह चाहती है वैसा न हो जाय। प्रत्येक सौभाग्यवती स्त्री के लिये इस स्तोत्र का पाठ आवश्यक ही नहीं अनिवार्य समझना चाहिए।

———०———

अथ सौभाग्याष्टोत्तरशतनाम स्तोत्रम्

निशम्यैतज्जामदग्न्यो माहात्म्यं सर्वतो धिकम्।
स्तोत्रस्य भूय: पप्रच्छ दत्तात्रेयं गुरुत्तमम् ॥१॥
भगवंस्त्वन्मुखाम्भोजनिर्गमद्वाक्सुधारसम्।
पिबत: श्रोतमुखतो वर्धते नुक्षण तृषा ॥२॥
अष्टोत्तरशतं नाम्नां श्रीदेव्या यत्प्रसादत:।
काम: सम्प्राप्तवांल्लोके सौभाग्यं सर्वमोहनम् ॥३॥
सौभाग्यविद्यावर्णानामुद्वारो यत्र संस्थित:।
तत्समाचक्ष्व भगवन् कृपया मयि सेवके ॥४॥
निशम्यैवं भार्गवोक्ति दत्तात्रेयो दयानिधि:।
प्रोवाच भार्गवं रामं मधुराक्षरपूर्वकम् ॥५॥
श्रृणु भार्गव यत्पृष्टं नाम्नामष्टोत्तरं शतम्।
श्रीविद्यावर्णरत्नानां निधानमिव संस्थितम् ॥६॥

श्री देव्या बहुधा सन्ति नामानि श्रृणु भार्गव।
सहस्रशतसंख्यानि पुराणेष्वागमेषु च ॥७॥
तेषु सारतरं ह्येतत् सौभाग्याष्टोत्तरात्मकम्।
यदुवाच शिव: पूर्वं भवान्यै बहुधार्थित: ॥८॥
सौभाग्याष्टोत्तरशतनामस्तोत्रस्य भार्गव।
ऋषिरुक्त: शिवश्छन्दो नुष्टुप् श्रीललिताम्बिका ॥९॥
देवता विन्यसेत् कूटत्रयेणावर्त्य सर्वत:।
ध्यात्वा सम्पूज्य मनसा स्तोत्रमेतदुदीरयेत् ॥१०॥

अथ नाममन्त्रा:

ओम कामेश्वरी कामशक्ति: कामसौभाग्यदायिनी।
कामरूपा कामकला कामिनी कमलासना ॥११॥
कमला कल्पनाहीना कमनीयकलावती।
कमलाभारतीसेव्या कल्पिताशेष संस्कृति: ॥१२॥
अनुत्तरानघानन्ताद्भुतरूपानलोद्भवा।
अतिलोकचरित्रातिसुन्दर्यतिशुभप्रदा ॥१३॥
अघहन्त्र्यतिविस्तारार्चनतुष्टामितप्रभा।
एकरूपैकवीरैकनाथैकान्तार्चनाप्रिया ॥१४॥
एकैकभावतुष्टैकरसैकान्तजनप्रिया।
एधमानप्रभावैधद्भक्तपातकनाशिनी ॥१५॥
एलामोदमुखैनो द्रिशक्रायुधसमस्थिति:।
ईहाशून्येप्सितेशादिसेव्येशानवरांगना ॥१६॥
ईश्वराज्ञापिकेकारभाव्येप्सितफलप्रदा।
ईशानेतिहरेक्षेषदरुणाक्षीश्वरेश्वरी ॥१७॥
ललिता ललनारूपा लयहीना लसत्तनु:।
लयसर्वा लयक्षोणिर्लयकर्त्री लयात्मिका ॥१८॥
लघिमा लघुमध्याढ्या ललमाना लघुद्रुता।
हयारूढा हतामित्रा हरकान्ता हरिस्तुता ॥१९॥
हयग्रीवेष्टदा हालाप्रिया हर्षसमुद्धता।
हर्षणा हल्लकाभाङ्गी हस्त्यन्तैश्वर्यदायिनी ॥२०॥

हल्हस्तार्चितपदा हविर्दानप्रसादिनी ।
रामा रामार्चिता राज्ञी रम्या रवमयी रतिः ॥२१॥
रक्षिणी रमणी राका रमणीमण्डलप्रिया ।
रक्षिताखिललोकेशा रक्षोगणनिषूदिनी ॥२२॥
अम्बान्तकारिण्यम्भोजप्रियान्तकभयंकरी ।
अम्बुरूपाम्बुजकराम्बुजजातवरप्रदा ॥२३॥
अन्तः पूजाप्रियान्त :स्वरूपिण्यन्तर्वचोमयी ।
अन्तकारातिवामांकस्थितान्तस्सुखरूपिणी ॥२४॥
सर्वज्ञा सर्वगा सारा समा समसुखा सती ।
संततिः संतता सोमा सर्वा सांख्या सनातनी ओम ॥२५॥

फलश्रुतिः

एतत ते कथितं राम नाम्नामष्टोत्तरं शतम् ।
अतिगोप्यमिदं नाम्नः सर्वतः सारमुद्धृतम् ॥२६॥
एतस्य सदृशं स्तोत्रं त्रिषु लोकेषु दुर्लभम ।
अप्रकाश्यमभक्तानां पुरतो देवताद्विषाम् ॥२७॥
एतत् सदाशिवो नित्यं पठन्त्यन्ये हरादयः ।
एतत्प्रभावात् कन्दर्पस्त्रैलोक्यंजयति क्षणात् ॥२८॥
सौभाग्याष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं मनोहरम् ।
यस्त्रिसंध्यं पठेन्नित्यं न तस्य भुवि दुर्लभम् ॥२९॥
श्रीविद्योपासनवतामेतदावश्यक मतम् ।
सकृतेतत् प्रपठतां नान्यत् कर्म विलुप्यते ॥३०॥
अपठित्वा स्तोत्रमिदं नित्यं नैमित्तिकं कृतम् ।
व्यर्थीभवति नग्नेन कृतं कर्म यथा तथा ॥३१॥
सहस्रनामपाठादावशक्तस्त्वेतदीरयेत् ॥
सहस्रनामपाठस्य फलं शतगुणं भवेत् ॥३२॥
सहस्रधा पठित्वा तु वीक्षणान्नाशयेद्रिपून् ।
करवीररक्तपुष्पैर्हुत्वा लोकान् वशं नयेत् ॥३३॥
स्तम्भयेत् पीतकुसुमैर्नीलैरुच्चाटयेद रिपून ।
मरिचैर्विद्वेषणाय लवगैर्व्याधिनाशने ॥३४॥

सुवासिनीर्ब्राह्मणान् वा भोजयेद् यस्तु नामभि : ।
यश्च पुष्पैः फले र्वापि पूजयेत् प्रतिनामभि : ॥३५॥
चक्रराजे यथान्यत्र स वसेच्छ्रीपुरे चिरम् ।
यः सदा वर्तयन्नास्ते नामाष्टशतमुत्तमम् ॥३६॥
तस्य श्रीललिता राज्ञी प्रसन्ना वांछितप्रदा ।
एतते कथितं राम शृणु त्वंप्रकृतं ब्रुवे ॥३७॥

इति श्रीत्रिपुरारहस्ये श्रीसौभाग्याष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

सुन्दर काण्ड

रामचरित मानस भक्ति का अन्यतम ग्रंथ है। वास्तव में देखा जाय तो डूबती हुई हिन्दू जाति को बचाने में रामचरित मानस ने जितना सहयोग दिया है उतना अन्य किसी भी धार्मिक ग्रंथ ने नहीं। रामचरित मानस हिन्दू जाति का सम्बल बना, इसमें उसे अपनी डूबती हुई स्थिति से पार पाने का उपाय सूझा इसके साथ ही उसे इसके माध्यम से सर्वशक्तिमान राम के द्वारा एक ऐसा नायक मिला जो सभी दृष्टियों से पापियों का संहार करने वाले तथा विपत्ति में भक्ति की लाज रखने वाले सिद्ध हुए। सुन्दर काण्ड इसी रामचरित मानस का एक भाग है।

अधिकांश व्यक्ति नित्य सुन्दर काण्ड का पाठ करते हैं, उनके शब्दों में यह एक ऐसा स्तोत्र है जो सभी तरह की विपत्तियों को मिटाने में सक्षम एवं सहायक है। उत्तरी भारत में जब भी किसी परिवार पर कोई कष्ट आता है या वह किसी प्रकार की परेशानी को अनुभव करता है तो वह सुन्दर काण्ड का पाठ करता है। सुन्दर काण्ड रामचरित मानस का मात्र एक भाग ही नहीं है अपितु अपने आप में एक पूर्ण मंत्र-राज है, जिसके कारण से हम आने वाली विपत्तियों से छुटकारा पा सकते हैं तथा अपने जीवन में सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

मैंने कई बार भारत-भ्रमण किया है और लाखों करोड़ों व्यक्तियों से मिलता रहा हूं। अधिकांश व्यक्तियों को मैंने सुन्दर काण्ड का पाठ करते हुए देखा है और उनके हृदय में इसके प्रति अपूर्व श्रद्धा, विश्वास एवं भक्ति पाई है, उन्होंने ऐसे कई अनुभव मुझे सुनाए हैं जिनसे यह प्रतीत होता है कि सुन्दर काण्ड का नित्य पाठ करने से हम आने वाली कई मुसीबतों से छुटकारा पा सकते हैं।

मैं अपने कुछ अनुभव जो कि अपने पाठकों एवं परिचितों

से सुने हैं नीचे की पंक्तियों में दे रहा हूँ :

जोधपुर-बीकानेर रेलवे लाइन पर काम करने वाले एक गार्ड ने मुझे अपना अनुभव सुनाते हुए बताया कि एक बार मैं कठिन मुसीबत में उलझ गया, मैं मालगाडी लेकर बीकानेर जा रहा था उस समय मेरे चार्ज में अत्यन्त बहुमूल्य सामग्री थी और कुछ सोने चाँदी की सिल्लियां भी पार्सल में थी, मार्ग में इतने जोर का अन्धड आया और तूफान का वेग इतना तेज अनुभव होने लगा कि किसी भी समय गाड़ी उलट सकती थी इसके साथ ही मैंने बियावान जंगल में गाड़ी को रोकना भी उचित न समझा, मेरे एक दो मित्रों ने मुझे सलाह दी कि गाड़ी को किसी सुरक्षित स्थान पर ठहरा दी जाय। परन्तु सुरक्षित स्थान तक पहुँचना भी अपने आप में अत्यन्त कठिन हो गया था, मैंने ड्राइवर से परामर्श किया तो उसने बताया कि यदि गाड़ी इस जंगल में रोकी जाती है तो किसी भी समय दुर्घटना घटित हो सकती है या लुटेरे लूट सकते हैं, इसके साथ ही यदि आप मुझे गाड़ी को आगे बढ़ाने की आज्ञा देते हैं तो अन्धड के इस वेग में गाड़ी उलट भी सकती है, मैंने उस समय एक निर्णय लिया और गाड़ी को जंगल में रोक दी, तूफान ४०० मील प्रति घण्टे की रफतार से चल रहा था और पूरी गाड़ी अपने आप में डगमगा रही थी, मैंने अपने गार्ड यान में आँखें बन्द कर ली और सुन्दर काण्ड का पाठ करने लगा। मुझे पाठ करते हुए लगभग १०-१२ मिनट ही बीते होंगे कि मैंने अनुभव किया कि जैसे तूफान रुक गया हो। कुछ मिनटों पहले जो तूफान का भयंकर वेग था वह अपने आप में शान्त हो गया था। मामूली सी हवा चल रही थी, तूफान का कहीं नाम-निशान तक नहीं। मैंने प्रभु को धन्यवाद दिया और गाड़ी को आगे बढ़ाने की आज्ञा दी। लगभग दो घण्टे लेट गाड़ी अगले स्टेशन पर पहुँची। उस दिन केवल सुन्दर काण्ड ने ही मेरी तथा मेरी प्रतिष्ठा की रक्षा की। इस बात को मैं कभी भी नहीं भूल सकता।

———०———

जैसलमेर की घटना है जहाँ मीलों तक पानी का नाम निशान

नहीं होता । ऐसे स्थान पर मेरे एक परिचित व्यक्ति के पुत्र की नियुक्ति हुई थी, अनुभवहीन वह १८-१९ वर्ष का बालक जैसलमेर से बस पर चढ़ने वाला था, परन्तु किसी कारण से वह बस छूट गई, वहां से उसका गन्तव्य स्थल २८ मील दूर था और दूसरे दिन से पहले जाने का कोई साधन नहीं था, इसके साथ ही एक बात और थी कि उसे उसी दिन ड्यूटी ज्वाइन करनी थी, यदि उस दिन वह ड्यूटी ज्वाइन नहीं करता तो उसके आदेश स्वतः ही निरस्त हो जाते, और कोई चारा न देख उसने पैदल ही रास्ता पार करने को मन में ठान ली और रास्ता पूछकर आगे बढ़ गया ।

करीब १०-१२ मील तक तो वह चला गया परन्तु अनुभव-हीन होने के कारण उसने अपने साथ पानी की कोई व्यवस्था नहीं की, उसे जोरों से प्यास लग आई, परन्तु चारों तरफ पानी का कोई साधन नहीं था और न कोई व्यक्ति आता जाता दिखाई दे रहा था, किसी प्रकार वह एक दो मील और आगे बढ़ा, उसे कुछ बकरियां चरती हुई दिखाई दीं परन्तु उसके साथ न तो कोई ग्वाला नजर आया और न पानी का स्थान ही, प्यास के कारण उसके कंठ सूख रहे थे, एक-एक पैर चलना भारी हो रहा था, उसने वहीं बैठ जाना उचित समझा, चारों तरफ नजर दौड़ाई । परन्तु उसे कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था, प्यास के मारे हलक सूख रहा था आंख बाहर निकल रही थी और मृत्यु उसके सिरहाने खड़ी नजर आ रही थी ।

उसे अपने बचपन के संस्कार याद आए, पिता ने अपने सभी पुत्रों को सुन्दरकाण्ड कंठस्थ करवा दिया था, उसने प्रभु का नाम लेकर उसी सुन्दर काण्ड का पाठ आरम्भ कर दिया, धीरे-धीरे उसकी आंखें बन्द होने लगी मुंह से अस्फुट सुन्दर काण्ड का पाठ चल रहा था कि उसे अपने हलक में पानी की बूंदें गिरती अनुभव हुई । उसने आंखें खोली तो देखा कि एक ग्वाला उसके सिरहाने खड़ा अपनी दीवड़ी में से पानी की बूंदें उसके गले में टपका रहा है । ५-७ मिनट बाद उसे होश आया और उसने उस ग्वाले से दीवड़ी लेकर जी भर कर पानी पिया और इस प्रकार उसने मृत्यु को टालकर अपने प्राण बचाये, उसका कहना है कि उसके जीवन में यह पहली बार नहीं ऐसे कई अवसर उपस्थित

हुए हैं जब मृत्यु केवल दो चार-गज ही दूर रह गई थी, और मात्र सुन्दर काण्ड के पाठ से वह उससे बच सका है ।

———०———

चित्तौड़ में बिड़लाजी का सीमेन्ट का बहुत बड़ा कारखाना है । वहां से एक सीमेन्ट स्टाकिस्ट की एक घटना उनके ही शब्दों में पाठकों के सामने रख रहा हूँ । एक दिन सीमेन्ट का वैगन भराना था और यदि उस दिन वह वैगन नहीं भरता तो काफी बड़ा हर्जाना रेलवे को देना पड़ता । मैंने जैसे-तैसे एक ट्रक की व्यवस्था की जो कि सीमेन्ट लेकर रेलवे स्टेशन पर पहुँचा देता पर संयोग की बात यह कि उसी दिन तेज मूसलाधार वर्षा होने लग गई, वर्षा कुछ इस प्रकार से गिर रही थी कि रुकने का नाम ही नहीं ले रही थी, मैंने मन ही मन सोच लिया कि इस बरसात में यदि ट्रक भरकर रेलवे तक ले गया तो सारा सीमेन्ट भीग जायगा और यदि नहीं ले जाता हूँ तो रेलवे का बहुत बड़ा हर्जाना देना पड़ेगा और फिर वैगन न मालूम कब मिले । ऐसी स्थिति में मैंने मन ही मन प्रभु को स्मरण किया और सुन्दरकाण्ड का पाठ आरम्भ कर दिया । मैं सुन्दर काण्ड के पाठ को लगभग शाम के ५ बजे समाप्त कर सका और ज्योंही मैंने पाठ समाप्त किया त्योंही वर्षा बन्द हो गई, मैंने ट्रक से सीमेन्ट ढोकर रेलवे का वैगन भरा इस काम में मुझे लगभग ४ घण्टे लग गये । रात के ९ बजे के लगभग मैं पूरे वैगन को भरा सका, ज्योंही मैंने अंतिम सीमेन्ट का कट्टा वैगन में रखा त्योंही वर्षा प्रारम्भ हो गई और इसके बाद सारी रात मूसलाधार वर्षा होती रही, यह सुन्दर काण्ड का ही चमत्कार था कि शाम के ५ बजे से ९ बजे के बीच बिलकुल वर्षा बन्द रही और मैं संकट से बच सका ।

———०———

कोटा के पास चम्बल नदी बहती है, वर्षा ऋतु में यह भयंकर रूप धारण कर लेती है । गत सितम्बर में उसमें भयंकर बाढ़ आ गई ऐसा अनुभव होने लगा कि पूरा शहर जलमग्न हो जायगा ।

नदी का वेग क्षण-प्रतिक्षण बढता ही जा रहा था और खतरे के निशान से काफी ऊपर पानी बह रहा था । उस समय कुछ ब्राह्मणों की सलाह से नदी के तट पर अनवरत सुन्दर काण्ड का पाठ प्रारम्भ कराया गया और लोगों ने देखा कि जैसे ही सुन्दर काण्ड के ११ पाठ पूर्ण हुए, नदी का वेग धीमे पड़ने लगा और वह धीरे-धीरे खतरे के निशान से भी नीचे उतरने लगा, इस प्रकार उस बाढ़ से सैंकड़ों हजारों लोगों को बचाने का उपाय और माध्यम सुन्दरकाण्ड ही रहा । इस घटना के हजारों लोग साक्षी हैं ।

———o———

वस्तुतः सुन्दर काण्ड अपने आप में अन्यतम स्तुति है । प्रत्येक व्यक्ति को नियमित रूप से इसका पाठ करना ही चाहिए । जो व्यक्ति राम भक्त है या जिसकी हनुमानजी में आस्था है उन्हें नित्य नियमित रूप से सुन्दरकाण्ड का पाठ आवश्य ही करना चाहिए । जब भी परिवार पर कोई संकट आए या कोई सामूहिक समस्या सामने खड़ी हो जाए तो सुन्दर काण्ड ही एक मात्र उस विपत्ति से बचाने का साधन है । मेरी व्यक्तिगत राय में संकट से उबारने का इससे बड़ा कोई माध्यम नहीं है ।

———o———

सुन्दरकाण्ड—मूल

श्लोक

शान्तं शाश्वतमप्रमेयमनघं निर्वाणशान्तिप्रदं
ब्रह्माशम्भुफणीन्द्रसेव्यमनिशं वेदान्तवेद्यं विभुम् ।
रामाख्यं जगदीश्वरं सुरगुरुं मायामनुष्यं हरिं
वन्देऽहंकरुणाकरं रघुवरं भूपालचूडामणिम् ।।१।।
नान्या स्पृहा रघुपते हृदयेऽस्मदीये
सत्यं वदामि च भवानखिलान्तरात्मा ।
भक्तिं प्रयच्छ रघुपुंगव निर्भरां मे
कामादिदोषरहितं कुरु मानसं च ।।२।।

अतुलितबलधामं हेमशैलाभदेहं
दनुजवनकृशानुं ज्ञानिनामग्रगण्यम् ।
सकलगुणनिधानं वानराणामधीशं
रघुपतिप्रियभक्तं वातजातं नमामि ।।३।।
जामवंत के बचन सुहाए । सुनि हनुमंत हृदय अति भाए ।।
तब लगि मोहि परिखेहु तुम्ह भाई । सहि दुख कंद मूल फल खाई ।।
जब लगि आवौं सीतहि देखी । होइहि काजु मोहि हरष बिसेषी ।
यह कहि नाइ सबन्हि कहुँ माथा । चलेऊ हरषि हियँ धरि रघुनाथा ।।
सिंधु तीर एक भूधर सुन्दर । कौतुक कूदि चढ़ेउ ता ऊपर ।।
बार बार रघुबीर संभारी । तरकेउ पवनतनय बल भारी ।।
जेहिं गिरि चरन देइ हनुमंता । चलेउ सो गा पाताल तुरन्ता ।।
जिमि अमोघ रघुपति कर बाना । एही भांति चलेउ हनुमाना ।।
जलनिधि रघुपति दूत बिचारी । तैं मैनाक होहि श्रमहारी ।।
दो० हनुमान तेहि परसा कर पुनि कीन्ह प्रनाम ।
राम काजु कीन्हें बिनु मोहि कहां बिश्राम ।।१।।
जात पवन सुत देवन्ह देखा । जानैं कहुं बल बुद्धि बिसेषा ।।
सुरसा नाम अहिन्ह कै माता । पठइन्हि आइ कही तेहि बाता ।।
आजु सुरन्ह मोहि दीन्ह अहारा । सुनत बचन कह पवन कुमारा ।।
राम काजु करि फिरि मैं आवौं । सीता कइ सुधि प्रभुहि सुनावौं ।।
तब तब बदन पैठिहउं आई । सत्य कहउं मोहि जान दे माई ।।
कवनेहुं जतन देइ नहिं जाना । ग्रससि न मोहि कहेउ हनुमाना ।।
जोजन भरि तेहिं बदनु पसारा । कपि तनु कीन्ह दुगुन बिस्तारा ।।
सोरह जोजन मुख तेहिं ठयऊ । तुरत पवनसुत बत्तिस भयऊ ।।
जस जस सुरसा बदनु बढ़ावा । तासु दून कपि रूप देखावा ।।
सत जोजन तेहिं आनन कीन्हा । अति लघु रूप पवनसुत लीन्हा ।।
बदन पइठि पुनि बाहेर आवा । मागा बिदा ताहि सिरु नावा ।।
मोहि सुरन्ह जेहि लागि पठावा । बुधि बल मरमु तोर मैं पावा ।।
दो० राम काजु सबु करिहहु तुम्ह बल बुद्धि निधान ।
आसिष देइ गई सो हरषि चलेउ हनुमान ।।२।।
निसिचरि एक सिंधु महुं रहई । करि माया नभु के खग गहई ।।
जीव जंतु जे गगन उड़ाहीं । जल बिलोकि तिन्ह कै परिछाहीं ।।
गहइ छाहं सक सो न उड़ाई । एहि बिधि सदा गगनचर खाई ।।

सोइ छल हनुमान कहं कीन्हा । तासु कपटु कपि तुरतहिं चीन्हा ॥
ताहि मारि मारुतसुत बीरा । बारिधि पार गयउ मतिधीरा ॥
तहां जाइ देखी बन सोभा । गुंजत चंचरीक मधु लोभा ॥
नाना तरु फल फूल सुहाए । खग मृग बृंद देखि मन भाए ।
सैल बिसाल देखि एक आगें । ता पर धाई चढ़ेउ भय त्यागें ॥
उमा न कुछु कपि कै अधिकाई । प्रभु प्रताप जो कालहि खाई ॥
गिरि पर चढ़ि लंका तेहिं देखी । कहि न जाइ अति दुर्ग बिसेषी ॥
अति उतंग जलनिधि चहु पासा । कनक कोट कर परम प्रकासा ॥

छं० कनक कोट बिचित्र मनि कृत सुंदरायतना घना ।
चउ हट्ट सुबट्ट बीथीं चारु पुर बहु बिधि बना ॥
गज बाजि खच्चर निकर पद चर रथ बरूथन्हि को गनै ।
बहुरूप निसिचर जूथ अतिबल सेन बरनत नहिं बनै ॥१॥
बन बाग उपबन बाटिका सर कूप बापीं सोहहीं ।
नर नाग सुर गंधर्ब कन्या रूप मुनि मन मोहहीं ॥
कहुं माल देह बिसाल सैल समान अतिबल गर्जहीं ।
नाना अखारेन्ह भिरहिं बहुबिधि एक एकन्ह तर्जहीं ।२॥
करि जतन भट कोटिन्ह बिकट तन नगर चहुं दिसि रच्छहीं ।
कहुं महिष मानुष धेनु खर अज खल निसाचर भच्छहीं ॥
एहि लागि तुलसीदास इन्ह की कथा कछु एक है कही ।
रघुबीर सर तीरथ सरीरन्हि त्यागि गति पैहहिं सही ॥३॥

दो० पुर रखवारे देखि बहु कपि मन कीन्ह बिचार ।
अति लघु रूप धरौं निसि नगर करौं पइसार ॥३॥

मसक समान रूप कपि धरी । लंकहि चलेउ सुमिरि नरहरी ॥
नाम लंकिनी एक निसीचरी । सो कह चलेसि मोहि निंदरी ॥
जानेहि नहीं मरमु सठ मोरा । मोर अहार जहां लगि चोरा ॥
मुठिका एक महा कपि हनी । रुधिर बमत धरनीं ढनमनी ॥
पुनि संभारि उठी सो लंका । जोरि पानि कर बिनय ससंका ॥
जब रावनहि ब्रह्म बर दीन्हा । चलत बिरंचि कहा मोहि चीन्हा ॥
बिकल होसि तैं कपि कें मारे । तब जानेसु निसिचर संघारे ॥
तात मोर अति पुन्य बहूता । देखेउं नयन राम कर दूता ॥

दो० तात स्वर्ग अपबर्ग सुख धरिअ तुला एक अंग ।
तूल न ताहि सकल मिलि जो सुख लव सतसंग ॥४॥

प्रबिसि नगर कीजे सब काजा । हृदयं राखि कोसलपुर राजा ॥
गरल सुधा रिपु करहिं मिताई । गोपद सिंधु अनल सितलाई ॥
गरुड़ सुमेरु रेनु सम ताही । राम कृपा करि चितवा जाही ॥
अति लघु रूप धरेउ हनुमाना । पैठा नगर सुमिरि भगवाना ॥
मंदिर मंदिर प्रति करि सोधा । देखे जहं तहं अगनित जोधा ॥
गयउ दसानन मंदिर माहीं । अति बिचित्र कहि जात सो नाहीं ॥
सयन किएं देखा कपि तेही । मंदिर महुं न दीखि बैदेही ॥
भवन एक पुनि दीख सुहावा । हरि मंदिर तहं भिन्न बनावा ।

दो० रामायुध अंकित गृह सोभा बरनि न जाई ।
नव तुलसिका बृंद तहं देखि हरष कपिराई ॥५॥

लंका निसिचर निकर निवासा । इहां कहां सज्जन कर बासा ॥
मन महुं तरक करैं कपि लागा । तेहीं समय बिभीषनु जागा ।
राम राम तेहिं सुमिरन कीन्हा । हृदयं हरष कपि सज्जन चीन्हा ॥
एहि सन हठि करिहउं पहिचानी । साधु ते होइ न कारज हानी ॥
बिप्र रूप धरि बचन सुनाए । सुनत बिभीषन उठि तहं आए ॥
करि प्रनाम पूंछी कुसलाई । बिप्र कहहु निज कथा बुझाई ॥
की तुम्ह हरि दासन्ह महं कोई । मोरें हृदय प्रीति अति होई ॥
की तुम्ह रामु दीन अनुरागी । आयहु मोहि करन बड़भागी ॥

दो०—तब हनुमंत कही सब राम कथा निज नाम ।
सुनत जुगल तन पुलक मन मगन सुमिरि गुन ग्राम ॥६॥

सुनहु पवनसुत रहनि हमारी । जिमि दसनन्हि महुं जीभ बिचारी ॥
तात कबहुं मोहि जानि अनाथा । करिहहिं कृपा भानुकुल नाथा ॥
तामस तनु कछु साधन नाहीं । प्रीति न पद सरोज मन माहीं ॥
अब मोहि भा भरोस हनुमंता । बिनु हरि कृपा मिलहिं नहिं संता ॥
जौं रघुबीर अनुग्रह कीन्हा । तौ तुम्ह मोहि दरसु हठि दीन्हा ॥
सुनहु बिभीषन प्रभु की रीती । करहिं सदा सेवक पर प्रीती ॥
कहहु कवन मैं परम कुलीना । कपि चंचल सबहीं बिधि हीना ।
प्रात लेइ जो नाम हमारा । तेहि दिन ताहि न मिलै अहारा ॥

दो०—अस मैं अधम सखा सुनु मोहू पर रघुबीर ।
कीन्ही कृपा सुमिरि गुन भरे बिलोचन नीर ॥७॥

जानत हूं अस स्वामि बिसारी । फिरहिं ते काहे न होहिं दुखारी ॥
एहि बिधि कहत राम गुन ग्रामा । पावा अनिबार्च्य बिश्रामा ॥

पुनि सब कथा बिभीषन कही। जेहि बिधि जनकसुता तहं रही ॥
तब हनुमंत कहा सुनु भ्राता। देखी चहउं जानकी माता ॥
जुगुति बिभीषन सकल सुनाई। चलेउ पवनसुत बिदा कराई ॥
करि सौ रूप गयउ पुनि तहवां। बन असोक सीता रह जहवां ॥
देखि मनहि महुं कीन्ह प्रनामा। बैठेंहि बीति जात निसि जामा ॥
कृस तनु सीस जटा एक बेनी। जपति हृदयं रघुपति गुन श्रेनी ॥
दो०—निज पद नयन दिएं मन राम पद कमल लीन।
परम दुखी भा पवनसुत देखि जानकी दीन ॥८॥
तरु पल्लव महुं रहा लुकाई। करइ बिचार करौं का भाई ॥
तेहि अवसर रावनु तहं आवा। संग नारि बहु किएं बनावा ॥
बहु बिधि खल सीतहि समुझावा। साम दान भय भेद देखावा ॥
कह रावनु सुनु सुमुखि सयानी। मंदोदरी आदि सब रानी ॥
तव अनुचरीं करउं पन मोरा। एक बार बिलोकु मम ओरा ॥
तृन धरि ओट कहति बैदेही। सुमिरि अवधपति परम सनेही ॥
सुनु दसमुख खद्योत प्रकासा। कबहुं कि नलिनी करइ बिकासा ॥
अस मन समुझु कहति जानकी। खल सुधि नहिं रघुबीर बान की ॥
सठ सूनें हरि आनेहि मोहि। अधम निलज्ज लाज नहिं तोही ॥
दो०—आपुहि सुनि खद्योत सम रामहि भानु समान।
परुष बचन सुनि काढ़ि असि बोला अति खिसिआन ॥९॥
सीता तैं मम कृत अपमाना। कटिहउं तव सिर कठिन कृपाना ॥
नाहिं त सपदि मानु मम बानी। सुमुखि होति न त जीवन हानी ॥
स्याम सरोज दाम सम सुन्दर। प्रभु भुज करि कर सम दसकंधर ॥
सो भुज कंठ कि तव असि घोरा। सुनु सठ अस प्रवान पन मोरा ॥
चन्द्रहास हरु मम परितापं। रघुपति बिरह अनल संजातं ॥
सीतल निसित बहसि बर धारा। कह सीता हरु मम दुख भारा ॥
सुनत बचन पुनि मारन धावा। मयतनयां कहि नीति बुझावा ॥
कहेसि सकल निसिचरिन्ह बोलाई। सीतहि बहु बिधि त्रासहु जाई ॥
मास दिवस महुं कहा न माना। तौ मैं मारबि काढ़ि कृपाना ॥
दो०—भवन गयउ दसकंधर इहां पिसाचिनि बृंद।
सीतहि त्रास देखावहिं धरहिं रूप बहु मंद ॥१०॥
त्रिजटा नाम राच्छसी एका। राम चरन रति निपुन बिबेका ॥
सबन्हौ बोलि सुनाएसि सपना। सीतहि सेइ करहु हित अपना ॥

सपनें बानर लंका जारी। जातुधान सेना सब मारी ॥
खर आरूढ़ नगन दससीसा। मुंडित सिर खंडित भुज बीसा ॥
एहि बिधि सो दच्छिन दिसि जाई। लंका मनहुं बिभीषन पाई ॥
नगर फिरी रघुबीर दोहाई। तब प्रभु सीता बोलि पठाई ॥
यह सपना मैं कहउं पुकारी। होइहि सत्य गएं दिन चारी ॥
तासु बचन सुनि ते सब डरीं। जनकसुता के चरनन्हि परीं ॥
दो०—जहं तहं गईं सकल तब सीता कर मन सोच।
मास दिवस बीतें मोहि मारिहि निसिचर पोच ॥११॥
त्रिजटा सन बोली कर जोरी। मातु बिपति संगिनि तैं मोरी ॥
तजौं देह करु बेगि उपाई। दुसह बिरहु अब नहिं सहि जाई।
आनि काठ रचु चिता बनाई। मातु अनल पुनि देहि लगाई।
सत्य करहि मम प्रीति सयानी। सुनै को श्रवन सूल सम बानी ॥
सुनत बचन पद गहि समुझाएसि। प्रभु प्रताप बल सुजसु सुनाएसि ॥
निसि न अनल मिल सुनु सुकुमारी। अस कहि सो निज भवन सिधारी ॥
कह सीता बिधि भा प्रतिकूला। मिलिहि न पावक मिटिहि न सूला ॥
देखिअत प्रगट गगन अंगारा। अवनि न आवत एकउ तारा ॥
पावकमय ससि स्रवत न आगी। मानहुं मोहि जानि हतभागी ॥
सुनहि बिनय मम बिटप असोका। सत्य नाम करु हरु मम सोका ॥
नूतन किसलय अनल समाना। देहि अगिनि जनि करहि निदाना ॥
देखि परम बिरहाकुल सीता। सो छन कपिहि कलप सम बीता ॥
दो०—कपि करि हृदयं बिचार दीन्हि मुद्रिका डारि तब।
जनु असोक अंगार दीन्ह हरषि उठि कर गहेउ ॥१२॥
तब देखी मुद्रिका मनोहर। राम नाम अंकित अति सुन्दर ॥
चकित चितव मुदरी पहिचानी। हरष बिषाद हृदयं अकुलानी ॥
जीति को सकइ अजय रघुराई। माया तें असि रचि नहिं जाई ॥
सीता मन बिचार कर नाना। मधुर बचन बोले हनुमाना ॥
रामचन्द्र गुन बरनैं लागा। सुनतहिं सीता कर दुख भागा ॥
लागीं सुनैं श्रवन मन लाई। आदिहु तें सब कथा सुनाई ॥
श्रवनामृत जेहिं कथा सुहाई। कही सो प्रगट होति किन भाई ॥
तब हनुमंत निकट चलि गयऊ। फिरि बैठीं मन बिसमय भयऊ ॥
राम दूत मैं मातु जानकी। सत्य सपथ करुनानिधान की ॥
यह मुद्रिका मातु मैं आनी। दीन्हि राम तुम्ह कहं सहिदानी ॥

नर बानरहि संग कहु कैसे। कही कथा भई संगति जैसें ॥
दो०—कपि के बचन सप्रेम सुनि उपजा मन बिस्वास।
जाना मन क्रम बचन यह कृपासिंधु कर दास ॥१३॥
हरिजन जानि प्रीति अति गाढ़ी। सजल नयन पुलकावलि बाढ़ी ॥
बूड़त बिरह जलधि हनुमाना। भयहु तात मो कहुं जलजाना ॥
अब कहु कुसल जाउं बलिहारी। अनुज सहित सुख भवन खरारी ॥
कोमल चित्त कृपाल रघुराई। कपि केहि हेतु धरी निठुराई ॥
सहज बानि सेवक सुख दायक। कबहुंक सुरति करत रघुनायक ॥
कबहुं नयन मम सीतल ताता। होइहहिं निरखि स्याम मृदु गाता ॥
बचनु न आव नयन भरे बारी। अहह नाथ हौं निपट बिसारी ॥
देखि परम बिरहाकुल सीता। बोला कपि मृदु बचन बिनीता ॥
मातु कुसल प्रभु अनुज समेता। तव दुख दुखी सुकृपा निकेता ॥
जानि जननी मानहु जियं ऊना। तुम्ह ते प्रेमु राम कें दूना ॥
दो०—रघुपति कर संदेसु अब सुनु जननी धरि धीर।
अस कहि कपि गदगद भयउ भरे बिलोचन नीर ॥१४॥
कहेउ राम बियोग तव सीता। मो कहुं सकल भए बिपरीता ॥
नव तरु किसलय मनहुं कृसानू। कालनिसा सम निसि ससि भानू ॥
कुबलय बिपिन कुंत बन सरिसा। बारिद तपत तेल जनु बरिसा ॥
जे हित रहे करत तेई पीरा। उरग स्वास सम त्रिबिध समीरा ॥
कहेहू तें कछु दुख घटि होई। काहि कहौं यह जान न कोई ॥
तत्व प्रेम कर मम अरु तोरा। जानत प्रिया एकु मनु मोरा ॥
सो मनु सदा रहत तोहि पाहीं। जानु प्रीति रसु एतनेहि माहीं ॥
प्रभु संदेसु सुनत बैदेही। मगन प्रेम तन सुधि नहिं तेही ॥
कह कपि हृदयं धीर धरु माता। सुमिरु राम सेवक सुखदाता ॥
उर आनहु रघुपति प्रभुताई। सुनि मम बचन तजहु कदराई ॥
दो०—निसिचर निकर पतंग सम रघुपति बान कृसानु।
जननी हृदयं धीर धरु जरे निसाचर जानु ॥१५॥
जौं रघुबीर होति सुधि पाई। करते नहिं बिलंबु रघुराई ॥
राम बान रबि उएं जानकी। तम बरूथ कहं जातुधान की ॥
अबहिं मातु मैं जाउं लवाई। प्रभु आयसु नहिं राम दोहाई ॥
कछुक दिवस जननी धरु धीरा। कपिन्ह सहित अइहहिं रघुबीरा ॥
निसिचर मारि तोहि लै जैहहिं। तिहुं पुर नारदादि जसु गैहहिं ॥

हैं सुत कपि सब तुम्हहि समाना। जातुधान अति भट बलवाना ॥
मोरें हृदय परम संदेहा। सुनि कपि प्रगट कीन्हि निज देहा ॥
कनक भूधराकार सरीरा। समर भयंकर अतिबल बीरा ॥
सीता मन भरोस तब भयऊ। पुनि लघु रूप पवनसुत लयऊ ॥
दो०—सुनु माता साखामृग नहिं बल बुद्धि बिसाल।
प्रभु प्रताप तें गरुड़हि खाइ परम लघु ब्याल ॥१६॥
मन संतोष सुनत कपि बानी। भगति प्रताप तेज बल सानी ॥
आसिष दीन्हि राम प्रिय जाना। होहु तात बल सील निधाना ॥
अजर अमर गुननिधि सुत होहू। करहुं बहुत रघुनायक छोहू ॥
करहुं कृपा प्रभु अस सुनि काना। निर्भर प्रेम मगन हनुमाना ॥
बार बार नाएसि पद सीसा। बोला बचन जोरि कर कीसा ॥
अब कृतकृत्य भयउं मैं माता। आसिष तव अमोघ बिख्याता ॥
सुनहु मातु मोहि अतिसय भूखा। लागि देखि सुन्दर फल रूखा ॥
सुनु सुत करहिं बिपिन रखवारी। परम सुभट रजनीचर भारी ॥
तिन्ह कर भय माता मोहि नाहीं। जौं तुम्ह सुख मानहु मन माहीं ॥
दो०—देखि बुद्धि बल निपुन कपि कहेउ जानकीं जाहु।
रघुपति चरन हृदयं धरि तात मधुर फल खाहु ॥१७॥
चलेउ नाइ सिरु पैठेउ बागा। फल खाएसि तरु तोरैं लागा ॥
रहे तहां बहु भट रखवारे। कछु मारेसि कछु जाइ पुकारे ॥
नाथ एक आवा कपि भारी। तेहिं असोक बाटिका उजारी ॥
खाएसि फल अरु बिटप उपारे। रच्छक मर्दि मर्दि महि डारे ॥
सुनि रावन पठए भट नाना। तिन्हहि देखि गर्जेउ हनुमाना ॥
सब रजनीचर कपि संघारे। गए पुकारत कछु अधमारे ॥
पुनि पठयउ तेहिं अच्छकुमारा। चला संग लै सुभट अपारा ॥
आवत देखि बिटप गहि तर्जा। ताहि निपाति महाधुनि गर्जा ॥
दो०—कछु मारेसि कछु मर्देसि कछु मिलएसि धरि धूरि।
कछु पुनि जाइ पुकारे प्रभु मर्कट बल भूरि ॥१८॥
सुनि सुत बध लंकेस रिसाना। पठएसि मेघनाद बलवाना ॥
मारसि जनि सुत बांधेसु ताही। देखिअ कपिहि कहां कर आही ॥
चला इंद्रजित अतुलित जोधा। बंधु निधन सुनि उपजा क्रोधा ॥
कपि देखा दारुन भट आवा। कटकटाइ गर्जा अरु धावा ॥
अति बिसाल तरु एक उपारा। बिरथ कीन्ह लंकेस कुमारा ॥

रहे महाभट ताके संगा । गहि गहि कपि मर्दइ निज अंगा ॥
तिन्हहि निपाति ताहि सन बाजा । भिरे जुगल मानहुं गजराजा ॥
मुठिका मारि चढ़ा तरु जाई । ताहि एक छन मुरुछा आई ॥
उठि बहोरि कीन्हिसि बहु माया । जीति न जाइ प्रभंजन जाया ॥
दो०—ब्रह्म अस्त्र तेहिं सांधा कपि मन कीन्ह बिचार ।
जौं न ब्रह्मसर मानउं महिमा मिटई अपार ॥१९॥
ब्रह्मबान कपि कहुं तेहिं मारा । परतिहुं बार कटकु संघारा ।
तेहिं देखा कपि मुरुछित भयऊ । नागपास बांधेसि लै गयऊ ॥
जासु नाम जपि सुनहु भवानी । भाव बंधन काटहिं नर ग्यानी ॥
तासु दूत कि बंध तरु आवा । प्रभु कारज लगि कपिहिं बंधावा ॥
कपि बंधन सुनि निसिचर धाए । कौतुक लागि सभा सब आए ॥
दसमुख सभा दीखि कपि जाई । कहि न जाइ कछु अति प्रभुताई ॥
कर जोरें सुर दिसिप बिनीता । भृकुटि बिलोकत सकल सभीता ॥
देखि प्रताप न कपि मन संका । जिमि अहिगन महुं गरुड़ असंका ॥
दो०—कपिहि बिलोकि दसानन बिहसा कहि दुर्बाद ।
सुत बध सुरति कीन्हि पुनि उपजा हृदयं बिषाद ॥२०॥
कह लंकेस कवन तैं कीसा । केहि कें बल घालेहि बन खीसा ॥
की धौं श्रवन सुनेहि नहिं मोही । देखउं अति असंक सठ तोही ॥
मारे निसिचर केहिं अपराधा । कहु सठ तोहि न प्रान कई बाधा ॥
सुनु रावन ब्रह्मांड निकाया । पाइ जासु बल बिरचित माया ॥
जाकें बल बिरंचि हरि ईसा । पालत सृजत हरत दससीसा ॥
जा बल सीस धरत सहसानन । अंडकोस समेत गिरि कानन ॥
धरई जो बिबिध देह सुरत्राता । तुम्ह से सठन्ह सिखावनु दाता ॥
हर कोदंड कठिन जेहिं भंजा । तेहि समेत नृप दल मद गंजा ॥
खर दूषन त्रिसिरा अरु बाली । बधे सकल अतुलित बलसाली ॥
दो०—जाके बल लवलेस तें जितेहु चराचर झारि ।
तासु दूत मैं जा करि हरि आनेहु प्रिय नारि ॥२१॥
जानउं मैं तुम्हारि प्रभुताई । सहसबाहु सन परी लराई ॥
समर बालि सन करि जसु पावा । सुनि कपि बचन बिहसि बिहरावा ॥
खायउं फल प्रभु लागी भूंखा । कपि सुभाव तें तोरेउं रूखा ॥
सब कें देह परम प्रिय स्वामी । मारहिं मोहि कुमारग गामी ॥
जिन्ह मोहि मारा ते मैं मारे । तेहि पर बांधेउं तनयं तुम्हारे ॥

मोहि न कछु बांधे कई लाजा । कीन्ह चहउं निज प्रभु कर काजा ॥
बिनती करउं जोरि कर रावन । सुनहु मान तजि मोर सिखावन ।
देखहु तुम्ह निज कुलहि बिचारी । भ्रम तजि भजहु भगत भय हारी ॥
जाकें डर अति काल डेराई । जो सुर असुर चराचर खाई ॥
तासों बयरु कबहुं नहिं कीजै । मोरे कहें जानकी दीजै ॥
दो०—प्रनतपाल रघुनायक करुना सिंधु खरारि ।
गएं सरन प्रभु राखिहैं तव अपराध बिसारि ॥२२॥
राम चरन पंकज उर धरहू । लंका अचल राजु तुम्ह करहू ॥
रिषि पुलस्ति जसु बिमल मयंका । तेहि ससि महुं जनि होहु कलंका ॥
राम नाम बिनु गिरा न सोहा । देखु बिचारि त्यागि मद मोहा ॥
बसन हीन नहिं सोह सुरारी । सब भूषन भूषित बर नारी ॥
राम बिमुख संपति प्रभुताई । जाइ रही पाई बिनु पाई ॥
सजल मूल जिन्ह सरितन्ह नाहीं । बरषि गए पुनि तबहिं सुखाहीं ॥
सुनु दसकंठ कहउं पन रोपी । बिमुख राम त्राता नहिं कोपी ॥
संकर सहस बिष्नु अज तोही । सकहिं न राखि राम कर द्रोही ॥
दो०—मोहमूल बहु सूल प्रद त्यागहु तम अभिमान ।
भजहु राम रघुनायक कृपा सिंधु भगवान ॥२३॥
जदपि कही कपि अति हित बानी । भगति बिबेक बिरति नय सानी ॥
बोला बिहसि महा अभिमानी । मिला हमहि कपि गुर बड़ ग्यानी ॥
मृत्यु निकट आई खल तोही । लागेसि अधम सिखावन मोही ॥
उलटा होइहि कह हनुमाना । मतिभ्रम तोर प्रगट मैं जाना ॥
सुनि कपि बचन बहुत खिसिआना । बेगि न हरहु मूढ़ कर प्राना ॥
सुनत निसाचर मारन धाए । सचिवन्ह सहित बिभीषनु आए ॥
नाइ सीस करि बिनय बहूता । नीति बिरोध न मारिअ दूता ॥
आन दंड कछु करिअ गोसांई । सबहीं कहा मंत्र भल भाई ॥
सुनत बिहसि बोला दसकंधर । अंग भंग करि पठइअ बंदर ॥
दो०—कपि कें ममता पूंछ पर सबहि कहउं समुझाई ।
तेल बोरि पट बांधि पुनि पावक देहु लगाई ॥२४॥
पूंछहीन बानर तहं जाइहि । तब सठ निज नाथहि लइ आइहि ॥
जिन्ह कै कीन्हिसि बहुत बड़ाई । देखउं मैं तिन्ह कै प्रभुताई ॥
बचन सुनत कपि मन मुसुकाना । भइ सहाय सारद मैं जाना ॥
जातुधान सुनि रावन बचना । लागे रचैं मूढ़ सोइ रचना ।

रहा न नगर बसन घृत तेला । बाढ़ी पूंछ कीन्ह कपि खेला ॥
कौतुक कहं आए पुरबासी । मारहिं चरन करहिं बहु हांसी ॥
बाजहिं ढोल देहिं सब तारी । नगर फेरि पुनि पूंछ प्रजारी ॥
पावक जरत देखि हनुमंता । भयउ परम लघु रूप तुरंता ॥
निबुकि चढ़ेउ कपि कनक अटारीं । भईं सभीत निसाचर नारीं ॥
दो०—हरि प्रेरित तेहि अवसर चले मरुत उनचास ।
अट्टहास करि गर्जा कपि बढ़ि लाग अकास ॥२५॥
देह बिसाल परम हरुआई । मंदिर तें मंदिर चढ़ धाई ॥
जरइ नगर भा लोग बिहाला । झपट लपट बहु कोटि कराला ॥
तात मातु हा सुनिअ पुकारा । एहि अवसर को हमहि उबारा ॥
हम जो कहा यह कपि नहिं होई । बानर रूप धरें सुर कोई ॥
साधु अवग्या कर फलु ऐसा । जरइ नगर अनाथ कर जैसा ॥
जारा नगरु निमिष एक माहीं । एक बिभीषन कर गृह नाहीं ॥
ता कर दूत अनल जेहिं सिरिजा । जरा न सो तेहि कारन गिरिजा ॥
उलटि पलटि लंका सब जारी । कूदि परा पुनि सिंधु मझारी ॥
दो०—पूंछ बुझाइ खोइ श्रम धरि लघु रूप बहोरि ।
जनकसुता कें आगें ठाढ़ भयउ कर जोरि ॥२६॥
मातु मोहि दीजे कछु चीन्हा । जैसें रघुनायक मोहि दीन्हा ॥
चूड़ामनि उतारि तब दयऊ । हरष समेत पवनसुत लयऊ ॥
कहेहु तात अस मोर प्रनामा । सब प्रकार प्रभु पूरनकामा ॥
दीन दयाल बिरिदु संभारी । हरहु नाथ मम संकट भारी ॥
तात सक्रसुत कथा सुनाएहु । बान प्रताप प्रभुहि समुझाएहु ॥
मास दिवस महुं नाथु न आवा । तौ पुनि मोहि जिअत नहिं पावा ॥
कहु कपि केहि बिधि राखौं प्राना । तुम्हहू तात कहत अब जाना ॥
तोहि देखि सीतलि भइ छाती । पुनि मो कहुं सोइ दिनु सो राती ॥
दो०—जनकसुतहि समुझाइ करि बहुबिधि धीरजु दीन्ह ।
चरन कमल सिरु नाइ कपि गवनु राम पहिं कीन्ह ॥२७॥
चलत महाधुनि गर्जेसि भारी । गर्भ स्रवहिं सुनि निसिचर नारी ॥
नाघि सिंधु एहि पारहि आवा । सबद किलिकिला कपिन्ह सुनावा ॥
हरषे सब बिलोकि हनुमाना । नूतन जन्म कपिन्ह तब जाना ॥
मुख प्रसन्न तन तेज बिराजा । कीन्हेसि रामचन्द्र कर काजा ॥
मिले सकल अति भए सुखारी । तलफत मीन पाव जिमि बारी ॥

चले हरषि रघुनायक पासा । पूंछत कहत नवल इतिहासा ॥
तब मधुबन भीतर सब आए । अंगद संमत मधु फल खाए ॥
रखवारे जब बरजन लागे । मुष्टि प्रहार हनत सब भागे ॥
दो०—जाइ पुकारे ते सब बन उजार जुबराज ।
सुनि सुग्रीव हरष कपि करि आए प्रभु काज ॥२८॥
जौं न होति सीता सुधि पाई । मधुबन के फल सकहिं कि खाई ॥
एहि बिधि मन बिचार कर राजा । आइ गए कपि सहित समाजा ॥
आइ सबन्हि नावा पद सीसा । मिलेउ सबन्हि अति प्रेम कपीसा ॥
पूंछी कुसल कुसल पद देखी । राम कृपा भा काजु बिसेषी ।
नाथ काजु कीन्हेउ हनुमाना । राखे सकल कपिन्ह के प्राना ॥
सुनि सुग्रीव बहुरि तेहि मिलेऊ । कपिन्ह सहित रघुपति पहिं चलेऊ ॥
राम कपिन्ह जब आवत देखा । किएं काजु मन हरष बिसेषा ॥
फटिक सिला बैठे द्वौ भाई । परे सकल कपि चरनन्हि जाई ॥
दो०—प्रीति सहित सब भेटे रघुपति करुना पुंज ।
पूंछी कुसल नाथ अब कुसल देखि पद कंज ॥२९॥
जामवंत कह सुनु रघुराया । जा पर नाथ करहु तुम्ह दाया ॥
ताहि सदा सुभ कुसल निरंतर । सुर नर मुनि प्रसन्न ता ऊपर ॥
सोइ बिजई बिनई गुन सागर । तासु सुजसु त्रैलोक उजागर ॥
प्रभु की कृपा भयउ सबु काजू । जन्म हमार सुफल भा आजू ॥
नाथ पवनसुत कीन्हि जो करनी । सहसहुं मुख न जाइ सो बरनी ॥
पवनतनय के चरित सुहाए । जामवंत रघुपतिहि सुनाए ।
सुनत कृपानिधि मन अति भाए । पुनि हनुमान हरषि हियं लाए ॥
कहहु तात केहि भांति जानकी । रहति करति रच्छा स्वप्रान की ॥
दो०—नाम पाहरू दिवस निसि ध्यान तुम्हार कपाट ।
लोचन निज पद जंत्रित जाहिं प्रान केहिं बाट ॥३०॥
चलत मोहि चूड़ामनि दीन्ही । रघुपति हृदयं लाइ सोइ लीन्ही ॥
नाथ जुगल लोचन भरि बारी । बचन कहे कछु जनककुमारी ॥
अनुज समेत गहेहु प्रभु चरना । दीन बंधु प्रनतारति हरना ॥
मन क्रम बचन चरन अनुरागी । केहिं अपराध नाथ हौं त्यागी ॥
अवगुन एक मोर मैं माना । बिछुरत प्रान न कीन्ह पयाना ॥
नाथ सो नयनन्हि को अपराधा । निसरत प्रान करहिं हठि बाधा ॥
बिरह अगिनि तनु तूल समीरा । स्वास जरइ छन माहिं सरीरा ॥

नयन स्रवहिं जलु निज हित लागी । जरैं न पाव देह बिरहागी ॥
सीता के अति बिपति बिसाला । बिनहिं कहें भलि दीनदयाला ॥
दो०—निमिष निमिष करुनानिधि जाहिं कलप सम बीति ।
बेगि चलिअ प्रभु आनिअ भुजबल खल दल जीति ॥३१॥
सुनि सीता दुख प्रभु सुख अयना । भरि आए जल राजिव नयना ॥
बचन कायं मन मम गति जाही । सपनेहुं बूझिअ बिपति कि ताही ॥
कह हनुमंत बिपति प्रभु सोई । जब तव सुमिरन भजन न होई ॥
केतिक बात प्रभु जातुधान की । रिपुहि जीति आनिबी जानकी ॥
सुनु कपि तोहि समान उपकारी । नहिं कोउ सुरनर मुनि तनु धारी ॥
प्रति उपकार करौं का तोरा । सनमुख होइ न सकत मन मोरा ॥
सुनु सुत तोहि उरिन मैं नाहीं । देखेउं करि बिचार मन माहीं ॥
पुनि पुनि कपिहि चितव सुरत्राता । लोचन नीर पुलक अति गाता ॥
दो०—सुनि प्रभु बचन बिलोकि मुख गात हरषि हनुमंत ।
चरन परेउ प्रेमाकुल त्राहि त्राहि भगवंत ॥३२॥
बार बार प्रभु चहइ उठावा । प्रेम मगन तेहि उठब न भावा ॥
प्रभु कर पंकज कपि कें सीसा । सुमिरि सो दसा मगन गौरीसा ॥
सावधान मन करि पुनि संकर । लागे कहन कथा अति सुन्दर ॥
कपि उठाइ प्रभु हृदयं लगावा । कर गहि परम निकट बैठावा ॥
कहु कपि रावन पालित लंका । केहि बिधि दहेउ दुर्ग अति बंका ॥
प्रभु प्रसन्न जाना हनुमाना । बोला बचन बिगत अभिमाना ॥
साखामृग के बड़ि मनुसाई । साखा तें साखा पर जाई ॥
नाघि सिंधु हाटकपुर जारा । निसिचर गन बधि बिपिन उजारा ॥
सो सब तव प्रताप रघुराई । नाथ न कछू मोरि प्रभुताई ॥
दो०—ता कहुं प्रभु कछु अगम नहिं जा पर तुम्ह अनुकूल ।
तव प्रभावं बड़वानलहि जारि सकइ खलु तूल ॥३३॥
नाथ भगति अति सुखदायनी । देहु कृपा करि अनपायनी ॥
सुनि प्रभु परम सरल कपि बानी । एवमस्तु तब कहेउ भवानी ॥
उमा राम सुभाउ जेहिं जाना । ताहि भजनु तजि भाव न आना ॥
यह संवाद जासु उर आवा । रघुपति चरन भगति सोइ पावा ॥
सुनि प्रभु बचन कहहिं कपिबृन्दा । जय जय जय कृपाल सुखकंदा ॥
तब रघुपति कपि पतिहि बोलावा । कहा चलैं कर करहु बनावा ॥
अब बिलंबु केहि कारन कीजे । तुरत कपिन्ह कहुं आयसु दीजे ॥

कौतुक देखि सुमन बहु बरषी । नभ तें भवन चले सुर हरषी ॥
दो०—कपिपति बेगि बोलाए आए जूथप जूथ ।
नाना बरन अतुल बल बानर भालु बरूथ ॥३४॥
प्रभु पद कज नावहिं सीसा । गर्जहिं भालु महाबल कीसा ॥
देखी राम सकल कपि सेना । चितइ कृपा करि राजिव नैना ॥
राम कृपा बल पाइ कपिंदा । भए पच्छजुत मनहुं गिरिंदा ॥
हरषि राम तब कीन्ह पयाना । सगुन भए सुन्दर सुभ नाना ॥
जासु सकल मंगलमय कीती । तासु पयान सगुन यह नीती ॥
प्रभु पयान जाना बैदेही । फरकि बाम अंग जनु कहि देहीं ॥
चला कटकु को बरनैं पारा । गर्जहिं बानर भालु अपारा ॥
नख आयुध गिरि पादपधारी । चले गगन महि इच्छाचारी ॥
केहरिनाद भालु कपि करहीं । डगमगाहिं दिग्गज चिक्करहीं ॥
छं० चिक्करहिं दिग्गज डोल महि गिरि लोल सागर खरभरे ॥
मन हरष सम गंधर्ब सुर मुनि नाग किन्नर दुख टरे ॥
कटकटहिं मर्कट बिकट भट बहु कोटि कोटिन्ह धावहीं ॥
जय राम प्रबल प्रताप कोसलनाथ गुन गन गावहीं ॥१॥
सहि सक न भार उदार अहिपति बार बारहिं मोहई ।
गह दसन पुनि पुनि कमठ पृष्ट कठोर सो किमि सोहई ॥
रघुबीर रुचिर प्रयान प्रस्थिति जानि परम सुहावनी ॥
जनु कमठ खपर सर्पराज सो लिखत अबिचल पावनी ॥२॥
दो०—एहि बिधि जाइ कृपा निधि उतरे सागर तीर ।
जहं जहं लागे खान फल भालु बिपुल कपि बीर ॥३५॥
उहां निसाचर रहहिं ससंका । जब तें जारि गयउ कपि लंका ॥
निज निज गृहं सब करहिं बिचारा । नहिं निसिचर कुल केर उबारा ॥
जासु दूत बल बरनि न जाई । तेहि आएं पुर कवन भलाई ॥
दूतिन्ह सन सुनि पुरजन बानी । मंदोदरी अधिक अकुलानी ॥
रहसि जोरि कर पति पग लागी । बोली बचन नीति रस पागी ॥
कंत करष हरि सन परिहरहू । मोर कहा अति हित हियं धरहू ॥
समुझत जासु दूत कइ करनी । स्रवहिं गर्भ रजनीचर घरनी ॥
तासु नारि निज सचिव बोलाई । पठवहु कंत जो चहहु भलाई ॥
तव कुल कमल बिपिन दुखदाई । सीता सीत निसा सम आई ॥
सुनहु नाथ सीता बिनु दीन्हें । हित न तुम्हार संभु अज कीन्हें ॥

दो०—राम बान अहि गन सरिस निकर निसाचर भेक।
जब लगि ग्रसत न तब लगि जतनु करहु तजि टेक ॥३६॥

श्रवन सुनी सठ ता करि बानी। बिहसा जगत बिदित अभिमानी ॥
सभय सुभाउ नारि कर साचा। मंगल महुं भय मन अति काचा ॥
जों आवइ मर्कट कटकाई। जिअहिं बिचारे निसिचर खाई ॥
कंपहिं लोकप जाकीं त्रासा। तासु नारि सभीत बड़ि हासा ॥
अस कहि बिहसि ताहि उर लाई। चलेउ सभां ममता अधिकाई ॥
मंदोदरि हृदयं कर चिंता। भयउ कंत पर बिधि बिपरीता ॥
बैठेउ सभां खबरि असि पाई। सिंधु पार सेना सब आई ॥
बूझेसि सचिव उचित मत कहहू। ते सब हँसे मष्ट करि रहहू ॥
जितेहु सुरासुर तब श्रम नाहीं। नर बानर केहि लेखे माहीं ॥

दो०—सचिव बैद गुर तीनि जौं प्रिय बोलहिं भय आस।
राज धर्म तन तीनि कर होइ बेगिहीं नास ॥३७॥

सोइ रावन कहुं बनी सहाई। अस्तुति करहिं सुनाई सुनाई ॥
अवसर जानि बिभीषनु आवा। भ्राता चरन सीसु तेहिं नावा ॥
पुनि सिरु नाइ बैठ निज आसन। बोला बचन पाइ अनुसासन ॥
जौ कृपाल पूँछिहु मोहि बाता। मति अनुरूप कहउं हित ताता ॥
जो आपन चाहै कल्याना। सुजसु सुमति सुभ गति सुख नाना ॥
सो परनारि लिलार गोसाईं। तजउ चउथि के चंद कि नाईं ॥
चौदह भुवन एक पति होई। भूतद्रोह तिष्टइ नहिं सोई ॥
गुन सागर नागर नर जोऊ। अलप लोभ भल कहइ न कोऊ ॥

दो०—काम क्रोध मद लोभ सब नाथ नरक के पंथ।
सब परिहरि रघुबीरहि भजहु भजहिं जेहि संत ॥३८॥

तात राम नहिं नर भूपाला। भुवनेस्वर कालहु कर काला ॥
ब्रह्म अनामय अज भगवंता। ब्यापक अजित अनादि अनंता ॥
गो द्विज धेनु देव हितकारी। कृपासिंधु मानुष तनु धारी ॥
जन रंजन भंजन खल ब्राता। बेद धर्म रच्छक सुनु भ्राता ॥
ताहि बयरु तजि नाइअ माथा। प्रनतारति भंजन रघुनाथा ॥
देहु नाथ प्रभु कहुं बैदेही। भजहु राम बिनु हेतु सनेही ॥
सरन गए प्रभु ताहु न त्यागा। बिस्व द्रोह कृत अघ जेहि लागा ॥
जासु नाम त्रय ताप नसावन। सोइ प्रभु प्रगट समुझु जियं रावन ॥

दो०—बार बार पद लागउं बिनय करउं दससीस।
परिहरि मान मोह मद भजहु कोसलाधीस ॥३९॥(क)
मुनि पुलस्ति निज सिष्य सन कहि पठई यह बात।
तुरत सो मैं प्रभु सन कही पाइ सुअवसरु तात ॥३९॥(ख)

माल्यवंत अति सचिव सयाना। तासु बचन सुनि अति सुख माना ॥
तात अनुज तव नीति बिभूषन। सो उर धरहु जो कहत बिभीषन ॥
रिपु उतकरष कहत सठ दोऊ। दूरि न करहु इहां हइ कोऊ ॥
माल्यवंत गृह गयउ बहोरी। कहइ बिभीषनु पुनि कर जोरी ॥
सुमति कुमति सब कें उर रहहीं। नाथ पुरान निगम अस कहहीं ॥
जहां सुमति तहं संपति नाना। जहां कुमति तहं बिपति निदाना ॥
तव उर कुमति बसी बिपरीता। हित अनहित मानहु रिपु प्रीता ॥
कालराति निसिचर कुल केरी। तेहि सीता पर प्रीति घनेरी ॥

दो०—तात चरन गहि मागउं राखहु मोर दुलार।
सीता देहु राम कहुं अहित न होइ तुम्हार ॥४०॥

बुध पुरान श्रुति संमत बानी। कही बिभीषन नीति बखानी ॥
सुनत दसानन उठा रिसाई। खल तोहि निकट मृत्यु अब आई ॥
जिअसि सदा सठ मोर जिआवा। रिपु कर पच्छ मूढ़ तोहि भावा ॥
कहसि न खल अस को जग माहीं। भुज बल जाहि जिता मैं नाहीं ॥
मम पुर बसि तपसिन्ह पर प्रीती। सठ मिलु जाइ तिन्हहि कहु नीति ॥
अस कहि कीन्हेसि चरन प्रहारा। अनुज गहे पद बारहिं बारा ॥
उमा संत कइ इहइ बड़ाई। मंद करत जो करइ भलाई ॥
तुम्ह पितु सरिस भलेहिं मोहि मारा। रामु भजें हित नाथ तुम्हारा ॥
सचिव संग लै नभ पथ गयऊ। सबहि सुनाइ कहत अस भयऊ ॥

दो०—रामु सत्यसंकल्प प्रभु सभा कालबस तोरि।
मैं रघुबीर सरन अब जाउं देहु जनि खोरि ॥४१॥

अस कहि चला बिभीषनु जबहीं। आयूहीन भए सब तबहीं ॥
साधु अवग्या तुरत भवानी। कर कल्यान अखिल कै हानी ॥
रावन जबहिं बिभीषन त्यागा। भयउ बिभव बिनु तबहिं अभागा ॥
चलेउ हरषि रघुनायक पाहीं। करत मनोरथ बहु मन माहीं ॥
देखिहउं जाइ चरन जलजाता। अरुन मृदुल सेवक सुखदाता ॥
जे पद परसि तरी रिषिनारी। दंडक कानन पावनकारी ॥
जे पद जनकसुता उर लाए। कपट कुरंग संग धर धाए ॥

हर उस सर सरोज पद जेई । अहो भाग्य मैं देखिहउं तेई ।।
दो०—जिन्ह पायन्ह के पादुकन्हि भरतु रहे मन लाइ ।
तेपद आजु बिलोकिहउं इन्ह नयनन्हि अब जाई ।।४२।।
एहि बिधि करत सप्रेम बिचारा । आयउ सपदि सिंधु एहिं पारा ।।
कपिन्ह बिभीषनु आवत देखा । जाना कोउ रिपु दूत बिसेषा ।।
ताहि राखि कपीस पहिं आए । समाचार सब ताहि सुनाए ।।
कह सुग्रीव सुनहु रघुराई । आवा मिलन दसानन भाई ।।
कह प्रभु सखा बूझिए काहा । कहइ कपीस सुनहु नरनाहा ।।
जानि न जाइ निसाचर माया । कामरूप केहि कारन आया ।।
भेद हमार लेन सठ आवा । राखिअ बांधि मोहि अस भावा ।।
सखा नीति तुम्ह नीकि बिचारी । मम पन सरनागत भयहारी ।।
सुनि प्रभु बचन हरष हनुमाना । सरनागत बच्छल भगवाना ।।
दो०—सरनागत कहुं जे तजहिं निज अनहित अनुमानि ।
ते नर पावंर पापमय तिन्हहि बिलोकत हानि ।।४३।।
कोटि बिप्र बध लागहिं जाहू । आएं सरन तजउं नहिं ताहू ।।
सनमुख होइ जीव मोहि जबहीं । जन्म कोटि अघ नासहिं तबहीं ।।
पापवंत कर सहज सुभाऊ । भजनु मोर तेहि भाव न काऊ ।।
जौं पै दुष्ट हृदय सोइ होई । मोरें सनमुख आव कि सोई ।।
निर्मल मन जन सो मोहि पावा । मोहि कपट छल छिद्र न भावा ।।
भेद लेन पठवा दससीसा । तबहुं न कछु भय हानि कपीसा ।।
जग महुं सखा निसाचर जेते । लछिमन हनइ निमिष महुं तेते ।।
जौं सभीत आवा सरनाई । रखिहउं ताहि प्रान की नाईं ।।
दो०—उभय भांति तेहि आनहु हंसि कह कृपानिकेत ।।
जय कृपाल कहि कपि चले अंगद हनू समेत ।।४४।।
सादर तेहि आगें करि बानर । चले जहां रघुपति करुनाकर ।।
दूरिहि ते देखे द्वौ भ्राता । नयनानंद दान के दाता ।।
बहुरि राम छबिधाम बिलोकी । रहेउ ठटुकि एकटक पल रोकी ।।
भुज प्रलंब कंजारुन लोचन । स्यामल गात प्रनत भय मोचन ।।
सिंघ कंध आयत उर सोहा । आनन अमित मदन मन मोहा ।।
नयन नीर पुलकित अति गाता । मन धरि धीर कही मृदु बाता ।।
नाथ दसानन कर मैं भ्राता । निसिचर बंस जनम सुरत्राता ।।
सहज पापप्रिय तामस देहा । जथा उलूकहि तम पर नेहा ।।

दो०—श्रवन सुजसु सुनि आयउं प्रभु भंजन भव भीर ।
त्राहि त्राहि आरति हरन सरन सुखद रघुबीर ।।४५।।
अस कहि करत दंडवत देखा । तुरत उठे प्रभु हरष बिसेषा ।।
दीन बचन सुनि प्रभु मन भावा । भुज बिसाल गहि हृदयं लगावा ।।
अनुज सहित मिलि ढिग बैठारी । बोले बचन भगत भयहारी ।।
कहु लंकेस सहित परिवारा । कुसल कुठाहर बास तुम्हारा ।।
खल मंडली बसहु दिनु राती । सखा धरम निबहई केहि भांति ।।
मैं जानउं तुम्हारि सब रीती । अति नय निपुन न भाव अनीती ।।
बरु भल बास नरक कर ताता । दुष्ट संग जनि देई बिधाता ।।
अब पद देखि कुसल रघुराया । जौं तुम्ह कीन्हि जानि जन दाया ।।
दो०—तब लगि कुसल न जीव कहुं सपनेहुं मन बिश्राम ।
जब लगि भजत न राम कहुं सोक धाम तजि काम ।।४६।।
तब लगि हृदय बसत खल नाना । लोभ मोह मच्छर मद माना ।।
जब लगि उर न बसत रघुनाथा । धरें चाप सायक कटि भाथा ।।
ममता तरुन तमी अंधिआरी । राग द्वेष उलूक सुखकारी ।।
तब लगि बसति जीव मन माहीं । जब लगि प्रभु प्रताप रबि नाहीं ।।
अब मैं कुसल मिटे भय भारे । देखि राम पद कमल तुम्हारे ।।
तुम्ह कृपाल जा पर अनुकूला । ताहि न ब्याप त्रिबिध भव सूला ।।
मैं निसिचर अति अधम सुभाऊ । सुभ आचरनु कीन्ह नहिं काऊ ।।
जासु रूप मुनि ध्यान न आवा । तेहिं प्रभु हरषि हृदयं मोहि लावा ।।
दो०—अहोभाग्य मम अमित अति राम कृपा सुख पुंज ।
देखेउं नयन बिरंचि सिव सेब्य जुगल पद कंज ।।४७।।
सुनहु सखा निज कहउं सुभाऊ । जान भुसुंडि संभु गिरिजाऊ ।।
जौं नर होइ चराचर द्रोही । आवै सभय सरन तकि मोही ।।
तजि मद मोह कपट छल नाना । करउं सद्य तेहि साधु समाना ।।
जननी जनक बंधु सुत दारा । तनु धनु भवन सुहृद परिवारा ।।
सब कै ममता ताग बटोरी । मम पद मनहि बांध बरि डोरी ।।
समदरसी इच्छा कछु नाहीं । हरष सोक भय नहिं मन माहीं ।।
अस सज्जन मम उर बस कैसें । लोभी हृदयं बसइ धनु जैसें ।।
तुम्ह सारिखे संत प्रिय मोरें । धरउं देह नहिं आन निहोरें ।।
दो०—सगुन उपासक परहित निरत नीति दृढ़ नेम ।
ते नर प्रान समान मम जिन्ह कें द्विज पद प्रेम ।।४८।।

सुनु लंकेस सकल गुन तोरें । तातें तुम्ह अतिसय प्रिय मोरें ॥
राम बचन सुनि बानर जूथा । सकल कहहिं जय कृपा बरूथा ॥
सुनत बिभीषन प्रभु कै बानी । नहिं अघात श्रवनामृत जानी ॥
पद अंबुज गहि बारहिं बारा । हृदयं समात न प्रेमु अपारा ॥
सुनहु देव सचराचर स्वामी । प्रनतपाल उर अंतरजामी ॥
उर कछु प्रथम बासना रही । प्रभु पद प्रीति सरित सो बही ॥
अब कृपाल निज भगति पावनी । देहु सदा सिव मन भावनी ॥
एवमस्तु कहि प्रभु रनधीरा । मागा तुरत सिंधु कर नीरा ॥
जदपि सखा तव इच्छा नाहीं । मोर दरसु अमोघ जग माहीं ॥
अस कहि राम तिलक तेहि सारा । सुमन बृष्टि नभ भई अपारा ॥

दो०—रावन क्रोध अनल निज स्वास समीर प्रचंड ।
जरत बिभीषनु राखेउ दीन्हेउ राजु अखंड ॥४९(क)॥
जो संपति सिव रावनहि दीन्हि दिएं दस माथ ।
सोइ संपदा बिभीषनहि सकुचि दीन्हि रघुनाथ ॥४९(ख)॥

अस प्रभु छाड़ि भजहिं जे आना । ते नर पसु बिनु पूंछ बिषाना ॥
निज जन जानि ताहि अपनावा । प्रभु सुभाव कपि कुल मन भावा ॥
पुनि सर्बग्य सर्ब उर बासी । सर्बरूप सब रहित उदासी ॥
बोले बचन नीति प्रतिपालक । कारन मनुज दनुज कुल घालक ॥
सुनु कपीस लंकापति बीरा । केहि बिधि तरिअ जलधि गंभीरा ॥
संकुल मकर उरग झष जाती । अति अगाध दुस्तर सब भांती ॥
कह लंकेस सुनहु रघुनायक । कोटि सिंधु सोषक तव सायक ॥
जद्यपि तदपि नीति असि गाई । बिनय करिअ सागर सन जाई ॥

दो०—प्रभु तुम्हार कुलगुर जलधि कहिहि उपाय बिचारि ॥
बिनु प्रयास सागर तरिहि सकल भालु कपि धारि ॥५०॥

सखा कही तुम्ह नीकि उपाई । करिअ दैव जौं होइ सहाई ॥
मंत्र न यह लछिमन मन भावा । राम बचन सुनि अति दुख पावा ॥
नाथ दैव कर कवन भरोसा । सोषिअ सिंधु करिअ मन रोसा ॥
कादर मन कहुं एक अधारा । दैव दैव आलसी पुकारा ॥
सुनत बिहसि बोले रघुबीरा । ऐसेहिं करब धरहु मन धीरा ॥
अस कहि प्रभु अनुजहि समुझाई । सिंधु समीप गए रघुराई ॥
प्रथम प्रनाम कीन्ह सिरु नाई । बैठे पुनि तट दर्भ डसाई ॥
जबहिं बिभीषन प्रभु पहिं आए । पाछें रावन दूत पठाए ॥

दो०—सकल चरित तिन्ह देखे धरें कपट कपि देह ।
प्रभु गुन हृदय सराहहिं सरनागत पर नेह ॥५१॥

प्रगट बखानहिं राम सुभाऊ । अति सप्रेम गा बिसरि दुराऊ ॥
रिपु के दूत कपिन्ह तब जाने । सकल बांधि कपीस पहिं आने ॥
कह सुग्रीव सुनहु सब बानर । अंग भंग करि पठवहु निसिचर ॥
सुनि सुग्रीव बचन कपि धाए । बांधि कटक चहु पास फिराए ॥
बहु प्रकार मारन कपि लागे । दीन पुकारत तदपि न त्यागे ॥
जो हमार हर नासा काना । तेहि कोसलाधीस कै आना ॥
सुनि लछिमन सब निकट बोलाए । दया लागि हंसि तुरत छोड़ाए ॥
रावन कर दीजहु यह पाती । लछिमन बचन बाचु कुलघाती ॥

दो०—कहेहु मुखागर मूढ़ सन मम संदेसु उदार ॥
सीता देइ मिलहु न त आवा कालु तुम्हार ॥५२॥

तुरत नाइ लछिमन पद माथा । चले दूत बरनत गुन गाथा ॥
कहत राम जसु लंका आए । रावन चरन सीस तिन्ह नाए ।
बिहसि दसानन पूंछी बाता । कहसि न सुक आपनि कुसलाता ॥
पुनि कहु खबरि बिभीषन केरी । जाहि मृत्यु आई अति नेरी ॥
करत राज लंका सठ त्यागी । होइहि जव कर कीट अभागी ॥
पुनि कहु भालु कीस कटकाई । कठिन काल प्रेरित चलि आई ॥
जिन्ह के जीवन कर रखवारा । भयउ मृदुल चित सिंधु बिचारा ॥
कहु तपसिन्ह कै बात बहोरी । जिन्ह के हृदय त्रास अति मोरी ॥

दो०—की भइ भेंट कि फिरि गए श्रवन सुजसु सुनि मोर ।
कहसि न रिपु दल तेज बल बहुत चकित चित तोर ॥५३॥

नाथ कृपा करि पूंछेहु जैसें । मानहु कहा क्रोध तजि तैसें ॥
मिला जाइ जब अनुज तुम्हारा । जातहिं राम तिलक तेहि सारा ॥
रावन दूत हमहि सुनि काना । कपिन्ह बांधि दीन्हे दुख नाना ॥
श्रवन नासिका काटैं लागे । राम सपथ दीन्हें हम त्यागे ॥
पूंछिहु नाथ राम कटकाई । बदन कोटि सत बरनि न जाई ॥
नाना बरन भालु कपि धारी । बिकटानन बिसाल भयकारी ॥
जेहिं पुर दहेउ हतेउ सुत तोरा । सकल कपिन्ह महं तेहि बलु थोरा ॥
अमित नाम भट कठिन कराला । अमित नाग बल बिपुल बिसाला ॥

दो०—द्विबिद मयंद नील नल अंगद गद बिकटासि ।
दधिमुख केहरि निसठ सठ जामवंत बलरासि ॥५४॥

ए कपि सब सुग्रीव समाना । इन्ह सम कोटिन्ह गनइ को नाना ।
राम कृपा अतुलित बल तिन्हहीं । तृन समान त्रैलोकहि गनहीं ॥
अस मैं सुना श्रवन दसकंधर । पदुम अठारह जूथप बन्दर ॥
नाथ कटक महं सो कपि नाहीं । जो न तुम्हहि जीतै रन माहीं ॥
परम क्रोध मीजहिं सब हाथा । आयसु पै न देहिं रघुनाथा ॥
सोषहिं सिंधु सहित झष ब्याला । पूरहिं न त भरि कुधर बिसाला ॥
मर्दि गर्द मिलवहिं दससीसा । ऐसेइ बचन कहहिं सब कीसा ॥
गर्जहिं तर्जहिं सहज असंका । मानहुं ग्रसन चहत हहिं लंका ॥
दो०—सहज सूर कपि भालु सब पुनि सिर पर प्रभु राम ।
रावन काल कोटि कहुं जीति सकहिं संग्राम ॥५५॥
राम तेज बल बुधि बिपुलाई । सेष सहस सत सकहिं न गाई ॥
सक सर एक सोषि सत सागर । तव भ्रातहि पूंछेउ नय नागर ॥
तासु बचन सुनि सागर पाहीं । मागत पंथ कृपा मन माहीं ॥
सुनत बचन बिहसा दससीसा । जौं असि मति सहाय कृत कीसा ॥
सहज भीरु कर बचन दृढ़ाई । सागर सन ठानी मचलाई ॥
मूढ़ मृषा का करसि बड़ाई । रिपु बल बुद्धि थाह मैं पाई ॥
सचिव सभीत बिभीषन जाकें । बिजय बिभूति कहां जग ताकें ॥
सुनि खल बचन दूत रिस बाढ़ी । समय बिचारि पत्रिका काढ़ी ॥
रामानुज दीन्हीं यह पाती । नाथ बचाइ जुड़ावहु छाती ॥
बिहसि बाम कर लीन्ही रावन । सचिव बोलि सठ लाग बचावन ॥
दो०—बातन्ह मनहि रिझाइ सठ जनि घालसि कुल खीस ।
राम बिरोध न उबरसि सरन बिष्नु अज ईस ॥५६(क)॥
की तजि मान अनुज इव प्रभु पद पंकज भृंग ।
होहि कि राम सरानल खल कुल सहित पतंग ॥५६(ख)॥
सुनत सभय मन मुख मुसुकाई । कहत दसानन सबहि सुनाई ॥
भूमि परा कर गहत अकासा । लघु तापस कर बाग बिलासा ॥
कह सुक नाथ सत्य सब बानी । समुझहु छाड़ि प्रकृति अभिमानी ॥
सुनहु बचन मम परिहरि क्रोधा । नाथ राम सन तजहु बिरोधा ॥
अति कोमल रघुबीर सुभाऊ । जद्यपि अखिल लोक कर राऊ ॥
मिलत कृपा तुम्ह पर प्रभु करिही । उर अपराध न एकउ धरिही ॥
जनकसुता रघुनाथहि दीजे । एतना कहा मोर प्रभु कीजे ॥
जब तेहिं कहा देन बैदेही । चरन प्रहार कीन्ह सठ तेही ॥

नाइ चरन सिरु चला सो तहां । कृपासिंधु रघुनायक जहां ॥
करि प्रनामु निज कथा सुनाई । राम कृपां आपनि गति पाई ॥
रिषि अगस्ति कीं साप भवानी । राछस भयउ रहा मुनि ग्यानी ॥
बंदि राम पद बारहिं बारा । मुनि निज आश्रम कहुं पगु धारा ॥
दो०—बिनय न मानत जलधि जड़ गए तीनि दिन बीति ।
बोले राम सकोप तब भय बिनु होइ न प्रीति ॥५७॥
लछिमन बान सरासन आनू । सोषौं बारिधि बिसिख कृसानू ॥
सठ सन बिनय कुटिल सन प्रीती । सहज कृपन सन सुन्दर नीती ॥
ममता रत सन ग्यान कहानी । अति लोभी सन बिरति बखानी ॥
क्रोधिहि सम कामिहि हरि कथा । ऊसर बीज बएं फल जथा ॥
अस कहि रघुपति चाप चढ़ावा । यह मत लछिमन के मन भावा ॥
संधानेउ प्रभु बिसिख कराला । उठी उदधि उर अंतर ज्वाला ॥
मकर उरग झष गन अकुलाने । जरत जंतु जलनिधि जब जाने ॥
कनक थार भरि मनि गन नाना । बिप्र रूप आयउ तजि माना ॥
दो०—काटेहि पइ कदरी फरइ कोटि जतन कोउ सींच ।
बिनय न मान खगेस सुनु डाटेहि पइ नव नीच ॥५८॥
सभय सिंधु गहि पद प्रभु केरे । छमहु नाथ सब अवगुन मेरे ॥
गगन समीर अनल जल धरनी । इन्ह कइ नाथ सहज जड़ करनी ॥
तव प्रेरित मायां उपजाए । सृष्टि हेतु सब ग्रंथनि गाए ॥
प्रभु आयसु जेहि कहं जस अहई । सो तेहि भांति रहे सुख लहई ॥
प्रभु भल कीन्ह मोहि सिख दीन्ही । मरजादा पुनि तुम्हरी कीन्ही ॥
ढोल गवांर सूद्र पसु नारी । सकल ताड़ना के अधिकारी ॥
प्रभु प्रताप मैं जाब सुखाई । उतरिहि कटकु न मोरि बड़ाई ॥
प्रभु अग्या अपेल श्रुति गाई । करौं सो बेगि जो तुम्हहि सोहाई ॥
दो०—सुनत बिनीत बचन अति कह कृपाल मुसुकाइ ।
जेहि बिधि उतरै कपि कटकु तात सो कहहु उपाइ ॥५९॥
नाथ नील नल कपि द्वौ भाई । लरिकाईं रिषि आसिष पाई ॥
तिन्ह कें परस किएं गिरि भारे । तरिहहिं जलधि प्रताप तुम्हारे ॥
मैं पुनि उर धरि प्रभु प्रभुताई । करिहउं बल अनुमान सहाई ॥
एहि बिधि नाथ पयोधि बंधाइअ । जेहिं यह सुजसु लोक तिहुं गाइअ ॥
एहिं सर मम उत्तर तट बासी । हतहु नाथ खल नर अघ रासी ॥
सुनि कृपाल सागर मन पीरा । तुरतहिं हरी राम रनधीरा ॥

देखि राम बल पौरुष भारी । हरषि पयोनिधि भयउ सुखारी॥
सकल चरित कहि प्रभुहि सुनावा । चरन बंदि पाथोधि सिधावा ॥
छं० निज भवन गवनेउ सिंधु श्री रघुपतिहि यह मत भायऊ ।
यह चरित कलि महलर जथा मति दास तुलसी गायऊ ॥
सुख भवन संसय समन दवन बिषाद रघुपति गुन गाना ॥
तजि सकल आस भरोस गावहि सुनहि संतत सठ मना ॥
दो० सकल सुमंगल दायक रघुनायक गुन गान ।
सादर सुनहि ते तरहि भव सिंधु बिना जलजान ॥६०॥

——०:——

:अमोघशिवकवचम् :

अस्य श्रीशिवकवचस्तोत्रमन्त्रस्य ब्रम्हा ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्री सदाशिवरुद्रो देवता, ह्रीं शक्तिः वं कीलकम् श्रीं ह्रीं क्लीं बीजम्, सदाशिव प्रीत्यर्थे शिवकवचस्तोत्रजपे विनियोग : ।

ऋष्यादिन्यासः

ओम ब्रह्मऋषये नमः शिरसि ।
अनुष्टुप्छन्दसे नमः मुखे ।
श्री सदाशिव रुद्रदेवताये नमः हृदि ।
ह्रीं शक्तये नमः पादयोः ।
वं कीलकाय नमः नामो ।
श्रीं ह्रीं क्लींमिति बीजाय नमः गुह्ये ।
विनियोगाव नमः सर्वांगे ।

अथ करन्यासः

ओम नमो भगवते ज्वलज्ज्वालामालिने ओम ह्रीं रां सर्व-शक्तिधाम्ने ईशानात्मने अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥

ओम नमो भगवते ज्वलज्ज्वालामालिने ओम नं रीं नित्य-तृप्तिधाम्ने तत्पुरुषात्मने तर्जनीभ्यां स्वाहाः ॥

ओम नमो भगवते ज्वलज्ज्वालामालिने ओम मं रूं अना-दिशक्तिधाम्ने अघोरात्मने मध्यमाभ्यां वषट् ।

ओम नमो भगवते ज्वलज्ज्वालामालिने ओम हिं रें स्वतन्त्र-शक्तिधाम्ने वामदेवात्मने अनामिकाभ्यां हुन् ।

ओम नमो भगवते ज्वलज्ज्वालामालिने ओम वां रों अलुप्त-शक्तिधाम्ने सद्योजातात्मने कनिष्ठिकाभ्यां वौषट् ।

ओम नमो भगवते ज्वलज्ज्वालामालिने ओमयं रः अनादि-शक्तिधाम्ने सर्वात्मने करतलकरपृष्ठाभ्यां फट् ।

हृदयाद्यंगन्यास :

ओम नमो भगवते ज्वलज्ज्वालामालिने ओम ह्रीं रां सर्व-शक्तिधाम्ने ईशानात्मने हृदयाय नमः ।

ओम नमो भगवते ज्वलज्ज्वालामालिने ओम नं रीं नित्य-तृप्तिधाम्ने तत्पुरुषात्मने शिरसे स्वाहा ॥

ओम नमो भगवते ज्वलज्ज्वालामालिने ओम मं रूं अनादि-शक्तिधाम्ने अघोरात्मने शिखाये वषट् ।

ओम नमो भगवते ज्वलज्ज्वालामालिने ओम शिं रें स्वतन्त्र शक्तिधाम्ने वामदेवात्मने कवचाय हुम् ।

ओम नमो भगवते ज्वलज्ज्वालामालिने ओम वां रीं अलुप्त-शक्तिधाम्ने सद्योजातात्मने नेत्रत्रयाय वौषट् ।

ओम नमो भगवते ज्वलज्ज्वालामालिने ओम यं रः अनादि-शक्तिधाम्ने सर्वात्मने अस्त्राय फट् ।

अथ ध्यानम्

वज्रदंष्ट्रं त्रिनयनं कालकण्ठमरिंदमम् ।
सहस्रकरमप्युग्रं वन्दे शम्भुमुमापतिम् ॥

ऋषभ उवाच

अथापरं सर्वपुराणगुह्यं निः शेषपापौघहरं पवित्रम्
जयप्रदंसर्वविपद्विमोचनं वक्ष्यामि शैवं कवचंहिताय ते ॥

नमस्कृत्य महादेवं विश्वव्यापिनमीश्वरम् ।
वक्ष्ये शिवमयं वर्म सर्वरक्षाकरं नृणाम् ॥१॥
शुचौ देशे समासीनो यथावत्कल्पितासनः ।
जितेन्द्रियो जितप्राणश्चिन्तयेच्छिवमव्ययम् ॥२॥
हृत्पुण्डरीकान्तसंनिविष्टं
स्वतेजसा व्याप्तनभो वकाशम् ।
अतीन्द्रियं सूक्ष्ममनन्तमाद्यं
ध्यायेत्परानन्दमयं महेशम् ॥३॥
ध्यानावधूताखिलकर्मबन्ध-
श्चिरं चिदानन्दनिमग्नचेताः ।
षडक्षरन्याससमाहितात्मा
शैवेन कुर्यात् कवचेन रक्षाम् ॥४॥
मां पातु देवो खिलदेवतात्मा
संसारकूपे पतितं गभीरे ।
तन्नाम दिव्यं वरमन्त्रमूलं
धुनोतु मे सर्वमघं हृदिस्थम् ॥५॥
सर्वत्र मां रक्षतु विश्वमूर्ति-
ज्योतिर्मयानन्दघनश्चिदात्मा ।
अणोरणीयानुरुशक्तिरेक :
स ईश्वर : पातु भयादशेषात् ॥६॥
यो भूस्वरूपेण नृणां करोति
संजीवनं सो वतु मां जलेभ्यः ॥७॥
कल्पावसाने भुवनानि दग्ध्वा
सर्वाणि यो नृत्यति भूरिलीलः ।
स कालरुद्रो वतु मां दवाग्ने-
र्वात्यादिभीतेरखिलाच्च तापात् ॥८॥
प्रदीप्तविद्युत्कनकावभासो
विद्यावराभीतिकुठारपाणि : ।
चतुर्मुखस्तत्पुरुषस्त्रिनेत्रः
प्राच्यां स्थितं रक्षतु मामजस्रम् ॥९॥
कुठारवेदाङ्कुशपाशशूल-
कपालढक्काक्षगुणान् दधान : ।

चतुर्मुखो नीलरुचिस्त्रिनेत्र :
पायादघोरो दिशि दक्षिणस्याम् ॥१०॥
कुन्देन्दुशंखस्फटिकावभासो
वेदाक्षमालावरदाभयांक :
त्र्यक्षश्चतुर्वक्त्र उरुप्रभाव :।
सद्यो धिजातो वतु मां प्रतीच्याम् ॥११॥
वराक्षमालाभयटंकहस्तः
सरोजकिञ्जल्कसमानवर्णः।
त्रिलोचनश्चारुचतुर्मुखो मां
पायादुदीच्यां दिशि वामदेवः ॥१२॥
वेदाभयेष्टांकुशपाशटंक-
कपालढक्काक्षकशूलपाणिः ।
सितद्युतिः पंचमुखो वतान्मा-
मीशान ऊर्ध्वं परमप्रकाशः ॥१३॥
मूर्द्धानमव्यान्मम चन्द्रमौलि-
र्भालं ममाव्यादथ भालनेत्रः ।
नेत्रे ममाव्याद भगनेत्रहारी ।
नासां सदा रक्षतु विश्वनाथः ॥१४॥
पायाच्छ्रुती मे श्रुतिगीतकीर्ति :
कपोलमव्यात् सततं कपाली ।
वक्त्रं सदा रक्षतु पंचवक्त्रो,
जिह्वां सदा रक्षतु वेदजिह्वः ॥१५॥
कण्ठं गिरीशो वतु नीलकण्ठः
पाणिद्वयं पातु पिनाकपाणि : ।
दोर्मूलमव्यान्मम धर्मबाहु
र्वक्षःस्थलं दक्षमखान्तको व्यात् ॥१६॥
ममोदरं पातु गिरीन्द्रधन्वा
मध्यं ममाव्यान्मदनान्तकारी ।
हेरम्बतातो मम पातु नाभिं
पायात् कटी धूर्जटिरीश्वरो मे ॥१७॥
ऊरुद्वयं पातु कुबेरमित्रो
जानुद्वयं मे जगदीश्वरो व्यात् ।

जंघायुगं पुंगवकेतुरव्यात्
पादौ ममाव्यात् सुरवन्द्यपादः ॥१८॥
महेश्वरः पातु दिनादियामे
मां मध्ययामे वतु वामदेवः ।
त्रियम्बकः पातु तृतीययामे
वृषध्वजः पातु दिनान्त्ययामें ॥१९॥
पायान्निशादौ शशिशेखरो मां
गंगाधरो रक्षतु मां निशीसे ।
गौरीपतिः पातु निशावसाने
मृत्युंजयो रक्षतु सर्वकालम् ॥२०॥
अन्तःस्थितं रक्षतु शंकरो मां
स्थाणुः सदा पातु बहिःस्थितं माम् ।
तदन्तरे पातु पतिः पशूनों
सदाशिवो रक्षतु मां समन्तात् ॥२१॥
तिष्ठन्तमव्याद्भुवनैकनाथः
पायाद् व्रजन्तं प्रमथाधिनाथः ।
वेदान्तवेद्यो वतु मां निषण्णं
मामव्ययः पातु शिवः शयानम् ॥२२॥
मार्गेषु मां रक्षतु नीलकण्ठः
शैलादिदुर्गेषु पुरत्रयारिः ।
अरण्यवासादिमहाप्रवासे
पायान्मृगव्याध उदारशक्तिः ॥२३॥
कल्पान्तकाटोपपटुप्रकोपः
स्फुटाट्टहासोच्चलिताण्डकोशः ।
घोरारिसेनार्णविदुर्निवार-
महाभयाद् रक्षतु वीरभद्रः ॥२४॥
पत्त्यश्वमातंगघटावरूथ-
सहस्रलक्षायुतकोटिभीषणम् ।
अक्षौहिणीना शतमाततायिनां
छिन्द्यान्मृडो घोरकुठारधारया ॥२५॥
निहन्तुदस्यून् प्रलयानलार्चि-
र्ज्वलत् त्रिशूलं त्रिपुरान्तकस्य ।

शार्दूलसिंह-वृकादिहिंस्रान्
संत्रासयत्वीशधनुः पिनाकम् ॥२६॥
दुस्वप्नदुश्शकुनदुर्गतिदौर्मनस्य
दुर्भिक्षदुर्व्यसनदुस्सहदुर्यशांसि ।
उत्पाततापविषभीतिमसद्ग्रहार्ति
व्याधींश्च नाशयतु मे जगतामधीशः ॥२७॥

ओम नमो भगवते सदाशिवाय सकलतत्वात्मकाय सकल-
तत्वविहाराय सकललोकैककर्त्रे सकललोकैकहर्त्रे सकललो-
कैकगुरवे सकललोकैकसाक्षिणे सकलनिगमगुह्याय सकलवरप्रदाय
सकलदुरितार्तिभंजनाय सकलजगदभयंकराय सकललोकैकशंक-
राय शशांकशेखराय शाश्वतनिजाभासाय निर्गुणाय निरुपमाय
नीरूपाय निराभासाय निरामयाय निष्प्रपंचाय निष्कलंकाय
निर्द्वन्द्वाय निस्संगाय निर्मलाय निर्गमाय नित्यरूपविभवाय
निरुपमविभवाय निराधाराय नित्यशुद्धबुद्धपरिपूर्णसच्चिदानन्दाद्व-
याय परमशान्तप्रकाशतेजोरूपाय जयजय महारुद्र महारौद्र
भद्रावतार दुःखदावदारण महाभैरव कालभैरव कल्पान्तभैरव
कपालमालाधर खट्वांगखड्गचर्मपाशांकुशडमरुशूलचाप बाणगदा
शक्तिभिन्दिपालतोमरमुसलमुद्गरपट्टिशपरशुपरिघभुशुण्डीशतघ्नी-
चक्राद्यायुधभीषणकर सहस्रमुख दंष्ट्राकराल विकटाट्टहास विस्फारित-
ब्रम्हण्डमण्डल नागेंद्र कुण्डल नागेन्द्रहारास नागेन्द्रवलय
नागेंद्रचर्मधर मृत्युञ्जय त्र्यम्बक त्रिपुरान्तक विरूपाक्ष विश्वेश्वर
विश्वरूप वृषवाहन विभूषण विश्वतोमुख सर्वतो रक्ष रक्ष
मां ज्वल ज्वल महामृत्युभय मपमृत्युभयं नाशय रोगभयमुत्सादयो
त्सादय विष सर्पभयं शमय शमय चोरभयं मारय मारय मम
शत्रून्च्चाटयोच्चाटय शूलेन विदारय विदारय कुठारेण भिन्धि
भिन्धि खड्गेन छिन्धि छिन्धि खट्वाङ्गेन विपोथय विपोथय मुसलेन
निष्पेषय निष्पेषय वाणैः संताडयसंताडय रक्षांसि भीषय भीषय
भूतानि विद्रावय विद्रावय कूष्माण्डवेतालमारीगणब्रम्हराक्षसान्
संत्रासय संत्रासय ममाभयं कुरु कुरु वित्रस्तं मामाश्वासयाश्वासय
नरकभयान्मामुद्धारयोद्धारय संजीवय संजीवय क्षुत्तृड्भ्यां मामा
प्याययाप्यायय दुःखातुरं मामानन्दयानन्दय शिवकवचेन मामाच्छा
दयाच्छादय त्र्यम्बक सदाशिव नमस्ते नमस्ते नमस्ते ।

: ऋषभ उवाच :

इत्येतत्कवचं शैवं वरदं व्याहृतं मया ।
सर्वबाधाप्रशमनं रहस्यं सर्वदेहिनाम् ॥२८॥
यः सदा धारयेन्मर्त्यः शैवः कवचमुत्तमम् ।
न तस्य जायते क्वापि भयं शम्भोरनुग्रहात ॥२९॥
क्षीणायुर्मृत्युमापन्नो महारोगहतो पिवा ।
सद्यः सुखमवाप्नोति दीर्घमायुश्च विन्दति ॥३०॥
सर्वदरिद्रयशमनं सांमगंल्यविवर्धनम् ।
यो धत्ते कवचं शैवं स देवैरपि पूज्यते ॥३१॥
महापातकसंघातैर्मुच्यते चोपातलकैः ।
देहान्ते शिवमाप्नोति शिववमानुभावतः ॥३२॥
त्वमपि श्रद्धया वत्स शैवं कवचमुत्तमम् ।
धारयस्व मया दत्तं सद्यः श्रेयो ह्यवाप्स्यसि ॥३३॥

-----०-----

लिङ्गाष्टकम्

श्री गणेशाय नमः ॥
ब्रह्ममुरारि सुरार्चितलिङ्ग निर्मल भासित शोभित लिङ्गम् ॥
जन्मजदुःख विनाशकलिङ्ग तत्प्रणमामि सदाशिव लिङ्गम् ॥१॥
देव मुनि प्रवरार्चितलिङ्ग कामदहं करुणाकर लिङ्गम् ॥
रावणदर्प विनाशनलिङ्ग तत्प्रणमामि सदाशिव लिङ्गम् ॥२॥
सर्वसुगंधिसुलेपित लिङ्गम् बुद्धि विवर्धन कारण लिङ्गम् ॥
सिद्ध सुरासुर वंदित लिङ्ग तत्प्रणमामि सदाशिव लिङ्गम् ॥३॥
कनक महामणि भूषित लिङ्ग फणिपति वेष्टित शोभित लिङ्गम् ॥
दक्षसुयज्ञ विनाशकलिङ्ग तत्प्रणमामि सदाशिव लिङ्गम् ॥४॥
कुंकुम चंदन लेपित लिङ्ग पंकज हार सुशोभितलिङ्गम् ॥
संचित पाप विनाशनलिङ्ग तत्प्रणमामि सदाशिव लिङ्गम् ॥४॥
देवगणार्चित सेवित लिङ्गम् भावैर्भक्तिभिरेव च लिङ्गम् ॥
दिनकर कोटि प्रभाकर लिङ्गम् तत्प्रण मामि सदाशिव लिङ्गम् ॥६॥

अष्टदलोपरि वेष्टितलिङ्ग सर्वसमुद्भव कारण लिङ्गम् ॥
अष्टदरिद्र विनाशित लिङ्ग तत्प्रणमामि सदाशिव लिङ्गम् ॥७॥
सुरगुरुसुरवर पूजित लिङ्गम् सुरवन पुष्पसदा चरित लिङ्गम् ॥
परात्परं परमात्मकलिङ्ग तत्प्रणमामि सदाशिव लिङ्गम् ॥८॥
लिंगाष्टकमिदं पुण्यं यः पठेच्छिवसन्निधौ ॥
शिव लोकम वाप्नोति शिवेन सह मोदते ॥९॥
इति श्री लिङ्गाष्टक स्त्रोतं संपूर्णम् ॥

—चन्द्रशेखराष्टकम्—

श्री गणेशाय नमः ॥
चंद्रशेखर चंद्रशेखर चंद्रशेखर पाहिमाम् ॥
चंद्रशेखर चंद्रशेखर चंद्रशेखर रक्षमाम् ॥१॥
रत्नसानुशासनं रजताद्रिशृंगनिकेतनं,
सिञ्जिनीकृतपन्नगेश्वर मच्युतायन सायकम् ॥
क्षिप्रदग्धपुरत्रयं त्रिदिवालयं रभिवन्दितं,
चंद्रशेखरमाश्रये मम कि करिष्यति वै यमः ॥२॥
पञ्चपाद पुष्पगन्धपदाम्बु जद्वयशोभित
भाल लोचन जात पावक दग्धमन्मथ विग्रहम् ॥
भस्मदिग्धकलेवरं भवनाशनं भवमव्ययं चंद्रशेखर॥३॥
मत्तवारणमुख्य चर्मकृत्तोत्तरीयमनोहरं
पङ्कजासनपद्मलोचन पूजितां घ्रिसरोरुहम् ॥
देवसिन्धु तरङ्गसीकर सिक्त शुभ्रजटाधरं चंद्रशेखर ॥४॥
यक्षराजसखं भगाक्षहरं भुजंङ्ग विभूषणं
शैलराजसुता परिष्कृत चारुवामकलेवरं ॥
क्ष्वेडनीलगलं परश्वधधारिणं मृगधारिणं चंद्रशेखर ॥५॥
कुण्डलीकृत कुण्डलेश्वर कुण्डलं वृष वाहनं,
नारदादि मुनीश्वरस्तुतिवैभवं भुवनेश्वरम् ॥
अन्ध कान्ध कमाश्रितामरपादपं शमनान्तकं चन्द्रशेखर ॥६॥
भेषजं भवरोगिणामखिलापदामप हारिणं
दक्ष यज्ञ विनाशनं त्रिगुणात्मकं त्रिविलोचनम् ॥
भुक्ति मुक्ति फलप्रदं सकलाघसंघनिबर्हणं चंद्रशेखर ॥७॥

भक्तवत्सलमर्जितं निधिमक्षयं हरिदम्बरं
सर्वभूत पतिं परात्परमप्रमेयमनुत्तमम् ।।
सोम वारिदभूहुताशन सोमपानि लखाकृति चंद्रशेखर ।।८।।
विश्वसृष्टिविधायिनं पुनरेव पालनतत्परं
संहरन्तमपि प्रपञ्चमशेष लोकनिवासनम् ।।
क्रीडयन्त महर्निशं गणनाथयूथ समन्वितं चंद्रशेखर ।।९।।
मृत्युभीत मृकण्डुसूनुकृतस्तवं शिवसन्निधौ
यत्र कुत्र च यः पठेन्न हि तस्य मृत्युभयं भवेत् ।।
पूर्णमायुर रोगितामखिलायं सम्पदमादरं
चंद्रशेखर एव तस्य ददाति मुक्ति मयत्नतः ।।१०।।

—दारिद्रयदहनशिवस्तोत्रम्—

श्री गणेशायनमः ।।
विश्वेश्वराय नरकार्णवतारणाय, कर्णामृताय शशिशेखर धारणाय ।।
कर्पूरकांतिधवलाय जटाधराय दारिद्रयदुःखदहनाय नमः शिवाय ।।१।।
गौरि प्रियाय रजनीश कलाधराय कालान्तकाय भुजगाधिपकंकणाय ।।
गंगाधराय गजराजविमर्दनाय दारिद्रयदुःख दहनाय नमः शिवाय ।।२।।
भक्तप्रियाय भवरोग भयापहाय उग्राय दुर्गभव सागर तारणाय ।।
ज्योतिर्मयाय गुणनामसुनृत्यकाय दारिद्रयदुःखदहनाय नमः शिवाय ३ ३।।
चर्माम्बराय भवभस्मविलेपनाय भालेक्षणाय मणि कुंडलमंडिताय ।।
मंजीर पादयुगलाय जटाधराय दारिद्रयदुःख दहनाय नमः शिवाय।।४।।
पञ्चाननाय फणिराज विभूषणाय हेमांशुकाय भुवनत्रय मंडिताय ।।
आनन्दभूमि वरदाय तमोमयाय दारिद्रयदुःखदहनाय नमः शिवाय ।।५।।
भानुप्रियाय भवसागर तारणाय कालान्तकाय कमलासनपूजिताय ।।
नेत्रत्रयाय शुभलक्षणलक्षिताय दारिद्रयदुःख दहनाय नमः शिवाय ।।६।।
रामप्रियाय रघुनाथवरप्रदाय नागप्रियाय नरकार्णवतारणाय ।।
पुण्येषु पुण्यभरिताय सुरार्चिताय दारिद्रयदुःख दहनाय नमः शिवाय।।७।।
मुक्तेश्वराय फलदाय गणेश्वराय गीतप्रियाय वृषभेश्वर वाहनाय ।।
मातङ्गचर्मवसनाय महेश्वराय दारिद्रयदुःख दहनाय नमः शिवाय ।।८।।
वसिष्ठेन कृतं स्त्रोतं सर्वरोगनिवारणं ।।
सर्वसंपत्करं शीघ्रं पुत्रपौत्रादिवर्धनम् ।।
त्रिसंध्यं य : पठेन्नित्यं स हि स्वर्गमवाप्नुयात् ।।९।।
इति श्री वसिष्ठविरचितं दारिद्रयदहन स्त्रोत सम्पूर्णम् ।।

—महामृत्युञ्जयस्तोत्रम्—

श्री गणेशाय नमः ।। ॐ अस्य श्री महामृत्युंजयस्तोत्रमन्त्रस्य श्री मार्कण्डेय ऋषिः।। अनुष्टुप् छन्दः । श्री मृत्युंजयोदेवता । गौरी शक्तिः । मम सर्वारिष्टसमस्त मृत्युशान्त्यर्थं सकलैश्वर्य प्राप्त्यर्थं च जपे विनियोग : ।। अथ ध्यानम् ।।

चंद्रार्काग्निविलोचनं स्मित मुखं पद्मद्वयान्तः स्थितं
मुद्रापाशमृगाक्षसूत्र विलसत्पाणिं हिमांशुप्रभम् ।।
कोटीन्दुप्रगलत्सुधाप्लुततनं हारादिभूषोज्ज्वलं,
कान्तं विश्वविमोहनं पशुपति मृत्युंजयं भावयेत् ।।

ॐ रुद्रं पशुपति स्थाणुं नील कण्ठ मुमापतिम् ।।
नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति ।।१।।
नील कण्ठं कालमूर्ति कालज्ञं कालनाशनम् ।।
नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति ।।२।।
नील कण्ठं विरुपाक्षं निर्मलं निलयप्रभम् ।।
नमामि शिरसा देव किं नो मृत्यु : करिष्यति ।।३।।
वामदेवं महादेवं लोकनाथं जगद् गुरुम् ।।
नमामि शिरसा देव किं नो मृत्युः करिष्यति ।।४।।
देव देवं जगन्नाथं देवेशं वृषभध्वजम् ।।
नमामि शिरसा देव किं नो मृत्युः करिष्यति ।।५।।
गङ्गाधरं महादेवं सर्वाभरण भूषिताम् ।।
नमामि शिरसा देव किं नो मृत्युः करिष्यति ।।६।।
अनाथः परमानन्द कैवल्यपददायिनम् ।।
नमामि शिरशा देव किं नो मृत्युः करिष्यति ।।७।।
स्वर्गापवर्ग दातारं सृष्टि स्थिति विनाशकम् ।।
नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति ।।८।।
उत्पत्तिस्थिति संहारकर्त्तारमीश्वरं गुरुम् ।।
नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति ।।९।।
मार्कण्डेयकृतं स्तोत्रं यः पठेच्छिवसन्निधौ ।।
तस्य मृत्यु भयं नास्ति नाग्नि चौरभयं क्वचित् ।।१०।।
शतावर्तं प्रकर्तव्यं संकटे कष्ट नाशनम् ।।
शुचिर्भूत्वा पठेत्स्तोत्रं सर्वसिद्धि प्रदायकम् ।।११।।

मृत्युञ्जय महादेव त्राहिमां शरणागतम् ॥
जन्म मृत्यु जरारोगैः पीड़ितं कर्म बन्धनैः ॥१२॥
तावतस्त्वद्गतप्राणस्त्वच्चितोऽहं सदामृड ॥
इति विज्ञाप्य देवेशं त्र्यंबकारव्य मनुं जपेत् ॥१३॥
नमः शिवाय साम्बाय हरये परमात्मने ॥
प्रणतक्लेशनाशाय योगिनां पतये नमः ॥

॥ शताङ्गयुर्मन्त्रः ॥

ॐ ह्रीं श्रीं भ्रीं ह्रुं हः हन हन दह दह पच पच गृहाण गृहाण मारय मारय मर्दय मर्दय महा महाभैरव भैरव रुपेण धुनुय धुनुय कम्पय कम्पय विघ्नय विघ्नय विश्वेश्वर क्षोभय क्षोभय कटु कटु मोहय हुं फट् स्वाहा ॥ इति मन्त्र मात्रेण लब्धा भीष्टो भवति इति श्री मार्कण्डेय पुराणे मार्कण्डेयकृतं महामृत्युञ्जयस्तोत्रं संपूर्णम ॥

—सहस्त्राक्षर मंत्र—

ॐ नमो भगवते सदाशिवाय सकल तत्वात्मकाय सर्व मन्त्र-स्वरुपाय सर्वयन्त्राधिष्ठिताय सर्वतन्त्रस्वरुपाय सर्वतत्व विदूराय ब्रह्मरुद्रावतारिणे नील कण्ठाय पार्वती मनोहरप्रियाय सोमसूर्याग्नि लोचनाय भस्मोद्धूलित विग्रहाय महामणिमुकुट धारणाय माणिक्य-भूषणाय सृष्टिस्थिति प्रलय काल रौद्रावताराय दक्षाध्वरध्वंसकाय महाकाल भेदनाय मूलाधारै कनिलयाय तत्वातीताय गङ्गाधराय-सर्वदेवाधिदेवाय षडाश्रयाय वेदान्त साराय त्रिवर्गसाधनानं ककोटि ब्रह्माण्ड नायकायानन्त वासुकि तक्षक कर्कोटकशङ्ख कुलिक पद्म-महा पद्मेत्यष्टनाग कुलभूषणाय प्रवणस्वरुपाय चिदाकाशाया-काशदिक स्वरुपाय ग्रह नक्षत्र मालिने सकलाय कलङ्क रहिताय सकल लोकैक कर्त्रे सकल लोकैक संहर्त्रे सकल लोकैक गुरुवे सकल लोकैक मर्त्रे सकल लोकैक साक्षिणे सकल निगम गुह्याय सकल वेदान्त पारणाय सकल लोकैक वर प्रदाय सकल लोकैक शङ्कराय शशाङ्क शेखराय शाश्वत निजावासाय निराभासाय निरामयाय निर्मलाय निर्लोभाय निर्मोहाय निर्मदाय निश्चिन्ताय निरहङ्काराय निराकुलाय निष्कलङ्कायनिर्गुणाय निष्कामाय निरुपप्लवाय निरवद्याय

निरन्तराय निष्कारणाय निरातङ्काय निष्प्रपञ्चाय निः सङ्गाय निर्द्वन्द्वाय निराधाराय निरोगाय निष्क्रोधाय निर्गमाय निष्पापाय निर्भयाय निर्विकल्पाय निर्भेदाय निष्क्रियाय निस्तुलाय निःसंशयाय निरञ्जनाय निरुपम विभवाय नित्य शुद्धबुद्धपरिपूर्ण सच्चिदा-नन्दाद्वयाय परम शान्त स्वरुपाय तेजोरुपाय तेजोमयाय जय जय रुद्र महारौद्र भद्रावतार महाभैरव कालभैरव कल्पान्त भैरव कपाल मालाधर खट्वाङ्गखड्ग चर्मपाशाङ्कुशडमरुकर त्रिशूलचाप बाणगदाशक्ति भिन्दपालतोमरमुसल मुदगरप्रास परिघ भुशुण्डी शघ्नीचक्राद्यायुध भीषण कर सहस्त्रमुख दंष्ट्रा कराल वदन विकटाट्टहास विस्फारित ब्रह्माण्ड मण्डल नागेन्द्र कुण्डल नागेन्द्र हार नागेन्द्र वलय नागेन्द्र चर्मधर मृत्युञ्जय त्रयम्बक त्रिपुरान्तक विश्वरूप विरुपाक्ष विश्वेश्वर वृषभवाहन विश्वतोमुख सर्वतो रक्ष रक्ष मां ज्वल ज्वल महामृत्युमप मृत्युभयं नाशय नाशय चोर भय भुत्सादयोत्सादय विषसर्पभयं शमय शमय चौरान्मारय मम शत्रूनुच्चाटयोच्चाटय त्रिशूलेन विदारय-विदारय कुरेण भिंधि भिन्धि खड्गेन छिन्धं छिन्धि खड वाङ्गे न विपोथय विपोथय मुसलेन निष्पेषय बाणैः सन्ताऽय सन्ताऽय रक्षांसि भीषय भीषयाशेष भूतानि विद्रावय विद्रावय कूष्माण्ड वेताल मारीच ब्रह्म राक्षस सगणान् सन्त्रासय सन्त्रासय माम् भयं कुरु कुरु वित्रस्त मामाश्वासयाश्वा-सय नरकभयान्मामुद्धरोद्धर सञ्जीवय सञ्जीवय क्षुतृड्भ्यां मामाप्या-ययाप्यायय दुःखातुरं मामानन्द यान्दय शिवकवचेन मामाच्छा-दयाच्छादय मृत्युञ्जय त्रयम्बक सदाशिव नमस्ते नमस्ते !

॥ अथ श्रीसूक्त प्रारंभः ॥ .

श्री गणेशाय नमः ॥ अथ श्रीमहालक्ष्म्यै नमः ॥ हिरण्यवर्णा-मिति पंचदशर्चस्य सूक्तस्य आनंदकर्दम चिक्लीतेंदिरासुता ऋषयः ॥ श्रीरग्निश्चेत्युभे देवते ॥ आद्यास्तिस्त्रो नुष्टुभः ॥ अंत्याप्रस्तार पंक्तिः ॥ जपे विनियोगः ॥

हरिः ओम ॥
हिरण्यवर्णांहरिणीं सुवर्णरजतस्रजाम् ॥
चंद्रांहिरण्मयींलक्ष्मींजातवेदोम आवह ॥
तांमआवहजातवेदोलक्ष्मीमनपगामिनीम् ॥
यस्यांहिरण्यंविंदेयंगामश्वंपुरुषानहम् ॥
अश्वपूर्वांरथमध्यांहस्तिनादप्रबोधिनीम् ॥
श्रियंदेवीमुपह्वये श्रीर्मादेवीजुषताम् ॥
कांसोस्मितांहिरण्यप्राकारा मार्द्रांज्वलंतींतृप्तांतर्पयंतीम् ॥
पद्मेस्थितांपद्मवर्णांता मिहोपह्वयेश्रियम् ॥
चंद्रांप्रभासांयशसाज्वलंतींश्रियं लोकेदेवजुष्टामुदाराम् ॥
तांपद्मिनींमींशरणमहंप्रपद्ये अलक्ष्मीर्मेनश्यतांत्वांवृणे ॥१॥

आदित्यवर्णेतपसोधिजातोवनस्पतिस्तववृक्षोथबिल्वः ॥
तस्यफलानितपसानुदंतुमायांतरायाश्चबाह्याअलक्ष्मीः ॥
उपैतुमांदेवसखः कीर्तिश्चमणिनासह ॥
प्रादुर्भूतोसुराष्ट्रेस्मिन्कीर्तिमृद्धिंददातुमे ॥
क्षुत्पिपासामलांज्येष्ठामलक्ष्मींनाशयाम्यहम् ॥
अभूतिमसमृद्धिंचसर्वांनिर्णुदमेगृहात् ॥
गंधद्वारांदुराधर्षांनित्यपुष्टांकरीषिणीम् ॥
ईश्वरींसर्वभूतानांतामिहोपह्वयेश्रियम् ॥
मनसः काममाकूतिवाचः सत्यमशीमहि ॥
पशूनांरूपमन्नस्यमयिश्रीः श्रयतांयशः ॥२॥

कर्दमेनप्रजाभूतामयिसंभवकर्दम ॥
श्रियंवासयमेकुलेमातरंपद्ममालिनीम् ॥
आपः सृजंतुस्निग्धानिचिक्लीतवसमेगृहे ॥
निचदेवींमातरंश्रियंवासयमेकुले ॥
आर्द्रांपुष्करिणींपुष्टिंपिंगलांपद्ममालिनीम् ॥
चन्द्रांहिरण्मयींलक्ष्मींजातवेदोमआवह ॥
आर्द्रांयः करिणींयष्टिंसुवर्णांहेममालिनीम् ॥
सूर्यांहिरण्मयींलक्ष्मींजातवेदोम आवह ॥
तांमआवहजातवेदोलक्ष्मीमनपगामिनीम् ॥
यस्यांहिरण्यंप्रभूतंगावोदास्योश्वान् विंदेयंपुरुषानहम् ॥३॥

यः शुचिःप्रयतोभूत्वाजुहुयादाज्यमन्वहम् ॥
सूक्तंपंचदशर्चंचश्रीकाम : सततंजपेत् ॥

———०———

—सरस्वती स्तोत्रम्—

श्री गणेशाय नमः ॥ ॐ अस्य श्री सरस्वतीस्तोत्रमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः ॥ गायत्री छंदः ॥ श्री सरस्वती देवता ॥ धर्मार्थकाम मोक्षार्थे जपे विनियोगः ॥ आरुढा श्वेतहंसे भ्रमति च गगने दक्षिणे चाक्ष सूत्रं वामे हस्ते च दिव्याम्बरकनकमयं पुस्तकं ज्ञानगम्या ॥

सा वीणां वादयन्ती स्वकर करजपैः शास्त्रविज्ञान शब्दैः क्रीडन्ती
दिव्यरूपा करकमलधरा भारती सुप्रसन्ना ॥१॥
श्वेत पद्मासनादेवी श्वेत गन्धानुलेपना ॥
अर्चिता मुनिभिः सर्वैर्ऋषिभिः स्तूयते सदा ॥
एवं ध्यात्वा सदा देवीं वांछितं लभते नरः ।२॥
शुक्लां ब्रह्मविचारसार परमामाद्यां जगद्व्यापिनीं
वीणापुस्तक धारिणीमभयदां जाड्यान्धकारापहाम् ॥
हस्ते स्फाटिक मालिकां विदधतीं पद्मासने
संस्थितां वन्दे तां परमेश्वरीं भगवतीं बुद्धिप्रदां शारदाम् ॥३॥
या कुन्देन्दु तुषार हार धवला या शुभ्रवस्त्रावृता
या वीणा वर दण्ड मण्डित करा या श्वेत पद्मासना ॥
या ब्रह्माच्युतशंकर प्रभृतिभिर्देवैः सदा वन्दिता
सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशेष जाड्यापहा ॥४॥
ह्रीं ह्रीं हृद्यैक बीजे शशिरुचि कमले कल्पविस्पष्टशोभे
भव्ये भव्यानुकूले कुमति वनदवे विश्ववन्द्यांघ्रिपद्मे॥
पद्मे पद्मोपविष्टे प्रणत जनम नो मोदसंपादयित्रि
प्रोत्फुल्ल ज्ञान कूटे हरिनिजदयिते देवि संसार सारे ॥५॥
ऐं ऐं ऐं दृष्टमंत्रे कमलभव मुखां भोजभूते स्वरूपे
रूपारूप प्रकाशे सकल गुणमये निर्गुणे निर्विकारे ॥

न स्थूले नैव सूक्ष्मेऽप्यविदित विभवे नापि विज्ञान तत्वे
विश्वे विश्वांतरात्मे सुर वर नमिते निष्कले नित्यशुद्धे ॥६॥
ह्रीं ह्रीं ह्रीं जाप्य तुष्टे हिमरुचिमुकुटे वल्लकी व्यग्र हस्ते
मातर्मातर्नमस्ते दह दह जड़तां देहि बुद्धिं प्रशस्ताम् ॥
विद्ये वेदान्त वेद्ये परिणत पठिते मोक्षदे मुक्ति मार्गे
मार्गा तीत स्वरूपे भव मम वरदा शारदा शुभ्रहारे ॥७॥
धीं धीं धीं धारणाख्ये धृतिमतिनतिभिर्नामभिः कीर्तनीये
नित्येऽनित्ये निमित्ते मुनिगण नमिते नूतने वै पुराणे ॥
पुण्ये पुण्यप्रवाहे हरिहर नमिते नित्यशुद्धे सुवर्णे
मातर्मात्रार्धतत्वे मतिमति मतिदे माधव प्रीति मोदे ।
ह्रूं ह्रूं ह्रूं स्वस्वरूपे दह दह दुरितं पुस्तकव्यग्रहस्ते
सन्तुष्टाकार चित्ते स्मित मुखि सुभगे जृम्भिणि स्तम्भविद्ये ॥
मोहे मुग्धप्रवाहे कुरु मम विमतिध्वान्त विध्वंसमीडे
गीर्गौर्वाग्भारति त्वं कवि वररसना सिद्धि दे सिद्धि साध्ये ॥९॥
स्तौमि त्वां त्वां च वन्दे मम खलु रसनां नो कदाचित्य जेथा
मा मे बुद्धिविरुद्धा भवतु न च मनो देवि मे यातु पापम् ॥
मा मे दुःख कदाचित्क्वचिदपि विषयेऽप्यस्तु मे नाकुलत्वं
शास्त्रे वादे कवित्वे प्रसरतु मम धीर्मास्तु कुण्ठा कदापि ॥१०॥
इत्येतैः श्लोक मुख्यैः प्रतिदिन मुषसि स्तौतियो भक्ति नम्रो
वाणी वाचस्पतेरप्य विदित विभवो वाक्पटुर्मृष्टकंठः ॥
स स्यादिष्टार्थलाभैः सुतमिव सततं पाति तं सा च देवी
सौभाग्यं तस्य लोके प्रभवति कविता विघ्नमस्तं प्रयाति ॥११॥
निर्विघ्नं तस्य विद्या प्रभवति सततं चाश्रुत ग्रन्थ बोधः
कीर्तिस्त्रैलोक्यमध्ये निवसति वदने शारदातस्य साक्षात् ॥
दीर्घायुर्लोक पूज्यः सकल गुणनिधि सन्ततं राजमान्यो
वाग्देव्याः संप्रसादात्त्रिजगति विजयी जायते सत्सभासु ॥१२॥
ब्रह्मचारी व्रतीमौनीत्रयोदश्यां निरामिषः ॥
सारस्वतो जनः पाठात्सकृदिष्टार्थलाभवान् ॥१३॥
पक्षद्वये त्रयोदश्यामेक विंशतिसंख्यया ॥
अविच्छिन्नः पठेद्धीमान्ध्यात्वा देवीं सरस्वतीम् ॥१४॥
सर्वपापविनिर्मुक्तः सुभगो लोक विश्रुतः ॥
वांछितं फलमाप्नोति लोकेऽस्मिन्नात्र संशयः ॥१५॥

ब्रह्मोक्तेति स्वयं प्रोक्तं सरस्वत्याः स्तवं शुभम् ॥
प्रयत्नेन पठेन्नित्यं सोऽमृतत्वाय कल्पेत ॥१६॥
इति श्रीमद्ब्रह्मणा विरचित सरस्वतीस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

———०———

॥ नवग्रह स्तोत्रम् ॥

श्री गणेशाय नमः ॥
जपा कुसुम संकाशं काश्यपेयं महाद्युतिम् ॥
तमोऽरिं सर्वपापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम् ॥१॥
दधिशङ्ख तुषा राभं क्षीरोदार्णव सम्भवम् ॥
नमामि शशिनं सोमं शंभोर्मुकुट भूषणम् ॥२॥
धरणीगर्भ संभूतं विद्युत्कान्ति समप्रभम् ॥
कुमारं शक्ति हस्तं च मङ्गलं प्रणमाम्यहम् ॥३॥
प्रियङ्गु कलिकाश्यामं रूपेणा प्रतिमं बुधम् ॥
सौम्यं सौम्यगुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम् ॥४॥
देवानां च ऋषीणां च गुरुं काञ्चन सन्निभम् ॥
बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं तं नमामि बृहस्पतिम् ॥५॥
हिमकुन्दमृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम् ॥
सर्वशास्त्र प्रवक्तारं भार्गवं प्रणमाम्यहम् ॥६॥
नीलाञ्जनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम् ॥
छाया मार्तण्ड संभूतं तं नमामि शनैश्चरम् ॥७॥
अर्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्य विमर्दनम् ॥
सिंहिकागर्भ संभूतं तं राहुं प्रणमाम्यहम् ॥८॥
पलाशपुष्प संकाशं तारकाग्रह मस्तकम् ॥
रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं तं केतुं प्रणमाम्यहम् ॥९॥
इति व्यास मुखोद्गीतं यः पठेत्सुसमाहितः ॥
दिवा वा यदि वा रात्रौ विघ्नशान्तिर्भविष्यति ॥१०॥
नरनारीनृपाणां च भवेद्दुःस्वप्ननाशनम् ॥
ऐश्वर्यमतुलं तेषामारोग्यं पुष्टि वर्धनम् ॥११॥

ग्रह नक्षत्र जाः पीड़ास्तस्कराग्नि समुद्भवाः ॥
ताः सर्वाः प्रशमं यान्ति व्यासो ब्रूते न संशयः ॥१२॥
इति व्यासविरचित नवग्रहस्तोत्रं संपूर्णम् ॥

———०———

॥ आदित्य स्तोत्रम् ॥

श्री गणेशायनमः

नवग्रहाणां सर्वेषां सूर्यादीनां पृथक पृथक् ॥
पीड़ा च दुःसहा राजञ्जायते सततं नृणाम् ॥१॥
पीड़ानाशाय राजेन्द्र नामानि श्रृणु भास्वतः ॥
सूर्यादीनां च सर्वेषां पीड़ा नश्यति श्रृण्वतः ॥२॥
आदित्यः सविता सूर्यः पूषाऽर्कः शीघ्रगो रविः ॥
भगस्त्वष्टाऽर्यमा हंसो हेलिस्तेजोनिधिर्हरिः ॥३॥
दिननाथो दिनकरः सप्तसप्तिः प्रभाकरः ॥
विभावसुर्वेदकर्ता वेदाङ्गो वेद वाहनः ॥४॥
हरिदश्वः कालवक्त्रः कर्म साक्षी जगत्पतिः ॥
पद्मिनीबोधको भानुर्भास्करः करुणाकरः ॥५॥
द्वादशात्मा विश्वकर्मा लोहिताङ्गस्त मोनुदः ॥
जगन्नाथोऽरविन्दाक्षः कालात्मा कश्यपात्मज ॥६॥
भूताश्रयो ग्रहपतिः सर्वलोकनमस्कृतः ॥
जपाकुसुमसंकाशो भास्वानदितिनन्दनः ॥७॥
ध्वान्तेभसिंहः सर्वात्मा लोकनेत्रो विकर्तनः ॥
मार्तण्डो मिहिरः सूरस्तपनो लोक तापनः ॥८॥
जगत्कर्ता जगत्साक्षी शनैश्चरपिता जयः ॥
सहस्त्र रश्मिस्तरविर्भगवान्भक्तवत्सलः ॥९॥
विवस्वानादिदेवश्च देवदेवो दिवाकरः ॥
धन्वन्तरि र्व्याधिहर्ता दद्रुकुष्ठविनाशकः ॥१०॥
चराचरात्मा मैत्रेयोऽमितो विष्णुर्विकर्तनः ॥
कोकशोकापहर्ता च कमलाकर आत्मभूः ॥११॥

नारायणो महादेवो रुद्रः पुरुष ईश्वरः ॥
जीवात्मा परमात्मा च सूक्ष्मात्मा सर्वतो मुखः ॥१२॥
इन्द्रोऽनलो यमश्चैव नैर्ऋतो वरुणोऽनिलः ॥
श्रीद ईशान इन्दुश्च भौमः सौम्यो गुरुः कविः ॥१३॥
शौरिर्विधुन्तुदः केतुः कालः कालात्मको विभुः ॥
सर्वदेव मयोदेवः कृष्णः कामप्रदायकः ॥१४॥
य एतैर्नामभिर्मर्त्यो भक्त्या स्तौति दिवाकरम् ॥
सर्वापाप विनिर्मुक्तः सर्वरोग विवर्जितः ॥१५॥
पुत्रवान् धनवान् श्रीमाञ्जायते स न संशयः ॥
रविवारे पठेद्यस्तु नामान्येतानि भास्वतः ॥१६॥
पीड़ाशान्तिर्भवेत्तस्य ग्रहाणां च विशेषतः ॥
सद्यः सुखमवाप्नोति चायुर्दीर्घं च नीरुजम् ॥१७॥
इति श्री भविष्यपुराणे आदित्यस्तोत्रं संपूर्णम् ॥

———०———

॥ चन्द्राष्टाविंशतिनाम स्तोत्रम् ॥

श्री गणेशाय नमः ॥

चन्द्रस्य श्रृणु नामानि शुभदानि महीपते ॥
यानि श्रुत्वा नरो दुःखान्मुच्यते नात्र संशयः ॥१॥
सुधाकरश्च सोमश्च ग्लौरब्ज कुमुदप्रियः ॥
लोकप्रियः शुभ्रभानुश्चन्द्रमा रोहिणी पतिः ॥२॥
शशी हिमकरो राजा द्विजराजो निशाकरः ॥
आत्रेय इन्दुः शीतांशुरोषधीशः कलानिधिः ॥३॥
जैवातृको रमाभ्राता क्षीरोदार्णवसम्भवः ॥
नक्षत्र नायकः शम्भुः शिरश्चूडामणिर्विभुः ॥४॥
तापहर्ता नभोदीपो नामान्येतानि यः पठेत् ॥
प्रत्यहं भक्ति संयुक्तस्तस्य पीडा विनश्यति ॥५॥
ग्रहादीनां च सर्वेषां भवेच्चन्द्रबलं सदा ॥६॥
इति श्री चन्द्राष्टाविंशति नाम स्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

———०———

॥ अङ्गारकस्तोत्रम् ॥

श्री गणेशाय नमः ॥

अङ्गारकः शक्तिधरो लोहिताङ्गो धरासुतः ॥
कुमारो मङ्गलो भौमो महाकायो धनप्रदः ॥१॥
ऋणहर्ता दृष्टिकर्ता रोग कृद्रोगनाशनः ॥
विद्युत प्रभो व्रणकरः कामदो धनहृत्कुजः ॥२॥
सामगानप्रियो रक्तवस्त्रो रक्तायतेक्षणः ॥
लोहितो रक्त वर्णश्च सर्व कर्माव बोधकः ॥३॥
रक्तमाल्यधरो हेमकुण्डलो ग्रहनायकः ॥
नामान्येतानि भौमस्य यः पठेत्सततं नरः ॥४॥
ऋणं तस्य च दौर्भाग्यं दारिद्रयं च विनश्यति ॥
धनं प्राप्नोति विपुलं स्त्रियं चै व मनोरमाम् ॥५॥
वंशोद्योत करं पुत्रं लभते नात्र संशयः ॥
योऽर्चयेदह्नि भौमस्य मङ्गलं बहुपुष्पकैः ॥६॥
सर्वानश्यंति पीडाश्च तस्य ग्रहकृता ध्रुवम् ॥७॥
इति श्री स्कन्दपुराणे अङ्गारकस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

———०———

॥ ऋणमोचक मङ्गलस्तोत्रम् ॥

श्री गणेशाय नमः ॥

मङ्गलो भूमिपुत्रश्च ऋणहर्ता धनप्रदः ॥
स्थिरासनो महाकाय सर्वकर्म विरोधकः ॥१॥
लोहितो लोहिताक्षश्च सामगानां कृपा करः ॥
धरात्मजः कुजो भौमो भूतिदो भूमि नन्दन ः ॥२॥
अङ्गारको यमश्चैव सर्वरोगापहारकः ॥
वृष्टेः कर्ताऽपहर्ता च सर्वकाम फल प्रदः ॥३॥
एतानि कुजनामानि नित्यं यः श्रद्धया पठेत् ॥
ऋणं न जायते तस्य धनं शीघ्रम वाप्नुयात् ॥४॥

धरणी गर्भ संभूतं विद्युत्कांति समप्रभम् ॥
कुमारं शक्तिहस्तं च मङ्गलं प्रणमाम्यहम् ॥५॥
स्तोत्रमङ्गार कस्यैतत्पठनीयं सदानृभिः ॥
न तेषां भौमजा पीडा स्वल्पाऽपि भवति क्वचित् ॥६॥
अङ्गारक महाभाग भगवन्भक्तवत्सल ॥
त्वां नमामि ममा शेष मृणमाशु विनाशय ॥७॥
ऋणरोगादि दारिद्रयं च मान्ये ह्यपमृत्यवः ॥
भयक्लेशमनस्तापा नश्यन्तु मम सर्वदा ॥८॥
अतिवक्र दुराराध्य भोगभुक्त जितात्मनः ॥
तुष्टो ददासि साम्राज्यं रुष्टो हरसि तत्क्षणात् ॥९॥
विरञ्चिशक्रविष्णूनां मनुष्याणां तु का कथा ॥
तेन त्वं सर्व सत्वेन ग्रहराजो महा बलः ॥१०॥
पुत्रान्देहि धनं देहि त्वामस्मि शरणं गतः ॥
ऋण दारिद्रयदुःखेन शत्रूणां च भयात्ततः ॥११॥
एभिर्द्वादशभिः श्लोकैर्यः स्तौति च धरासुतम् ॥
महतीं श्रियमाप्नोति ह्यपरो धनदो युवा ॥१२॥
इति श्री स्कन्दपुराणे भार्गव प्रोक्तं ऋणमोचक मङ्गलस्तोत्रम् ॥

———०———

॥ बुधपञ्चविंशति नामस्तोत्रम् ॥

श्री गणेशाय नमः ॥

बुधो बुद्धिमतां श्रेष्ठो बुद्धिदाता धनप्रद ः ॥
प्रियंगुकलि काश्यामः कञ्जनेत्रो मनोहरः ॥१॥
ग्रहोपमो रौहिणेयो नक्षत्रेशो दया करः ॥
विरुद्ध कार्य हन्ता च सौम्यो बुद्धिविवर्धनः ॥२॥
चन्द्रात्मजो विष्णुरूपी ज्ञानी ज्ञो ज्ञानि नायकः ॥
ग्रहपीडाहरो दार पुत्र धान्य पशु प्रदः ॥३॥
लोकप्रियः सौम्यमूर्तिर्गुणदो गुणिवत्सलः ॥
पञ्चविंशति नामानि बुधस्यैतानि यः पठेत् ॥४॥

स्मृत्वा बुधं सदा तस्य पीड़ा सर्वा विनश्यत ॥
तद्दिने वा पठेद्यस्तु लभते स मनोगतम् ॥५॥
इति श्री पद्मपुराणे बुधपञ्चविंशतिनाम स्तोत्रम सम्पूर्णम् ॥

——०——

॥ बृहस्पति स्तोत्रम् ॥

श्री गणेशाय नमः ॥
गुरुर्बृहस्पतिर्जीवः सुराचार्यो विदांवरः ॥
वागीशोधिषणो दीर्घश्मश्रुः पीताम्बरो युवा ॥१॥
सुधा दृष्टिर्ग्रहाधीशो ग्रहपीड़ापहारकः ॥
दयाकरः ॥ दयाकरः सौम्यमूर्तिः सुराच्र्यः कुंकुमद्युतिः ॥२॥
लोकपूज्यो लोक गुरुर्नीतिज्ञो नीति कारकः ॥
तारापतिश्चाङ्गिरसो वेदवंद्यपितामहः ॥३॥
भक्त्या बृहस्पति स्मृत्वा नामान्येतानि यः पठेत् ॥
आरोगीबलवान् श्रीमान् पुत्रवान्स भवेन्नरः ॥४॥
जीवेद्वर्षशतं मर्त्यः पापं नश्यति नश्यति ॥
यः पूजयेद् गुरुदिने पीतगन्धाक्षताम्बरैः ॥५॥
पुष्पदीपो पहारैश्च पूजयित्वा बृहस्पतिम् ॥
ब्राह्मणान्भोजयित्वा च पीड़ाशान्तिर्भवेद्गुरोः ॥६॥
इति श्री स्कन्द पुराणे बृहस्पति स्तोत्रं संपूर्णम् ॥

——०——

॥ शुक्र स्तोत्रम् ॥

श्री गणेशाय नमः ॥
शुक्रः काव्यः शुक्ररेता शुक्लाम्बरधरः सुधीः ॥
हिमाभः कुन्दधवलः शुभ्रांशुः शुक्लभूषणः ॥१॥
नीतिज्ञो नीतिकृन्नीति मार्गगामी ग्रहाधिपः ॥
उशना वेदवेदाङ्ग पारगः कविरात्मवित् ॥२॥

भार्गवः करुणासिन्धुर्ज्ञान गम्यः सुत प्रदः ॥
शुक्रस्यैतानि नामानि शुक्रं स्मृत्वा तु यः पठेत् ॥३॥
आयुर्धनं सुखं पुत्रं लक्ष्मीं वसति मुत्तमाम् ॥
विद्यां चैव स्वयं तस्मै शुक्र स्तुष्टो ददाति च ॥४॥
इति श्री स्कन्दपुराणे शुक्रस्तोत्रं संपूर्णम् ॥

——०——

॥ शनैश्चरस्तवराजः ॥

श्री गणेशाय नमः ॥

नारद उवाच ॥
ध्यात्वा गणपति राजा धर्मराजो युधिष्ठिरः ॥
धीरः शनैश्चरस्येमं चकार स्तव मुत्त मम् ॥१॥
शिरो मे भास्करिः पातु भालं छायासुतोऽवतु ॥
कोटराक्षो दृशौ पातु शिखिकण्ठ निभः श्रुती ॥२॥
घ्राणं मे भीषणः पातु मुखं बलि मुखोऽवतु ॥
स्कन्धौ संवर्तकः पातु भुजौ मे भयदोऽवतु ॥३॥
सौरिर्मे हृदयं पातु नाभिं शनैश्चरोऽवतु ॥
ग्रहराजः कटिं पातु सर्वतो रवि नन्दनः ॥४॥
पादौ मन्दगतिः पातु कृष्णः पात्वखिलं वपु : ॥
रक्षामेतां पठेन्नित्यं सौरेर्नामबलैर्युताम ॥५॥
सुखी पुत्री चिरायुश्च स भवेन्नात्र संशयः ॥
ॐ सौरिः शनैश्चरः कृष्णो नीलोत्पलनिभः शनिः ॥६॥
शुष्कोदरो विशालाक्षो दुर्निरीक्ष्यो विभीषणः ॥
शितिकण्ठ निभो नीलश्छायाहृदयनन्दनः ॥७॥
कालदृष्टिः कोटराक्षः स्थूलरोमा वलीमुखः ॥
दीर्घो निर्मांसगात्रस्तु शुष्कोघोरो भयानकः ॥८॥
नीलांशुः क्रोधनो रौद्रो दीर्घश्मश्रुर्जटाधरः ॥
मन्दोमन्दगतिः खञ्जोऽतृप्तः संवर्तको यमः ॥९॥

ग्रहराजः करालो च सूर्यपुत्रो रविः शशी ॥
कुजो बुधो गुरुः काव्यो भानुजः सिंहिका सुतः ॥१०॥
केतुर्देव पतिर्बाहुः कृतान्तो नैऋंतस्तथा ॥
शशी मरुत्कुबेरश्च ईशानः सुर आत्मभूः ॥११॥
विष्णुर्हरो गणपतिः कुमारः काम ईश्वरः ॥
कर्ता हर्ता पालयिता राज्य भुग् राज्यदायकः ॥१२॥
छायासुतः श्यामलांगो धनहर्ता धनप्रदः ॥
क्रूर कर्मविधाता च सर्वकर्मावरोधकः ॥१३॥
तुष्टो रुष्टः कामरूपः कामदो रविनन्दनः ॥
ग्रहपीडाहरः शान्तो नक्षत्रेशो ग्रहेश्वरः ॥१४॥
स्थिरासनः स्थिरगतिर्महाकायो महाबलः ॥
महाप्रभो महाकालः कालात्मा काल कालकः ॥१५॥
आदित्य भयदाता च मृत्युरादित्य नन्दन : ॥
शतभिद्रुक्षदयितः त्रयोदशितिथिप्रियः ॥१६॥
तिथ्यात्मा तिथिगणो नक्षत्र गण नायकः ॥
योगराशिर्मुहूर्तात्मा कर्ता दिन पतिः प्रभुः ॥१७॥
शमी पुष्पप्रियः श्यामस्त्रैलोक्या भावदायकः ॥
नील वासाः क्रियासिन्धुर्नीलाञ्जन चयच्छविः ॥१८॥
सर्व रोगहरोदेवः सिद्धोदेवगणस्तुतः ॥
अष्टोत्तर शतं नाम्नां सौरेश्छायासुतस्य यः ॥१९॥
पठेन्नित्यं तस्यपीड़ा समस्ता नश्यति ध्रुवम् ॥
कृत्वा पूजां पठेन्मर्त्यो भक्तिमान् यः स्तवं सदा ॥२०॥
विशेषतः शनिदिने पीड़ा तस्य विनश्यति ॥
जन्म लग्ने स्थितिर्वापि गोचरे क्रूर राशिगे ॥२१॥
दशासु च गते सौरेस्तदा स्तवमिमं पठेत् ॥
पूजयेद्यः शनि भक्त्या शमीपुष्पाक्षताम्बरैः ॥२२॥
विधाय लोहप्रतिमां नरो दुःखाद्विमुच्यते ॥
बाधा त्वन्य ग्रहाणां च यः पठेत्तस्य नश्यति ॥२३॥
भीतो भयाद्विमुच्येत बद्धो मुच्येत बन्धनात् ॥
रोगी रोगाद्विमुच्येत नरः स्तवमिमं पठेत् ॥२४॥
पुत्रवान्धनवान् श्रीमाञ्जायते नात्र संशयः ॥२५॥
नारद उवाच ॥

स्तवं निशम्य पार्थस्य प्रत्यक्षोऽभूच्छनैश्चरः ॥
दत्त्वा राज्ञे वरं कामं शनिश्चान्तर्दधे तदा ॥
इति श्री भविष्यपुराणे शनैश्चरस्तवराजः समाप्तः ॥

—o—

॥ राहु स्तोत्रम् ॥

श्री गणेशाय नमः ॥
राहुर्दानवमन्त्री च सिंहिकाचित्तनन्दनः ॥
अर्धकायः सदा क्रोधी चन्द्रादित्य विमर्दनः ॥१॥
रौद्रो रुद्रप्रियो दैत्यः स्वर्भानुर्भानुभीतिदः ॥
ग्रहराजः सुधापायी राकातिथ्य भिलाषुकः ॥२॥
कालदृष्टिः कालरूपः श्री कण्ठहृदयाश्रयः ॥
विधुंतुदः सैंहिकेयो घोररूपो महाबलः ॥३॥
ग्रहपीडाकरो दंष्ट्री रक्तनेत्रो महोदरः ॥
पञ्चविंशति नामानि स्मृत्वा राहुं सदानरः ॥४॥
यः पठेन्महती पीड़ा तस्य नश्यति केवलम् ॥
आरोग्यं पुत्रमतुलां श्रियं धान्यं पशूंस्तथा ॥५॥
ददाति राहुस्तस्मै यः पठते स्तोत्र मुत्तमम् ॥
सततं पठते यस्तु जीवेद्वर्षशतं नरः ॥६॥
इति श्री स्कन्दपुराणे राहुस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

—o—

॥ केतुपञ्चविंशति नाम स्तोत्रम् ॥

श्री गणेशाय नमः ॥
केतुः कालः कलयिता धूम्र केतुर्विवर्णकः ॥
लोक केतुर्महाकेतुः सर्वकेतुर्भयप्रदः ॥१॥
रौद्रो रुद्रप्रियो रुद्रः क्रूर कर्मासुगन्धधृक् ॥
पलाल धूम संकाशश्चित्रयज्ञो पवीतधृक् ॥२॥

तारागण विमर्दी च जैमिनेयो ग्रहाधिपः ॥
पञ्चविंशतिनामानि केतोर्यः सततं पठेत् ॥३॥
तस्य नश्यन्ति बाधाश्च सर्वाः केतु प्रसादतः ॥
धन धान्य पशूनां च भवेद्वृद्धिन संशयः ॥४॥
श्री स्कन्दपुराणे केतोः पञ्चविंशतिनाम स्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

—o—

॥ गोपालहृदयस्तोत्रम् ॥

श्री गणेशाय नमः ॥ ॐ अस्य श्री गोपालहृदय स्तोत्र मन्त्रस्य ॥ श्री भगवान्सङ्कर्षण ऋषिः ॥ गायत्री छन्दः ॥ ॐ बीजम् ॥

लक्ष्मीः शक्तिः ॥ गोपालः परमात्मा देवता ॥ प्रद्युम्न कीलकम् ॥ मनो वाक्कायार्जित सर्वपाप क्षयार्थं श्री गोपाल प्रीत्यर्थं गोपाल हृदयस्तोत्रजपे विनियोगः ॥
श्री संङ्कर्षण उवाच ॥

ॐ ममाग्रतः सदा विष्णुः पृष्ठतश्चापि केशवः ॥ गोविन्दो दक्षिणे पार्श्वे वामे च मधुसूदनः ॥
उपरिष्ठात् वैकुण्ठो वाराहः पृथिवीतले ॥
अवान्तरदिशः पातु तासु सर्वासु माधवः ॥२॥
गच्छतस्तिष्ठतो वापि जाग्रतः स्वपतोऽपि वा ॥
नरसिंह कृताद् गुप्तिर्वासुदेवमयो हृदम् ॥३॥
अव्यक्तं चैवास्य योनि वदन्ति व्यक्तं देहं दीर्घमायुर्गतिश्च ॥
वह्निर्वक्त्रं चंद्र सूर्यौ च नेत्रे दिशः श्रोते प्राणमायुश्च वायुम् ॥४॥
वाचं वेदा हृदयं वं नभश्च पृथ्वी पादौ तारका रोम कूपाः ॥
अङ्गान्युपाङ्गान्यधिदेवता च विद्या ह्युपस्थं हि तथा समुद्रम् ॥५॥
तं देव देवं शरणं प्रजानां यज्ञात्मकं सर्व लोक प्रतिष्ठम् ॥
अजं वरेण्यंवरदं वरिष्ठं ब्रह्माणमीशं पुरुषं नमस्ते ॥६॥
आद्य पुरुषमीशानं पुरुहूतं पुरस्कृतम् ॥
ऋतमेकाक्षरं ब्रह्म व्यक्ता व्यक्तं सनातनम् ॥७॥
महाभारत माख्यानं कुरुक्षेत्रं सरस्वतीम् ॥
केशवं गां च गङ्गा च कौतं यन्मां प्रसीदति ॥८॥

ॐ भूः पुरुषाय पुरुषरूपाय वासुदेवाय नमो नमः ॥ ॐ भुव पु० ॥ ॐ स्वः पु० ॥ ॐ महः पु० ॥ ॐ जनः पु० ॥ ॐ तपः पु० ॥ ॐ स्त्यं पु० ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः पु० ॥ ॐ वासुदेवाय पु० ॥ ॐ संङ्कर्षणाय पु० ॥ ॐ प्रद्युम्नाय पु० ॥ ॐ अनिरुद्धाय पु० ॥ ॐ हयग्रीवाय पु० ॥ ॐ भवोद्भवाय पु० ॥ ॐ केशवाय पु० ॥ ॐ नारायणाय पु० ॥ ॐ माधवाय पु० ॥ ॐ गोविंदाय पु० ॥ ॐ विष्णवे पु० ॥ ॐ मधुसूदनाय पु० ॥ ॐ वैकुण्ठाय पु० ॥ ॐ अच्युताय पु० ॥ ॐ त्रिविक्रमाय पु० । ॐ वामनाय पु० ॥ ॐ श्री धराय पु० ॥ ॐ हृषीकेशाय पु० ॥ ॐ पद्म नामाय पु० ॥ ॐ मुकुन्दाय पु० ॥ ॐ दामोदराय पु० ॥ ॐ सत्याय पु० ॥ ॐ ईशानाय पु० ॥ ॐ तत्पुरुषाय पु० ॥ ॐ पुरुषोतमाय पु० ॥ ॐ श्री रामचंद्राय पपु० ॥ ॐ श्री नृसिंहाय पु० ॥ ॐ अनंताय पु० ॥ ॐ विश्वरूपाय पु० ॥ ॐ प्रणवेन्दुर्वह्नरविसहस्त्रनेत्राय पु० ॥

य इदं गोपालहृदयमधीते स ब्रह्महत्यायाः पूतोभवति ॥ सुरापानात् स्वर्णस्तेयात् वृद्ध लीगमनात् पतितसंभाषणात् असत्यात् अगम्यागमनात् अपेयपानात् अभक्ष्यभक्षणाच्च पूतो भवति ॥ अब्रह्मचारी ब्रह्मचारी भवति ॥ भगवान्महाविष्णुरित्याह ॥
इति श्री गोपालहृदयस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

मृतसञ्जीवन कवचम्

श्री गणेशाय नमः ॥
एवमाराध्य गौरीशं देवं मृत्युञ्जयेश्वरम् ॥
मृत सञ्जीवनं नाम कवचं प्रजपेत्सदा ॥१॥
सारात्सारतरं पुण्यं गुह्याद्गुह्यतरं शुभम् ॥
महादेवस्य कवचं मृत संजीवनामकम् ॥२॥
समाहितमना भूत्वा श्रुणुष्व कवचं शुभम् ॥
श्रुत्वैतद्दिव्य कवचं रहस्यं कुरु सर्वदा ॥३॥
वराभयकरो यज्वा सर्वदेवनिषेवितः ॥
मृत्युञ्जयो महादेवः प्राच्यां मां पातु सर्वदा ॥४॥
दधानः शक्तिमभयां त्रिमुखः षड्भुजः प्रभुः ॥
सदाशिवोऽग्निरूपी मामाग्नेय्यां पातु सर्वदा ॥५॥

अष्टादशभुजोपेतो दण्डाभयकरो विभुः ॥
यमरूपी महादेवो दक्षिणस्यां सदाऽवतु ॥६॥
खड्गाभयकरो धीरो रक्षोगणनिषेवितः ॥
रक्षोरूपी महेशो मां नैर्ऋत्यां सर्वदाऽवतु ॥७॥
पाशाभयभुजः सर्वरत्नाकर निषेवितः ॥
वरुणात्मा महादेवः पश्चिमे मां सदाऽवतु ॥८॥
गदाभयकरः प्राणनाशकः सर्वदा गतिः ॥
वायव्यां मारुतात्मा मां शंकरः पातु सर्वदा ॥९॥
खड्गाभयकरस्थो मां नायकः परमेश्वरः ॥
सर्वात्मान्तर दिग्भागे पातु मां शंकरः प्रभुः ॥१०॥
शूलाभयकरः सर्वविद्यानामधिनायकः ॥
ईशानात्मा तथैशान्यां पातु मां परमेश्वरः ॥११॥
ऊर्ध्वभागे ब्रह्मरूपी विश्वात्माऽधः सदाऽवतु ॥
शिरो मे शंकरः पातु ललाटं चंद्रशेखरः ॥१२॥
भ्रूमध्यं सर्वलोकेशस्त्रिनेत्रो लोचनेऽवतु ॥
भ्रूयुग्मं गिरिशः पातु कर्णौ पातु महेश्वरः ॥१३॥
नासिकां मे महादेव ओष्ठौ पातु वृषध्वजः ॥
जिह्वां मे दक्षिणामूर्तिर्दन्तान्मे गिरिशोऽवतु ॥१४॥
मृत्युञ्जयो मुखं पातु कण्ठं मे नागभूषणः ॥
पिनाकी मत्करौ पातु त्रिशूली हृदयं मम ॥१५॥
पञ्चवक्त्रः स्तनौ पातु उदरं जगदीश्वरः ॥
नाभिं पातु विरूपाक्षः पार्श्वौ मे पार्वतीपतिः ॥१६॥
कटिद्वयं गिरीशो मे पृष्ठं मे प्रमथाधिप : ॥
गुह्यं महेश्वरः पातु ममोरू पातु भैरवः ॥१७॥
जानुनी मे जगद्धर्ता जंघे मे जगदम्बिका ॥
पादौ मे सततं पातु लोक वन्द्यः सदाशिवः ॥१८॥
गिरीशः पातु मे भार्यां भवः पातु सुतान्मम ॥
मृत्युञ्जयो ममायुष्यं चित्तं मे गणनायकः ॥१९॥
सर्वाङ्गं मे सदा पातु काल कालः सदाशिवः ॥
एतत्ते कवचं पुण्यं देवतानां च दुर्लभम् ॥२०॥
मृतसञ्जीवनं नामा महादेवेन कीर्तितम् ॥
सहस्रा वर्तनं चास्य पुरश्चरणमीरितम् ॥२१॥

यः पठेच्छृणुयान्नित्यं श्रावयेत्सु-समाहितः ॥
स काल मृत्युं निर्जित्य सदायुष्यं समश्नुते ॥२२॥
हस्तेन वा यदा स्पृष्ट्वा मृतं सञ्जीवयत्यसौ ॥
आधयो व्याधयस्तस्य न भवन्ति कदाचन ॥२३॥
काल मृत्यु मपि प्राप्तमसौ जयति सर्वदा ॥
अणिमादि गुणैश्वर्यं लभते मानवोत्तमः ॥२४॥
युद्धारम्भे पठित्वेदमष्टाविंशतिवार कम् ॥
युद्ध मध्ये स्थितः शत्रुः सद्यः सर्वैर्न दृश्यते ॥२५॥
न ब्रह्मादीनि चास्त्राणि क्षयं कुर्वन्ति तस्य वै ॥
विजयं लभते देव युद्धमध्येऽपि सर्वदा ॥२६॥
प्रातरुत्थाय सततं यः पठेत्कवचं शुभम् ॥
अक्षय्यं लभते सौख्यमिह लोके परत्र च: ॥२७॥
सर्वव्याधि विनिर्मुक्तः सर्वरोग विवर्जितः ॥
अजरामरणो भूत्वा सदा षोडशवार्षिकः ॥२८॥
विचरत्यखिलाँल्लोकान्प्राप्य भोगांश्च दुर्लभान् ॥
तस्मादिदं महागोप्यं कवचं समुदाहृतम् ॥२९॥
मृतसञ्जीवनं नाम्ना दैवतैरपि दुर्लभम् ॥ ॥३०॥
इति श्री वसिष्ठप्रणीतं मृतसंजीवनस्तोत्रं सम्पूर्णम्

बजरंग बाण

दोहा—निश्चय प्रेम प्रतीत ते विनय करें सनमान ।
तेहि के कारज सकल शुभ, सिद्ध करें हनुमान ॥

चौपाई

जय हनुमंत संतहितकारी, सुनि लीजे प्रभु अरज हमारी ।
जन के काज विलंब न कीजे, आतुर दौर महासुख दीजे ।
जैसे कूदि सिन्धु वहि पारा, सुरसा बदन पैठि विस्तारा ।
आगे जाइ लंकिनी रोका, मारेहु लात गई सुर लोका ।
जाय विभीषण को सुखदीन्हा, सीता निरखि परमपद लीन्हा ।
बाग उजारि सिन्धु महं बोरा, अति आतुर यमकातर तोरा ।
अक्षय कुमार को मारि संहारा, लूम लपेटि लंक को जारा ।
लाह समान लंक जरि गई, जय जय धुनि सुरपुर महं भई ।

अब विलंब केहि कारन स्वामी, कृपा करहु उर अन्तरयामी।
जय जय लक्ष्मण प्राण के दाता, आतुर होइ दुख करहु निपाता।
जय गिरधर जय जय सुख सागर, सुर समूह समरथ भटनागर।
ॐ हनु हनु हनु हनुमंत हठीले, बैरिहि मारु बज्र की काले।
गदा वज्र लै बैरिहि मारो, महाराज प्रभु दास उबारो।
ऊंकार हुंकार महाबीर धावो, बज्रगदा हनु विलम्ब न लावो।
ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं हनुमंत कपीशा, ॐ हुं हुं हुं हनु अरि लीशा
सत्य होहु हरि शपथ पायके, रामदूत धरु मारु जायके।
जय जय जय हनुमन्त अगाधा, दुख पावत जन केहि अपराधा।
पूजा जप तप नेम अचारा, नहिं जानत हौं दास तुम्हारा।
वन उपवन मग गिरिगृह माहीं, तुम्हरे बल हम डरपत नाहीं।
पाँय परौं कर जोरि मनावौं, यहि अवसर अब केहि गोहरावौं।
जय अंजनि कुमार बलवन्ता, शंकर सुवन बीर हनुमंता।
बदन कराल काल कुल घालक, राम सहाय दास प्रतिपालक।
भूत प्रेत पिशाच निसाचर, अग्नि बैताल काम मारीमर।
इन्हें मारु तोहि शपथ राम की, राखु नाथ मर जाद नाम की।
जनक सुता हरिदास कहावो, ताकि शपथ बिलंब न लावो।
जय जय जय धुन होत अकाशा, सुमिरत होत दुसह दुखनाशा।
शरण शरण कर जोरि मनावौं, यहि अवसर अब केहि गोहरावौं।
उठु उठु तोहि राम दोहाई, पांय परौं कर जोरि मनाई।
ॐ चं चं चं चं चपल चलंता, ॐ हनु हनु हनु हनु हनुमन्ता।
ओं हं हं हांक देत कपि चंञ्चल, ओं सं सं सहमि पराने खलदल।
अपने जन को तुरत उबारो, सुमिरत होय आनन्द हमारो।
यहि बजरंग बाण जेहि मारे, ताहि कहो फिरि कौन उबारे।
पाठ करैं बजरंग-बाण की, हनुमत रक्षा करैं प्राण की।
यह बजरंग बाण जो जापै, तेहिते भूत-प्रेत सब कापैं।
धूप देय अरु जपै हमेशा, ताके तन नहिं रहे कलेशा।

दोहा

प्रेम प्रतीति धरि कपि भज, सदा धरैं उर ध्यान।
तेहिके कारज सकल शुभ, सिद्ध करैं हनुमान॥

समाप्त

स्तोत्र-शक्ति

लेखक—डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली

अंक-विद्या, हस्त-रेखा, सामुद्रिक विद्या तथा ज्योतिष के सम्पूर्ण क्षेत्र में भारतीय विद्वान डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली का नाम जितने गर्व से लिया जाता है, उतने ही गर्व से तंत्र-मंत्र और स्तोत्र शक्तियों में भी उन्हें महारत हासिल है।

डॉ० श्रीमाली ने ज्योतिष के विभिन्न विषयों पर अब तक लगभग चालीस पुस्तकों की रचना की है और सभी पुस्तकें पाठकों में काफी चर्चा का विषय रही हैं।

स्तोत्र-शक्ति उनकी अत्यन्त नवीन पुस्तक है जिसे पाठकों को सौंपते हुये हमें गर्व का अनुभव हो रहा है।